गुमनामी सुभाष

अशोक टण्डन

गुमनामी सुभाष

(प्रथम खण्ड)

अशोक टण्डन

ओम प्रकाशन

खवासपुरा, फैजाबाद (उ० प्र०)

मूल्य : चालीस रुपये
प्रकाशक : ओमप्रकाश मदान
ओम प्रकाशन, ख्वासपुरा, फैजाबाद (उ० प्र०)
लेखक : अशोक टण्डन, लक्ष्मणपुरी, फैजाबाद (उ० प्र०)

संस्करण : प्रथम, १९८६
फोटोग्राफ : बिशन गुप्ता, वी० एन० अरोरा
आवरण : रामचन्दर (एलोरा आर्टस्)
मुद्रक : सूर्यबाला प्रिंटर्स, देवकाली, फैजाबाद

GUMNAMI SUBHASH By Ashok Tandon Rs. 40-00

एक गुमनामी था
नाम की तलाश में,
एक नाम—
खोजता रहा गुम हुये को !

'Let us create the history,
let somebody else write it.'
—Netaji
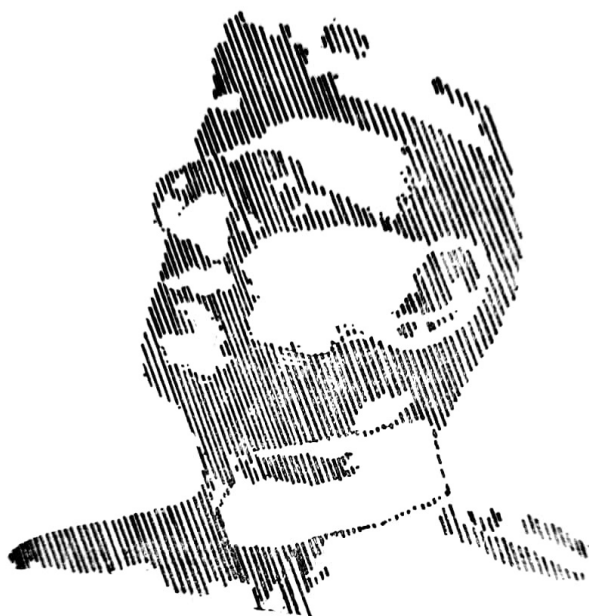
गुमनामी सुभाष

"अंग्रेजों ने जिन भारतीय वीरों को
तोप से उड़ा दिया, गोलियों से भून दिया,
उनका दर्द मेरी पसलियों में चिपक
गया, उनकी आहें मेरे गले में फँस,
उनका खून मेरी आंखों में उतर आया है !"

—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस
२७ जून १९४५, सिंगापुर

निर्धारित पथ

सारा ब्रह्माण्ड विचित्रताओं से भरा हुआ है। सृष्टि की बात तो छोड़िये उसका एक कण--यह संसार, अभी हम उसी के रहस्यों को नहीं बींध पाये हैं। मानव मस्तिष्क विज्ञान का सहारा लेकर इस दिशा में कार्यरत तो है पर इस असीम ब्रह्माण्ड को बींधना उसके सीमित मस्तिष्क के बाहर की बात है। यदि हम ऐसा कहें तो यह निराशावादी बात न होगी वरन् सत्य को स्वीकारना मात्र होगा। जरा कल्पना करिये इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने में समेटे आकाश (शून्य) की, जिसको असीम कहना भी सीमा में बांधना है, उसके अन्दर विचरती हुई अरबों–खरबों आकाशगंगायें हैं, और एक एक आकाशगंगा में अरबों–खरबों सौर-मंडल। उन्हीं में से एक हमारा सौर मण्डल है और उसकी एक सदस्य यह पृथ्वी। जिसके तमाम रहस्य अभी भी हमारे सामने चुनौती बन खड़े हैं। इस ब्रह्माण्ड के सारे क्रिया–कलाप व्यवस्थित हैं, जिस प्रकार कि गणित का समीकरण दो व दो चार ही हो सकते हैं न कम न अधिक। हर पदार्थ जिनसे यह ब्रह्माण्ड निर्मित है, अपनी एक खूबी (गुण) लिए हुये है जो कि सामान्य अवस्था में बदल नहीं सकता। जैसे लोहा अपना अलग गुण रखता है, तो सोने की अपनी खूबियां है। इसी प्रकार सारे ग्रहों-उपग्रहों की खूबियां तथा चाल, गति आदि भी निर्धारित है जिसके अनुसार आचरण करने को वे बाध्य हैं। एक भी ग्रह पथच्युत नहीं हो सकता। एक भी पदार्थ अपने निर्धारित गुण के विपरीत कार्य नहीं कर सकता। इस सारे ब्रह्माण्ड का एक हिस्सा होने के कारण मानव भी कुछ समीकरणों व नियमों में बंधा हुआ है। वह चाहकर भी निर्धारित पथ (भाग्य) से विचलित नहीं हो सकता ऐसा मैं मानता हूँ।

'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' का सिंह गर्जन करने वाले, कर्म को ही जीवन मानने वाले तथा असम्भव को सम्भव करके दिखाने वाले उस युग पुरुष का शायद यही निर्धारित पथ था।

वह नेता जी थे या नहीं। यदि नेता जी थे तो छुपे क्यों थे? आदि की बहस में मैं नहीं पड़ना चाहता। क्योंकि यह बहस उसी प्रकार की होगी जैसे साफ आसमान में दोपहर के चमकते सूर्य को लेकर यह बहस की जाय कि ये सूर्य है कि नहीं।

पहली बार जब अशोक टण्डन ने मुझे फोन पर यह जानकारी दी, तो मेरी भी वही प्रतिक्रिया थी जो एक जन सामान्य की हो सकती है। परन्तु धीरे धीरे इस दिशा में आगे बढ़ने पर जब एक एक चीज सामने आकर चीख–चीख कर कुछ इंगित करने लगी तो विश्वास करना ही पड़ा कि यह भी संसार में फैले तमाम आश्चर्यों में एक आश्चर्य है तथा यहाँ कुछ भी असम्भव या अनहोनी नहीं है।

इस पुस्तक में जितनी भी जानकारी दी गई है वह उन कमरों में भरे पड़े सामानों का अंशमात्र ही है, क्योंकि अधिकतर दस्तावेज, पत्र आदि बंगला भाषा में है, जिसकी जानकारी न होने के कारण हम उसे आप तक नहीं पहुँचा पा रहे हैं। परन्तु मुझे विश्वास है कि अशोक जी इस पुस्तक के दूसरे खण्ड में उसे आप तक पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे।

अन्त में मैं यहाँ यह अवश्य कहना चाहूँगा कि अशोक टण्डन ने तमाम धमकियां व विरोधों के बावजूद इस समाचार को दुनिया के सामने लाकर अपनी निर्भीक पत्रकारिता का परिचय तो दिया ही है, साथ ही उस युग पुरुष के प्रति अपनी सच्ची निष्ठा व आस्था भी प्रदर्शित की है।

—ओमप्रकाश मदान

महज एक किताब नहीं

न तो हम किसी बाबा को
नेताजी साबित करने और
न ही नेताजी को खोजने के
किसी अभियान में शामिल हैं. हुआ
ये कि हमारे सामने तो बस एक-ब-एक
एक खबर —— ऐसी घटना के
रूप में सामने आई कि जो इतिहास
के झरोखों में झाँकती दीखी.
हमने उन क्षणों को सहेजा.
शायद कभी गुजरे जमाने को
खोजता इतिहास हमारी दहलीज
पर न आ गुजरे.
ये चन्द सफे आने वाले
उस इतिहास की नजर........

o

वैसे मैंने कभी सोचा तक न था
कि मेरी पहली पुस्तक इस तरह
आयेगी, बड़ी जल्दी-जल्दी में
इसके प्रकाशन का निर्णय लेकर
'नये लोग' की खोज-यात्रा के मध्य
ही इसको भी लिखना व
छपवाना मैंने शुरु करवा दिया था.
इसलिये कुछ व्यतिक्रम-सा लगेगा आपको.
लेकिन मेरी कोशिश रही है कि
जो भी जनश्रुति व उनके शिष्यों के

दायरे के बीच एक साया पल रहा था, उसे भेदने का एक प्रयास— आपके सामने है. 'रामभवन' में मिलने वाले साक्ष्यों का प्रत्यक्षदर्शी गवाह होने के कारण उसे उसी रूप में रखने का पूरा प्रयास किया है मैंने. वैसे ये साक्ष्य उस महामानव के प्रति हजारवें अंश की भी जानकारी नहीं दे पाते हैं. बहुत कुछ 'रामभवन' के उन दो कमरों में बन्द है ! बहुत कुछ 'मुख्य' सबूत वहाँ से पार कर दिया गया है और बहुत कुछ पीछे के स्थानों व लोगों व सम्बन्धों में बिखरा पड़ा है.

बहुत सी बातें मेरे मन में और भी हैं लेकिन उन्हें पुख्ता किये बिना बताना उचित नहीं. कई सूत्रों के मैंने नाम नहीं लिये हैं. शायद आगे चलकर वे स्वयं सामने आने के लिये वक्त का इन्तजार करना चाहते हैं !

o

इस पुस्तक के प्रकाशन का दायित्वभार संभालने के लिए मैं अपने परममित्र श्री ओमप्रकाश मदान का बेहद ऋणी हूँ, जिन्होंने न केवल इस पुस्तक का प्रकाशन करके मेरी मदद की, बल्कि उन्होंने इस घटना की पूरी खोज-यात्रा में जो सम्बल प्रदान किया शायद उसी का परिणाम है कि हम जनता के सामने इतनी जानकारी दे पा रहे हैं.

o

हमारे सहयोगी श्री प्रशान्त तथा प्रहलाद वर्मा ने इस पुस्तक का प्रूफ देखने से लेकर मुद्रण की व्यवस्था तक में जितनी लगन व परिश्रम का परिचय दिया, उसका मैं ऋणी हूँ. और ऋणी तो मैं अपने उन पत्रकार बन्धुओं का भी हूँ जिनकी कलम की कोताही ने मुझे यह अवसर प्रदान किया.

बसन्त पंचमी
१३ फरवरी १९८६.

—अशोक टण्डन

यह फोटोग्राफ २३ जनवरी १९७९ को कलकत्ते के प्रमुख बंगला दैनिक 'जुगान्तर' में छपा था। इसको जारी करते हुए समरगुहा ने कहा था कि नेता जी का यह फोटोग्राफ एक वर्ष पहले भारत के एक प्राचीन मंदिर में लिया गया है। नेताजी इस समय ८२ वर्ष की उम्र में पूर्ण स्वस्थ है। 'जुगांतर' की इस प्रति के साथ फोटो की मूल प्रतिलिपि भी 'रामभवन' में प्राप्त हुई है। और श्रीमती पुष्पा बनर्जी का कहना है कि गुमनामी बाबा ठीक इस फोटो जैसे लगते थे

फैजाबाद स्थित 'रामभवन' जिसके पीछे एक क्वार्टर में गुमनामी बाबा रहते थे

'रामभवन' के उसी क्वार्टर में पुलिस द्वारा सूची बनाये जाते समय लेखक
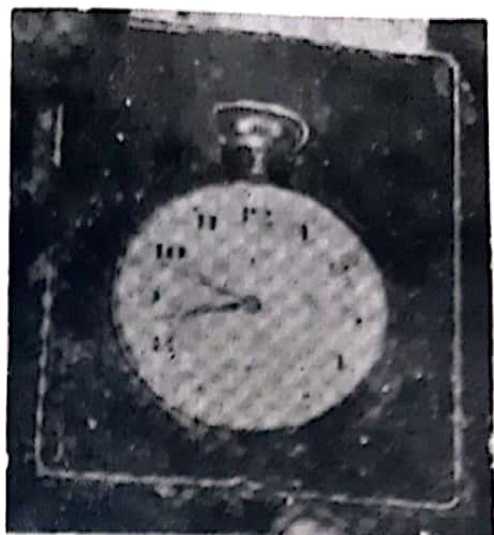
'गुमनामी बाबा' के सामानों में प्राप्त नेताजी की तरह की गोल जेबी घड़ी

हूबहू नेताजी के चश्मे की तरह का गुमनामी बाबा का चश्मा

'राम भवन' में मौजूद गुमनामी बाबा के सामान का एक दृश्य

वह पर्दा—जिसके पीछे से गुमनामी बाबा मिलने वालों से बात करते थे

'नये लोग' की खोज यात्रा

आज से लगभग १३–१४ वर्ष पूर्व मेरी जमीन-जायदाद के चकबन्दी में ढेरों मुकदमें चले थे। हमारे वकील थे–बाबू सत्यनारायणसिंह'सत्य'एडवोकेट, चकबन्दी के जाने-माने वकील! मेरा उनके यहाँ पारिवारिक रूप से आना-जाना था। उन्हीं दिनों वे अपने एक भतीजे श्री सांवल सिंह (अडिशनल डिस्ट्रिक जज) के साथ अयोध्या में निवास कर रहे एक गुमनामी बाबा के पास कईमरतबे जा चुके थे। एक दिन बाबूजी ने मुझसे कहा कि वह गुमनामी बाबा उन्हें नेताजी सुभाषचन्द्र बोस लगते हैं ?

उन्होंने बताया कि वे पर्दे के अन्दर बैठते हैं तथा प्रश्न लिखकर देने पर स्लेट पर जवाब लिख देते हैं ! कई सवालों का जवाब उन्होंने दिया, लेकिन जब उनसे पूछा गया कि 'लोग कहते हैं कि आप नेताजी हैं, क्या यह सच है ?' इस प्रश्न का कोई जवाब नहीं आया !

बाबूजी ने बताया था कि उनके पास देश भर के कई अखबार–पत्रिकायें आती हैं। वे रोज रात में पर्दे वाली कार में बैठकर दूर-दूर तक टहलने जाते हैं। वहाँ पर उनकी सुरक्षा में लोग रहते हैं। उनकी अनुमति के बगैर कोई नहीं मिल सकता। उनकी रायटिंग बेहद सुन्दर है आदि–आदि।

बात आई गई हो गई। सन् १९७८ में मैं 'सरयूमेल' नामक साप्ताहिक निकाल रहा था। उस समय जिला चिकित्सालय के एक डाक्टर बी० राय मेरे परिचितों में थे तथा मेरे घर के पास रहते थे। उन्होंने भी उन्हीं गुमनामी बाबा का अपने गुरु के रूप में कुछ जिक्र किया था। एक दिन वह मुझसे बोले कि, 'करेंट' साप्ताहिक का (तत्कालिक) संवाददाता डा० वीरेन्द्र मिश्र हमारे गुरुजी के पीछे पड़ा हुआ है, रोज उन्हें धमकी भरा पत्र देता है कि मैं आपके बारे में यह छाप दूंगा, वह छाप दूंगा! आप सी० आई० ए० के एजेन्ट हैं आदि ! डा० राय ने मुझसे कहा कि तुम पत्रकार हो, उससे मना कर दो! मैंने कहा कि, हर पत्रकार अपनी मर्जी का मालिक होता है–मेरे मना करने पर वह जरूर छाप देगा। आप उससे स्वयं मिलकर समझा दो–अच्छा रहेगा।

उसके बाद मुझे भी उनके गुरु से मिलने की इच्छा हुई, लेकिन डा० राय यह कहकर टालते रहे कि बिना उनकी अनुमति के किसी को नहीं मिलाया जा सकता और वह जल्दी किसी से नहीं मिलते! रात है, अकेले में पूजा-पाठ करते हैं !

तब से अब तक बीच में ये चर्चा हल्की–फुल्की चलती रही कि बाबा वे

नेताजी हैं ? लेकिन गम्भीरता से इस बात को लेने वाला कोई नहीं दिखा !

१८ सितम्बर ८५ को मैं नित्य की भांति 'नये लोग' के कार्यालय पहुंचता हूं—मेरे स्टाफ के श्रीशिवरामशुक्ला नित्य की भांति दिनभर की रिपोर्ट बताते हुये मुझसे कहते हैं कि अभी शाम को दिल्ली दरवाजे के कोई मोटे से पत्रकार कई लोगों के साथ आये थे और कह रहे थे कि आपके बगल स्थित रामभवन में कोई गुमनामी बाबा मर गया है, उसकी लाश तीन दिन से पड़ी थी, आज लोग जलाने ले जा रहे हैं, लेकिन उस बाबा के दर्शन नहीं करने दे रहे हैं ।

दूसरे दिन मेरे पास मेरी बहन विनीता अरोड़ा का फोन आता है कि डा० राय आये थे, बोल रहे थे कि जल्दी में हूं, जरा अशोक से कह देना कि मेरे गुरुजी के बारे में कुछ न छापेंगे । 'नयेलोग' वाले पीछे पड़े हैं !

असल में हुआ यह था कि शुक्ला उसी दिन राम भवन गये थे और वहां पर डा० बनर्जी से मुलाकात भी हुई थी, जिन्होंने उनसे कहा भी था कि 'ही वाज ही' अर्थात् यही नेताजी थे! लेकिन बाद में यह बात बताते हुये शुक्ला ने कहा कि मैंने दो तीन पेज यह स्टोरी लिखी भी थी, लेकिन मुझे लगा कि टण्डनजी विश्वास नहीं करेंगे, तब फाड़ दिया। शुक्लाजी ने कलकत्ते में रहकर २० वर्ष स्वतंत्र पत्रकारिता की है तथा 'रविवार' आदि पत्रिकाओं में काफी छपे हैं।

तीसरे दिन मैं अपनी ही कालोनी में रह रही बहन विनीता के यहां गया ! वहां पर उसने बताया कि कल अयोध्या के श्रीराम अस्पताल के डा० मलिक ने अरोड़ा साहब को तुरन्त अयोध्या बुलाकर यह कहा है कि वे पहले रामभवन वाले जिस भाग में रहते थे वहां रहने वाले गुमनामी बाबा का मरने के बाद चेहरा विकृत कर दिया गया है तथा वे नेताजी थे । यह बात डा० साहब के यहां रामभवन में रह रहे एक मेडिकल रिप्रेजेन्टेटिव श्री गुप्ता ने बताई थी ! लेकिन अरोड़ा साहब ने इसे बकवास समझा । बहन की इस बात से मेरा माथा ठनकने लगा कि कुछ राज अवश्य है !

शाम को मेरे नगर प्रतिनिधि चन्द्रेश श्रीवास्तव ने मुझसे कहा कि भाई साहब गुमनामी बाबा को लेकर बड़ी चर्चायें गर्म हैं। रमेश शर्मा का एक प्रेस नोट गुमनामी बाबा के बारे में 'जनमोर्चा' में भी छपा है ! हमारे यहां भी आया था । मैंने वह प्रेस नोट मांगा लेकिन खोजने पर मिला नहीं ! दूसरे दिन मैंने अपने घर पर चन्द्रेश और अपने एक सह-सम्पादक रामतीर्थ विकल से बात की ! विकल भी चन्द्रेश के साथ आये थे और इसी प्रकरण पर कुछ बता रहे थे ! काफी चर्चा के बाद मैंने उन दोनों से कहाकि उनके निकट सूत्रों को पकड़ो। इन लोगों ने राजकरण के एक कक्षा अध्यापक श्री कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव को पकड़ा और विकल ने अपने पुराने सम्बन्धों के आधार पर उनसे काफी कुछ जानकर

मुझे बताया ! जिस समय विकल मुझे घर पर यह बता रहे थे—उसी समय पता चला कि कृष्ण गोपाल मास्टर साहब मेरी ही कालोनी में श्री चट्टान सिंह के नाम से मशहूर साकेत महाविद्यालय के प्रवक्ता के नवनिर्माणाधीन मकान पर आये हुये हैं।

मुझे मास्टर साहब हाई स्कूल में पढ़ा चुके थे तथा मेरे यहां एक संगीत गोष्ठी मे अपने बांसुरी वादन की छटा भी बिखेर चुके थे व मुझे पत्रकार के रूप में स्नेह भी देते रह थे अतः मैं स्वयं श्री सिंह के मकान तक जाकर उन्हें अपने यहां लिवा लाया।

आते ही मैंने सीधा वार किया। "मास्टर साहब गुमनामी बाबा के बारे में मुझे सब मालूम है मुझे डा० राय ने सब बताया है, लेकिन मास्टर साहब बिना प्रमाण के मेरी बात कौन मानेगा"। तीर सही निशाने पर लगा था। मास्टर साहब यह समझ चुके थे कि मुझे सब मालूम है। फिर एकाएक भावावेश में आकर मास्टर साहब ने बहुत सी बातें बता दीं (बाद में आप उसे रिपोर्टिंग में पढ़ेंगे)। लेकिन मेरे यह कहने पर कि अब आप लोगों को इस महान सत्य को उजागर कर देना चाहिए ! क्योंकि यह सत्य कभी न कभी अन्य लेखकगण जैसे श्री समरगुहा, मिहिर बोस, शैलेश डे आदि अवश्य उजागर करेंगे ही। क्यों न यह श्रेय आपको मिले ! मास्टर साहब ने कहा कि बस दशहरे तक इंतजार करो– कलकत्ते से कोई सूचना आने पर ही कुछ कहूंगा !

मेरी सक्रियता रात-दिन में परिवर्तित हो गयी। मैंने चन्द्रेश और विकल को लगाया कि मास्टर साहब व उनके जरिये माताजी (श्रीमती सरस्वती शुक्ला) से मिलो व उनकी जानकारी के बगैर उनकी बातें टेप कर लो, क्योंकि कल को ये लोग मुकर जायेंगे तो हमारे पास क्या सबूत होगा ! विकल अपना टेप ले आया मैंने उस बैटरी का पैसा तथा अपने कैसेट दे दिये। रात-दिन दौड़कर इन लोगों ने माताजी व मास्टर साहब की कुछ बातें टेप की। मास्टर साहब बाद में विकल पर अवधूत को माताजी के पास ले जाने पर बिगड़े भी थे तथा चेतावनी भी दी थी कि तुम जानते नहीं कलकत्ते वाले कितने सशक्त हैं, ऐसा-वैसा मत करो, मुसीबत में पड़ जाओगे।

दूसरी तरफ मैंने अपने एक अन्य सह–सम्पादक रमेश शास्त्री को अयोध्या में 'गुमनामी बाबा' की चर्चा व गतिविधियों का पता लगाने के लिये लगाया। मैं स्वयं ऊपर से बड़ी बेफिक्री दिखाता हुआ हर आदमी, पत्रकार आदि से सूत्र पता लगाने लगा ! मुझे लगने लगा कि एक बहुत बड़ा तबका इस मरमरी को सुन चुका

है कि वे नेताजी थे ! ज्यादातर लोगों ने बताया कि उनसे स्व० डा० टी० सी० बनर्जी कहा करते थे, लेकिन सुनने वाला विश्वास नहीं करता था ! मैं डा० टी०सी० बनर्जी को बीस वर्षों से जानता हूं। शहर में वे एक बहुत ही प्रतिष्ठित व गंभीर व्यक्ति माने जाते रहे हैं और अपनी जवान पुत्री सुश्री चंदना बनर्जी (जो हमलोगों के डिग्री कालेज में पढ़ती थी) के असामयिक निधन के बाद से और भी गम्भीर हो गये थे ! मैं सोचने लगा कि डा० बनर्जी जैसे व्यक्ति का ये कहना कुछ अर्थ रखता है !

इस बीच मैंने मन्मथनाथ गुप्त की नेता जी पर 'स्वतंत्रता संग्राम क्रांतिकारी नेताजी सुभाषचंद्र बोस' किताब व पुरानी साप्ताहिक 'रविवार' पत्रिका (२२ जन० ७८) में श्री समरगुहा का 'नेताजी अभी जीवित हैं' तथा श्री तारापद बसु का 'नेताजी की मृत्यु पर ब्रितानी अधिकारियों को भी संदेह था', नामक लेख छपे थे, पढ़ना शुरू कर दिया ! मैं चाहता था कि इस खबर को जितना पुख्ता करके छापा जायेगा तभी जनता नोटिस में लेगी वर्ना एक खबर छपी तो यह मामला यूं ही दबकर रह जायेगा। २६ तारीख को अचानक शाम को मास्टर कृष्ण गोपाल जी मेरे घर आये और दो घण्टे तक विस्तृत चर्चा की ! जहां मुझे एक ओर विश्वास जमता जा रहा था वहीं दूसरी ओर सन्देह भी था कि कहीं मास्टर साहब अपनी झूठी वाहवाही लूटना तो नहीं चाहते हैं ! तभी दूसरे दिन मैंने बी० एन० अरोड़ा (अपने बहनोई) से कहा कि कैमरा ले चलो, अयोध्या में गुमनामी बाबा से सम्बन्धित कुछ फोटो खींच लाएं ! उसी दिन प्रातः से ही मैंने उपरोक्त रविवार के दोनों लेख अन्दर के पृष्ठों में कम्पोजिंग के लिए भेज दिये थे ! हमारी प्रेस में भी हमारे अन्य सहयोगी हम तीन चार जनों को अपने खिलाफ षडयंत्र करता समझकर हमारी जासूसी करने लगे थे, लेकिन अंतिम समय तक कोई कुछ नहीं जान पाया ! मैं सारा दिन अरोड़ा के साथ अयोध्या में चित्र खिंचवाता रहा तथा उनके बारे में जानने वाले लोगों सोढ़ी परिवार, लखनउवा मंदिर, डा० मलिक की पत्नी आदि से मिलकर सूत्रों को जोड़ने व परखने का कार्य करता रहा ! अरोड़ा के यह पूछने पर कि क्या यह समाचार दे रहे हो-मैंने कहाकि अभी नहीं। जब तक पूरी तहकीकात नहीं कर लूंगा तब तक नहीं दूंगा। किसी तरह बहाना बनाकर मैं अरोड़ा को साहू फोटोग्राफर के यहां ले गया और वहां पर रील धुलवाकर प्रिन्ट बनवाये। इसी बीच मैं अरोड़ा से 'अभी आया' कहकर सरदार ब्लाक वर्क्स अपने मित्र जंगी के पास गया और कहा कि कारीगर रोके रहना मैं ६ बजे शाम तक एक फोटो दूंगा। और दस बजे तक ब्लाक चाहिए। मोटर साइकिल से भागा-भागा प्रेस गया और चन्द्रेश व विकल को लिखी खबरें देखीं तथा उनसे कहा कि तुम लोग प्रेस पहुंचो मैं फोटो लेकर

एक घण्टे में आ रहा हूं! अपने प्रेस मैनेजर सुशील को मैंने दिन में ही घर पर बुलाकर कान्फिडेन्स में ले लिया था और सख्त हिदायत दी थी कि शाम को ८ बजे के बाद प्रेस से न तो कोई बाहर जाये और न ही अन्दर आये यहाँ तक कि ९ बजे छूटने वाले कम्पोजीटरों को भी ओवरटाइम के नाम पर १२ बजे रात तक रोकना है।

लखनउवा मंदिर की फोटो लेकर मैंने अरोड़ा को उनके घर छोड़ा और कहा कि आज टी. वी. पर बढ़िया पिक्चर आ रही है बैठकर देखूंगा! लेकिन घर पहुंचकर मैंने तुरन्त स्वेटर व कोट पहना तथा मोटर साइकिल लेकर तुरन्त प्रेस भागा। रास्ते में फोटो ब्लाक के लिए दे दिया।

वहीं बैठकर सम्पादकीय व और खबरें लिखने–लिखाने के बाद सारे पेज प्रूफ देखकर पूरा अखबार छपवाकर, तुरन्त रात में ट्रेनों पर भिजवाकर, ४ बजे सुबह मैं फिर आफिस में आकर बैठ गया।

मेरा पूरा स्टाफ चन्द्रेश, विकल, रमेश शास्त्री, कलीम आनन्द, प्रह्लाद वर्मा, वेदप्रकाश, ओमप्रकाश मिश्रा, लव सिंह, रवीन्द्र, राजेन्द्र वर्मा, सुशील आदि सभी मेरे साथ रहे।

सुबह ही मैंने विकल व चन्द्रेश को भेजा कि जाकर जयशंकर पाण्डेय को जगाकर अखबार दे दो और कहो कि अपना काम करें। मैंने दो दिन पूर्व ही जयशंकर को कान्फिडेन्स में लेने की कोशिश की थी !

थोड़ी देर बाद ही जयशंकर पाण्डेय (भू०पू० विधायक, नगर जनता पार्टी) ने अपने कुछ साथियों को रामभवन पर बैठा दिया ! श्री राम दुलारे यादव युवा नेता भी सुबह से ही वहां डटे रहे ! दिन भर जयशंकर जिलाधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक व अन्य अधिकारियों से जांच करने की मांग करते रहे तथा जिलाधिकारी को एक लिखित प्रार्थना पत्र भी दिया।

२८ अक्टूबर १९८५

फैजाबाद से प्रकाशित 'नये लोग' दैनिक समाचार पत्र में छपी खबरों का अवलोकन करें। प्रथम पृष्ठ पर मैंने उस दिन सम्पादकीय (अपनी बात) लिखा था—

अपनी बात

नेताजी !

—अशोक टण्डन—

'नये लोग' की इस खोज–यात्रा में जो भी तथ्य सामने आये—उन्हें आपके समक्ष रख छोड़ा है। इन सारे वाकयातों को जोड़ने तथा नेता सुभाषचन्द्र बोस के जीवित रहने की सम्भावनाओं के जो संदेहात्मक तथ्य समय–समय पर उनके निकट सहयोगियों द्वारा दिये गये हैं—उन सबका एक ही निचोड़ निकलता है कि नेता सुभाषचन्द्र बोस उस विमान दुर्घटना में नहीं मरे थे तथा वे "ट्रांसफार आफ पावर' नामक संधि के तहत १९९० तक मिलने की स्थिति में ब्रिटेन को सौंपे जाने जाने वाले थे—इसी कारणवश उनको अपने ही देश में अज्ञातवास करना पड़ा और तभी समय–समय पर मनरगुहा, विजय लक्ष्मी पंडित आदि लोगों ने उनके जीवित रहने का जिक्र किया है।

इसी तरह शौलमारी आश्रम से लेकर तिब्बत व जयगुरुदेव द्वारा कानपुर में प्रगट कराने की घटनाओं के तह में जाने पर भी बहुत सी बातें सामने आती हैं। दूसरी तरफ अयोध्या में अज्ञातवास करने वाले इस गुमनामी व्यक्ति के इर्द–गिर्द 'नेताजी' की सम्भावनाओं के प्रश्न चिन्ह सदा ही जनता में मरमरी फैलाये रहे। प्रश्न उठता है कि अगर ये गुमनामी व्यक्ति नेता सुभाषचन्द्र बोस नहीं थे तो कौन थे ? उनका नाम क्या था ? घर कहाँ था ? इन सारे प्रश्नों का उत्तर उनके नजदीक रहे लोगों से पूछा जा सकता है और इसकी सत्यता परखी जा सकती है। अब प्रश्न उठता है कि इन सारी सम्भावनाओं का अन्तिम सूत्र अगर कहीं बचा है, तो उसकी जांच परखकर, यहाँ फैली इस सम्भावना या उस राष्ट्र-नायक के आखिरी दिनों की गुमनामी जिन्दगी को इतिहास में लाने की जिम्मेदारी के लिये अगर एक चिन्गारी भी कहीं नजर आती है तो उसे छोड़ा नहीं जाना चाहिये। अर्थात् तीन ताले में बन्द उस रहस्य को जानने के लिये जनता को आगे आना होगा। और अगर ऐसा तत्काल न किया गया तो वे सारे व्यक्ति उन प्रमाणों को भी उसी तरह नष्ट कर डालेंगे जिस तरह कि उस व्यक्ति के रहने पर इन लोगों ने किया।

छह कालम (पूरे अखबार की चौड़ाई) में छपी पहली खबर—

फैजाबाद में अज्ञातवास कर रहे नेता सुभाषचन्द्र बोस नहीं रहे ??

(चन्द्रेश श्रीवास्तव एवं रामतीर्थ विकल)

विगत बारह वर्षों से अयोध्या—फैजाबाद में रह रहे गुमनामी बाबा के नाम से प्रसिद्ध कथित 'नेता सुभाषचन्द्र बोस' का निधन रहस्यमय स्थितियों में विगत १६ सितम्बर को फैजाबाद बस स्टेशन के समीप रामभवन के एक भाग में हो गया। इनके कमरे में तीन दावे दारों ने अपने—अपने ताले डाल दिये हैं। उनके तथाकथित सेवकों द्वारा जल्द ही सारे सबूत नष्ट किये जाने का प्रयास किया जा रहा है।

फैजाबाद, २७अक्तूबर। गुमनामी बाबा के रूप में एक दशक से निवास कर रहे कथित 'नेता सुभाषचन्द्र बोस' का निधन गत १६ सितम्बर को फैजाबाद नगर में स्थित 'राम भवन' के एक भाग में हो गया। तथ्यों के अनुसार १६ सितम्बर की रात्रि ९ बजकर ३० मिनट पर नेताजी ने अपनी परिचारिका श्रीमती सरस्वती देवी शुक्ला से अपने कमरे की रोशनी गुल कर देने को कहा और फिर मौत का सन्नाटा छा गया, ९ बजकर ४५ मिनट पर उनका शरीर निर्जीव हो गया।

चूंकि वे योगी का जीवन बिता रहे थे इसलिये लोग इस असमंजस में काफी देर तक पड़े रहे कि वे अपने सूक्ष्म शरीर में कहीं विचरण करने तो नहीं चले गये। स्थूल शरीर छोड़ने के पूर्व नेताजी गीता का अध्ययन कर रहे थे और उसके एक पृष्ठ पर अपनी अन्तिम हस्तलिपि के रूप में कुछ अस्पष्ट संख्याएं-'६......८......१६—' वे छोड़ गये।

नेताजी की इस स्थिति की सूचना पाकर उनके निजी चिकित्सक डा० आर० पी० मिश्र, तत्काल घटनास्थल पर पहुंचे व जांचोपरांत घोषणा किया कि नेताजी नहीं रहे।

नेताजी के परिवारजनों और कलकत्ता के कुछ ५ खास लोगों को सूचना वायरलेस द्वारा भेजे जाने की व्यवस्था इनके परिचारिकों में से एक को सौंप दी गयी।

चूंकि नेताजी के हिन्दुस्तान आगमन के बाद से साये की भांति रह रही बस्ती के विद्वान साहित्यकार पं० महादेव प्रसाद तिवारी की निरक्षर पुत्री सरस्वती देवी

शुक्ला और उनके सेवकों (चिकित्सक आदि) में विवाद शुरू हो गया कि अब भारत को आजादी दिलाने वाले के अंतिम दर्शन हेतु जन सामान्य को अनुमति दी जाय किन्तु उनके दो सहयोगी सेवकों ने इसका प्रबल विरोध किया। तब तक सूचना पाकर सरस्वती देवी शुक्ला का युवा पुत्र भी आ गया था। अन्त में निर्णय लिया गया कि कलकत्ता से आने वाले लोगों की प्रतीक्षा की जाय तभी कोई कदम उठाया जाय। गुमनामी बाबा उर्फ नेता जी के निधन का समाचार नगर में महकने लगा था; जिसे ऐन–केन प्रकारेण इनके सेवकों ने दबाया। १७ सितम्बर की सायं तक शव फूलने लगा, समय बीतता रहा किन्तु कलकत्ता से आने वाले लोग नहीं आये। १८ सितम्बर को शव में दुर्गन्ध आ गई और वह विकृत होने लगा। सायं कलकत्ता से आने वाली दून एक्सप्रेस से भी जब उनके परिवार के लोग नहीं आये तो शव का दाह-संस्कार करने की योजना को अंतिम रूप दे दिया गया।

मना जाना है कि शव यात्रा के पूर्व नेताजी के चेहरे को किसी रसायन से विकृत कर दिया गया था, जिसका प्रबल विरोध कुछ लोगों ने किया था।

शव का दाह संस्कार गुप्तारघाट पर स्थित एक इमली के वृक्ष के नीचे करने की योजना बनाई गयी। शमशान घाट के बजाय इस स्थान पर दाह संस्कार कराने के पीछे मंशा यह थी कि यदि कभी स्मारक बना तो यह स्थान उपयुक्त होगा। किन्तु बाहर भीड़ एकत्र होने लगी थी और लगने लगा था कि विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो जायेगी तो कुछ लोगों ने कहा कि दाह–क्रिया अयोध्या में होगी और एक कार पर व्यवस्था के लिये कुछ लोग अयोध्या रवाना हो गये। यह देख भीड़ अयोध्या की तरफ भागी। भीड़ हटते ही रात्रि ९ बजे मुख्य परिचायकों ने नेताजी के शव को वाहन में रखा और गुप्तारघाट पर पहले से तैयार की गयी चिता पर ले जाकर अग्न्याहुति दे दी।

नेताजी की दाहक्रिया के उपरान्त उनके सेवकों में विवाद शुरू हो गया और तरह–तरह की बातें होने लगी। कुछ लोग उनकी सम्पत्ति पर अपना अधिकार जताने लगे। विवादों का मुख्य मुद्दा यह भी था कि इनके चिकित्सकों में से एक इनकी कोई अमूल्य वस्तु उठा ले गया है। आम चर्चा के अनुसार अमूल्य वस्तुओं में दो वस्तुयें हो सकती थी, नये नोटों से भरा ट्रंक और वायरलेस सेट। उन सेवकों में इसी के साथ मतभेद शुरू हो गया। कुछ लोगों का मत था कि नेताजी के अंतिम अवशेष को इस ढंग से नष्ट नहीं करना चाहिये था, उन्हें जनता के सामने स्पष्ट कर देना चाहिये था। उनके सेवकों में वार्तालाप हाईपिच पर होने लगा था और आस–पास के लोगों का ध्यान उस तरफ केन्द्रित होने लगा था। इसका आभास होते ही वे चुप हो गये और फिर फुसफुसाहटें शुरू हो गयीं।

निर्णय हुआ इनके तीन प्रमुख सेवकों का ताला नेताजी के शयनकक्ष, जो

पुस्तकों, अखबारों और अन्य गुमनाम वस्तुओं से अटा पड़ा था, में लगा दिया जाय और आगे का निर्णय कलकत्ता से आने वालेलोगों केविवेकपर छोड़दियाजाय।शीघ्र ही इस बात पर सहमति हो गई और नेताजी के शयनकक्ष पर नेताजी के तीन सेवकों ने अपने-अपने ताले लगा दिये जो आज भी लगे हुये हैं ।

नेताजी के स्थानीय सेवकों में असन्तोष और उत्तेजना फैलने लगी । उनकी निकटतम सेविका श्रीमती सरस्वती देवी शुक्ला हतोत्साहित हो गयीं । इन्हें बराबर यह आश्वासन दिया जाता रहा कि नियमतः कलकत्ता से उनके निकटतम लोग दुर्गापूजा के अवसर पर अवश्य आयेंगे क्योंकि बताया जाता है कि नेताजी से मिलने के लिये दुर्गापूजा और २३ जनवरी को विशेष रूप से ५ व्यक्ति कलकत्ता से एवं कुछ विशिष्ट लोग निश्चित रूप से आते थे । २३ जनवरी को एक विशेष उत्सव मनाया जाता था । चूंकि दुर्गापूजा निकट थी इसलिये सरस्वती देवी को यह विश्वास हो चला था कि आने वाले लोग इस अवसर पर इस वर्ष भी जरूर आयेंगे और सारी समस्याये अपने आप सुलझ जायेंगी ।

दुर्गापूजा के बाद भी जब वे लोग नहीं आये तब कलकत्ता जाने और समर-गुहा से सम्पर्क स्थापित करने की योजना सेवकों के मध्य बनने लगी ।

हालांकि सभी गुमनामी बाबा उर्फ गुरुदेव उर्फ भगवन उर्फ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की वास्तविकता को जनसामान्य के मध्य प्रकट करने हेतु आतुर व व्याकुल थे, परन्तु हर एक के मन में एक अज्ञात भय समाया हुआ है । हर कोई केवल एक ही बात दुहराता है 'हम चाहते हैं कि असलियत जाहिर हो, लेकिन वे खतरनाक लोग हैं—हमारे भी बाल बच्चे हैं ।'

भय किससे और क्यों ? यह रहस्य अभी भी रहस्य बना हुआ है । कभी तो इनको भय होता है किसी अज्ञात भौतिक शक्ति से और तुरन्त ही यह भय अदृश्य और दैवी शक्तियों में रूपांतरित हो जाता है । भय किसी भी प्रकार का क्यों न हो किन्तु अब तक प्राप्त तथ्यों से प्रतीत होता है कि मृतक गुमनामी बाबा उर्फ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस एक महान योगी थे जो तन्त्र साधना की अन्तिम सीमा पर पहुंच गये थे ।

—o—

२८ अक्टूबर ८५ के 'नये लोग' के प्रथम पृष्ठ पर छपी दूसरी खबर—

'बिगड़ गई बतिया बनावन वाला कौन'

(विकल)

अयोध्या एवं फैजाबाद में वर्षों से गुमनामी का जीवन व्यतीत किये गुरुदेव उर्फ भगवन उर्फ गुमनामी बाबा उर्फ कथित नेता सुभाषचन्द्र बोस की परिचारिका सरस्वती देवी शुक्ला ने 'नये लोग' को अपनी भेंट में अप्रत्यक्ष रूप से यह स्वीकार किया कि जिनकी सेवा में उन्होंने चालीस वर्षों की लम्बी अवधि बिता दी है, वे ही नेताजी थे ।

उन्होंने बताया कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के बारे में उड़ने वाली हर अफवाहों को सुनकर वे कुछ क्रोधित होते थे और फिर हंसकर कहा करते थे, देखो! लोग क्या-२ अफवाह उड़ा रहे हैं । जिस समय नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की संतान एवं पत्नी की चर्चा गर्म की गयी थी, उस समय भगवन उर्फ गुरुदेव की प्रतिक्रिया बताते हुए सरस्वती देवी शुक्ला ने कहा कि वे कहा करते थे कि नेहरू और उनका परिवार हमारे पीछे पड़ा हुआ है । वही अफवाहें फैला रहा है । मैं अविवाहित हूं किन्तु देश-विदेश में मेरे पत्नी और बच्चों को पैदा किया जा रहा है । कानपुर में जयगुरुदेव द्वारा नेताजी को प्रकट करने की घोषणा एवं घटनाक्रम के दौरान उनके भगवन उर्फ गुरुदेव कहा करते थे—"देखो ! धोबिया कैसा नाटक कर रहा है, हम यहां हैं !"

श्रीमती सरस्वती देवी शुक्ला ने रहस्योद्घाटन करते हुए बताया कि उनके भगवन उर्फ गुरुदेव से देश-विदेश के लोग मिलने आया करते थे । विशेष रूप से पांच व्यक्ति कलकत्ता से आते थे । हर साल २३ जनवरी एवं दुर्गा पूजा के अवसर पर खासतौर पर वे लोग यहां भगवन से मिलने आते रहे । भगवन उर्फ गुरुदेव उर्फ कथित नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से गुप्त रूप से मिलने वालों में समरगुहा, चौधरी चरण सिंह, नेताजी के भाई-एवं उनके परिवार के सदस्य प्रमुख थे ।

उन्होंने बताया कि श्री समरगुहा तो अक्सर यहां आते थे और कभी-कभी वो पन्द्रह-पन्द्रह दिनों तक गुरुदेव के पास काना-फूंसी करते रहते थे । पांच-छह वर्ष पूर्व उनके भगवन चौधरी चरणसिंह से कुछ रुष्ट हो गये थे । श्रीमती शुक्ला ने बताया कि २३ जनवरी को यहां आये सभी लोग एक समारोह मनाया करते थे ।

यह पूछे जाने पर कि अगर उनके कथनानुसार मृतक गुमनाम बाबा उर्फ भगवन नेताजी सुभाषचन्द्र बोस हैं तो इस खबर को जन सामान्य के सामने लाया जाना चाहिये। श्रीमती शुक्ला ने कहा कि ऐसा जरूर होना चाहिए लेकिन सरकार के आगे हम क्या कर सकेंगें, "मरे तो वह अपनी मौत से लेकिन वे हमको कहेंगे। बात तो सब सही है किन्तु बिगड़ गई बतिया बनावन वाला कौन है ?"

उन्होंने बताया कि चूंकि वे अनपढ़ हैं, इसलिए वे कोई भी ठोस प्रमाण अपने गुरुदेव को नेताजी साबित करने के लिये नहीं दे सकती हैं किन्तु उनसे अपनी निकटता के आधार पर वे अपने विश्वास की पुष्टि भी करती हैं।

हर भेंट के दौरान श्रीमती सरस्वती देवी शुक्ला ने किसी अज्ञात शक्ति के भय से ग्रसित होने का संकेत दिया। अपने भगवन उर्फ गुरुदेव के कुछ स्थानीय सेवकों से वे काफी क्षुब्ध नजर आईं। उन्हें यह भी शिकायत है कि वे अपनी इच्छा-नुसार कुछ कह भी नहीं सकती हैं और नहीं कुछ कर ही सकती हैं। आने वालों का उन्हें आज भी इन्तजार है।

उसी दिन 'नये लोग' के प्रथम पृष्ठ पर छपी तीसरी खबर–

वे नेताजी ही थे

(चन्द्रेश–विकल)

'सिर में थोड़े से बाल, गोल चेहरे पर पतले-पतले गुलाबी होंठ। सफेद बिखरी हुई दाढ़ी नेता सुभाषचन्द्र बोस के इस भव्य व्यक्तित्व को देखकर मैं अवाक सा रह गया। उनका चेहरा मेरी नजरों में नाच रहा है।' चित्रकार कृष्ण गोपाल श्रीवा-स्तव ने यह जानकारी 'नये लोग' को बड़े गर्व से दी।

श्रीकृष्ण गोपाल ने अपने संस्मरणों के बारे में कहा, 'नेताजी से मेरा सम्बन्ध एटा के नरेश द्वारा हुआ था। मैं उन्हें बीस वर्षों से जान रहा हूं। फैजाबाद आने से पूर्व वे बस्ती में रहा करते थे। माताजी (सरस्वती देवी शुक्ला) ने तो अपना पूरा जीवन ही अर्पण कर दिया—नेताजी जहां-जहाँ गये वे साये की तरह उनकी सेवा करती रहीं। हमें इस बात की विशेष चिंता हो रही है कि ४० वर्षों की उनकी सेवा का फल उन्हें कैसे मिले?

श्रीकृष्ण गोपाल ने एक अन्य भेंट में 'नये लोग' को बताया कि मुझे याद आ रहा है कि समरगुहा उनसे अक्सर मिलने आया करते थे और एक पखवारे तक नेताजी से बातचीत हुआ करती थी। नेताजी योगी का जीवन जी रहे थे, वे

प्रकांड विद्वान थे, पत्र-पत्रिकाओं को बराबर पढ़ा करते थे—'पायनियर' अखबार उनको सबसे अधिक प्रिय था। वे राजयोगी थे। उन्हें अदृश्य होने, सूक्ष्म शरीर में परिवर्तित होने और दूसरों के मन की बातें जानने की विद्या आती थी। वे इधर कहा करते थे कि "अब ! जीवन का अन्तिम पड़ाव आ गया है।"

उन्होंने यह भी बताया कि भगवन (नेताजी) नेहरू परिवार से नाराज रहा करते थे। उनका कहना था कि नेहरू ने देश के साथ बहुत बड़ी गद्दारी की है—भारत हस्तांतरण संधि क्यों नहीं जनता के सामने लायी जाती—क्यों भारत की जनता को उक्त संधि को जानने का अधिकार १९९० तक छीन लिया गया। उनके गुप्त-काल का राज भी उक्त सन्धि को जानने के बाद स्पष्ट हो जायेगा।

चित्रकार मास्टर कृष्ण गोपाल जी ने यह स्वीकार किया कि नेताजी से वर्ष में दो बार कलकत्ता से उनके परिवारजन और सहयोगी आया करते थे। दुर्गा-पूजा और २३ जनवरी। २३ जनवरी को उनका जन्मदिन मनाया जाता था। उनसे मिलने वालों में एक वयोवृद्ध सज्जन भी हुआ करते थे, जिनको नकली दिल लगा हुआ है। बाहर से आने वाले लोग हम लोगों से कभी वार्ता नहीं करते थे।

श्री कृष्ण गोपाल ने इस रहस्य का उद्घाटन करने की अपनी मंशा जाहिर करते हुए कई बार जिक्र किया कि मैं चाहता हूं कि ऐसे महान व्यक्ति पर से पर्दा उठे। देहान्त हो जाने के बाद मैं एवं माताजी चाहते थे कि उनके अंतिम दर्शन हेतु जनता को अनुमति दे दी जाय, किन्तु हमारे ही कुछ अन्य सहयोगियों ने ऐसा नहीं होने दिया।

श्री गोपाल ने यह बताया कि नेताजी आजन्म अविवाहित रहे—उनके कथित विवाह, संतानों के जन्म के समाचार को लेकर वे हर बार नेहरू परिवार पर षडयन्त्र करने का आरोप लगाते रहे। वे कहा करते थे कि यह सब झूठी अफवाहें जनता को भ्रम में डालने के लिये फैलाई जा रही है। उनके चचेरे भाई को दबाव में डालकर नेहरूजी ने लिखा लिया था कि नेताजी की मृत्यु हो चुकी है।

नेताजी के वर्तमान आवास में बन्द तीन तालो के बारे मे उन्होने बताया कि 'ये तीन ताले मैंने बन्द करवाये,एक ताला डा०पी०बनर्जी का, दूसरा डा०आर० पी० मिश्रा का और तीसरा माताजी का लगा हुआहै।ताला लगाने का उद्देश्य मात्र इतना ही है कि उनके बहुमूल्य अवशेष इधर—उधर और गलत हाथों में न पहुंच पाये। हमें इन्तजार है कलकत्ता से आने वाले लोगों का,क्योंकि बिना निर्देश के हम कुछ आगे नहीं कर सकते।

उन्होने यह स्वीकारा कि नेताजी' का दाह-संस्कार नहीं किया जाना चाहिए था क्योंकि वे राजयोगी थे और योगियों का दाह—संस्कार नहीं किया जाता। उस समय हम सभी लोगों का विवेक खो गया था।

समरगुहा से सम्पर्क स्थापित करने के लिये वे काफी चिन्तित थे और कहा करते थे कि वे भी एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। उन्हें भगवन (नेताजी) की दैवी शक्तियों से भी भय था-श्रीकृष्ण गोपाल का कहना था कि हो सकता है नेताजी किसी अन्य रूप में हमारे आस-पास मौजूद हों।

श्रीकृष्ण गोपाल को नेताजी के शव को बिना बर्फ के रखे जाने पर भी काफी खीझ थी। उनका कहना था कि, 'बुद्धिजीवियों से मुझे यह अपेक्षा नहीं थी।

—०—

एक खबर और—

सब लोग जानते थे मगर ....

(खबर नवीस)

फैजाबाद, २७ अक्टूबर। यह तो तय है कि जब से गुमनामी बाबा अयोध्या आये और जितना ही पर्दे में छिपकर रहने का प्रयास करते रहे—उतना ही उनके नेताजी होने की खबरें यत्र-तत्र गुप-चुप रूप से फैलती रही।

सांसद श्री निर्मल खत्री ने चार दिन पूर्व ही हमारे एक सहयोगी एवं पत्रकार से यह स्वीकारोक्ति की कि सम्भवतः एक माह पूर्व शरीर छोड़ने वाले उपरोक्त गुमनामी बाबा नेता सुभाषचन्द्र बोस ही थे। उन्होंने उक्त पत्रकार से यह भी कहा कि उनकी मृत्यु के पूर्व कई बार कुछ लोगों ने उनसे कहा कि चलिये नेताजी से मिला दिया जाय। आज ही एक स्थान पर एक पत्रकार से बातचीत के दौरान साकेत महाविद्यालय के एक वरिष्ठ प्रवक्ता ने भी कहा कि राजकरण के अध्यापक श्री कृष्णगोपाल ने उनसे कहा था कि मैं आज अपनी कसम तोड़कर आपको बता रहा हूं कि नेताजी जीवित हैं तथा अयोध्या में हैं, चलिये मिलवा दें।

एक अन्य अतिप्रतिष्ठित परिवार की बहू ने कुछ ही दिन पूर्व एक पत्रकार साथी को यह बताया कि पिछली बार जब वे अपने मायके कलकत्ता गयी हुई थी तो वहां उनके बाबा (एक बड़े प्रकाशक) ने बताया कि उनके एक मित्र श्री मिहिर घोष, जो नेता सुभाषचन्द्र बोस पर एक पुस्तक लिख रहे हैं, नेताजी से मिलने गये हैं जो वहां गुमनामी रूप से अयोध्या में रह रहे हैं।

'नये लोग' की इस खोज-यात्रा में अयोध्या स्थित श्रीराम अस्पताल के चिकित्सक डा० मलिक की पत्नी ने 'नयेलोग' को बताया कि जब वे फैजाबाद बस स्टेशन के करीब 'राम भवन' के पीछे वाले मकान को छोड़कर सुरसुर कालोनी

जा रही थीं तो डा० आर० पी० मिश्रा ने उनसे यह कहकर कि मेरे वृद्ध पिताजी के लिये मकान चाहिये—

वह मकान ले लिया था वहीं रह रहे एक मेडिकल रिप्रेजेन्टेटिव श्री गुप्ता एक दिन उनके यहाँ आये और बोले"आप जानती हैं आज कौन सा दिन है ?" उन्होंने कहा कि आज २३ जनवरी है, तो श्री गुप्ता बोले कि आज नेताजी का जन्म-दिवस है, और जिस मकान को छोड़कर आई हैं—वहीं आजकल नेताजी रह रहे हैं। फिर एक माह पूर्व श्री गुप्ता ने डा० मलिक के यहां नेताजी की मृत्यु के समय का सारा किस्सा बताया और कहा कि अंत समय में जब मैंने नेताजी के दर्शन करने चाहे तो डा० मिश्रा ने मुझे ढकेलकर बाहर कर दिया और वे तभी से नाराज हैं।

अयोध्या स्थित लखनऊवा मन्दिर के पुजारी ने आना–कानी करते–करते बताया कि एक बार गलती से गर्मी के दिनों में उसने उन्हें देखा था–सफेद दाढ़ी, भव्य चेहरा, माथा सपाट, गोरा रंग।

अयोध्या में गुरुद्वारा के बगल जहाँ तीन चार वर्ष गुमनामी बाबा रहे। वहीं बगल में रह रहे एक परिवार ने भी बताया कि प्रत्येक २३ जनवरी को कुछ लोग कलकत्ते से आया करते थे और उस दिन बाबाजी के यहाँ कुछ मनाया जाता था। गलती से उनका दर्शन की हुई एक महिला ने बताया कि गौरवर्ण, दाढ़ी व तेजस्वी ललाट था उनका। इन लोगों का कहना है कि बस्ती से अक्सर आने वाले कुछ लोगों ने बताया कि ये नेता सुभाष ही हैं, जो वहां से पहले बस्ती में रहते थे। एकबार एक पुरुष नौकर ने लोगों से यह कहना शुरू किया था कि वे सुभाषचन्द्र हैं। इस पर बाबाजी ने उसे निकाल दिया था।"

—oo—

२८ अक्तूबर को ही दिन में तीन बजे मेरे कार्यालय पर एक खबर भेजी जाती है कि राममवन के उस तीन ताले को सिटी मजिस्ट्रेट व क्षेत्रीय पुलिस अधिकारी(नगर)खोलने आ रहे हैं। आप भी आ जायें। मैं तुरन्त पहुंचता हूं काफी भीड़ है। जनता किसी तरह मुझे व जयशंकर पाण्डेय को अन्दर जाने देती है। हम लोगों के सामने ही डाक्टर आर० पी० मिश्रा, डा० राय तथा श्रीमती सरस्वती शुक्ला अपने–अपने ताले खोलते हैं। डा० पी० बनर्जी भी मौजूद हैं।

सिटी मजिस्ट्रेट के यह पूछने पर कि ये तीन ताले क्यों बन्द हैं। डा० मिश्रा बोले—बस यूं ही सुरक्षा के लिये डाल दिये गये !

अन्दर घुसते ही देखने से लगा कि यहां पर कोई साधु सन्त या संयासी से भी ज्यादा जागरूक व्यक्ति रहता है। दसियों ट्रंक, टेप रिकार्डर, ग्रामोफोन, हजारों पेपर कटिंग, पत्र-फाइलें आदि पड़ी थीं। सिटी मजिस्ट्रेट ने बिना ज्यादा कुछ सामान छुये ही दस मिनट में कहा--देखिये भई नये लोग वाले ! यहां कहां नेताजी हैं ? फिर बोले—क्यों माताजी ! आपने इनसे कहा था कि ये नेताजी हैं। माताजी बड़बड़ाने लगीं। मैंने कहा–मान्यवर! आप दस मिनट के अन्दर इतने सारे सामानों, कागजों का बगैर परीक्षण किये कैसे कहते चले जा रहे हैं कि यहां नेताजी नहीं रहते थे ! फिर जब मैं आपसे कह रहा हूं कि श्रीमती सरस्वती शुक्ला का टेप मेरे पास है जिसे मैं किसी अदालत पर ही पेश करूंगा, तब आप ऐसी बात क्यों कर रहे हैं ?

बस दस मिनट के बाद ही सब उस कमरे से बाहर चले आये और बाहर बरामदे में बैठकर चाय पीते हुये नगराधिकारी ने कहा कि बेकार की लोग उड़ाते हैं कि नेताजी थे !

बाहर निकलकर उन लोगों ने व जयशंकर पाँडेय ने जब समुचित उत्तर नहीं दिया तो जनता नारे लगाने लगी। मैंने कहा कि वहां कुछ देखा ही नहीं गया। फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि वहां नेताजी नहीं रहते थे। सारे सामानों की पूर्णतया जांच होनी चाहिए।

इसी आधार पर दूसरे दिन एक दूसरे स्थानीय दैनिक 'जनमोर्चा' ने जिलाधिकारी का बयान छापा कि जिलाधिकारी ने इस दैनिक (नये लोग) की खबर को बेबुनियाद बताया है तथा सिटी मजिस्ट्रेट व नगर पुलिस अधीक्षक की जांच के बाद कोई ऐसा तथ्य नहीं मिला जिससे इसकी पुष्टि हो सके।

२९ अक्टूबर, ८५ के 'नयेलोग' के सारे बन्डल गायब कर दिये जाते हैं। एजेन्टों से पूरे के पूरे बण्डल खरीद लिये जाते हैं। पता नहीं चल पाता।

२९ अक्टूबर को अयोध्या के एक प्रसिद्ध पण्डा श्री रामकिशोरजी के यहां मैं पहुंचता हूं। मेरे साथ श्री बी० एन० अरोड़ा तथा मेरे नगर संवाददाता चन्द्रेश हैं। पण्डाजी खुलकर सामने आ जाते हैं। ३० अक्टूबर ८५ के 'नयेलोग' में छह कालम में एक खबर छपती है—

भगवन उर्फ गुमनामी बाबा ही नेताजी सुभाषचन्द्र बोस थे

[अशोक टण्डन]

"यह रहस्योद्घाटन फैजाबाद नगर इंका के उपाध्यक्ष श्री रामकिशोर पण्डाजी ने किया। उन्होंने मांग की है कि ये तथ्य जनता के समक्ष आना चाहिए और उक्त स्थान व कमरे के सारे सामान को राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करके वहां राष्ट्रीय स्मारक बनना चाहिये। श्रीराम किशोरजी ने नेताजी की कई वर्षों तक अयोध्या में सेवा की है।"

फैजाबाद, २९ अक्टूबर। शहर कांग्रेस (इ) के उपाध्यक्ष श्रीराम किशोर पण्डा ने 'नये लोग' को एक विशेष भेंट में बताया कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने उन्हें उनकी रक्षा करने की जिम्मेदारी दी थी और वे उस जिम्मेदारी को उनके जीवनकाल तक निभाते रहे तथा अब वे समझते हैं कि उनकी बची हुई वस्तुओं की रक्षा करना भी उसी वचन के अन्तर्गत आता है। अतः वे यह रहस्योद्घाटन कर रहे हैं। उन्होंने आगे बताया कि वे उन्हें भगवनजी ही कहा करते थे, वैसे भगवनजी ने स्वयं कभी नहीं कहा कि वे नेता सुभाषचन्द्र बोस हैं लेकिन मुझे पूरा यकीन हो चला था कि यही नेताजी सुभाषचन्द्र बोस हैं।

श्री किशोर ने भावुक होते हुये बताया कि वे मुझे नंदबाबा व मेरी स्त्री को यशोदा कहा करते थे। भगवन अक्सर मुझसे कहा करते थे कि जिस तरह कृष्ण को नन्द—यशोदाजी ने छिपाकर रखा था, उसी तरह तुमको भी मुझे रखना होगा।

पंडाजी ने उनके साथ के अनेक प्रकरण बताते हुए कहा कि उन्हें अयोध्या में सबसे पहले बस्ती के श्री दुर्गा प्रसाद पाण्डेय वकील लेकर आये थे। श्री पाण्डेय स्थानीय श्री हरिश्चन्द्र मिश्रा एडवोकेट के रिश्तेदार हैं। अयोध्या आने के समय उनके साथ एक लम्बा सा मुस्लिम व्यक्ति था। भगवन स्वयं अपने हाथ से हंड़िया में खाना बनाते थे और रोज हंड़िया फेंक देते थे। अपने घर के बगल में एक मकान व कमरा दिखाकर उन्होंने कहा कि शुरू के ढाई माह वे यहीं रहे फिर वहां से ब्रह्मकुंड गुरुद्वारा के समीप श्री सोढ़ी के मकान में चले गये थे। कुछ वर्ष वहां रहने के बाद वे लखनऊवा मन्दिर के पीछे रहने लगे थे। इन स्थानों पर उनके साथ एक स्त्री परिचायिका श्रीमती सरस्वती शुक्ला रहती रहीं जिन्हें नेताजी जगदम्बे कहते थे।

उन्होंने बताया कि वे जब लखनऊ में रहते थे तो तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री सम्पूर्णानन्दजी भगवन का समस्त भार सम्भालते थे । नेताजी एक महान साधक राजयोगी थे। अक्सर कहा करते थे कि पूरा हिमालय मेरी नजरों में है। तिब्बत की एक तंत्रशाला में भी वे रहे हैं, जहां पर दो—तीन सौ मुर्दे रखे हैं जिन्हें तन्त्र की क्रिया से चलाया जाता है। वहां पर पांच—पांच सौ व हजार-हजार वर्ष के लोग हैं।

पंडाजी ने बताया कि वर्ष भर में दो अवसरों पर कलकत्ते से चार व्यक्ति आते थे। ये अवसर थे २३ जनवरी व नवरात्रि । २३जनवरी को उनका अर्थात् नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्मदिन मनाया जाता था। हम सभी उनके भक्त-गण फूल, माला, इत्र आदि लेकर जाते थे । कलकत्ते से विशेष रूप के गुलाब की एक माला उनके लिये आती थी । आने वाले व्यक्तिगण उनके सामने बैठकर कुछ नोट किया करते थे । उनका काफी समान कलकत्ते से आता था ! वही लोग नेताजी के लिये धन भी लाते थे ! नेताजी उनके जाने के बाद कहा करते थे ये हमारे बहुत बड़े—बड़े अफसर हैं। वे अक्सर आजाद हिन्द फौज, हिटलर, मुसालेनी व द्वितीय महायुद्ध की घटनाओं का जिक्र किया करते थे। उन्होंने कहा कि लखनऊवा मन्दिर प्रवास के दौरान कलकत्ते वाले लोग अयोध्या के टूरिस्ट बंगले में रुकते थे।

नेताजी का स्वभाव कभी बहुत गरम व कभी बहुत नरम हो जाता था। आवाज में हुंकार थी शेर की तरह ! वे गलती पर बहुत बिगड़ते थे ! एक बार अपने एक भक्त के पुत्रों द्वारा यह रहस्योद्घाटन करने पर कि वे ही नेताजी हैं,वे बहुत बिगड़े थे और वह व्यक्ति दो वर्ष तक उनके पास नहीं जा सका। उनके निकट जाने वालों में पहला परिवार डा० टी० सी० बनर्जी का था। वे सब अन्दर भी जाते थे। डा० आर० पी० मिश्रा को वे घोर नास्तिक कहा करते थे । श्री राम किशोरजी ने कहा कि वे राजनीतिकों की तरह कभी—कभी एक दूसरे की बुराई भी करते थे । उनके पास इटावा के राजा साहब सुरेन्द्र सिंह चौधरी अक्सर आया करते थे ।

श्री किशोर ने बताया कि वे लखनउवा मन्दिर में फिसल गये थे तब से चल नहीं पाते थे। वे कुर्सी पर बैठकर निवृत होते थे। उन्होंने बताया कि नेताजी बताया करते थे कि जब वे दर्शननगर वाले मकान में रहते थे तो वहां उनके पास शैडो भी थे व दो गाडियां भी थी । नेताजी को हर क्षेत्र का प्रकांड विद्वान बताते हुये उन्होंने कहा कि वे अक्सर सांकेतिक भाषा का प्रयोग करते थे, वे शार्टहैण्ड जानते थे ।

नेताजी की शव यात्रा के लिये विमान का निर्माण करने वाले महात्मा शरण ने द्रवित मन से बताया कि उन्होंने शव यात्रा के दौरान ही पहली और अन्तिम बार नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के चेहरे का प्रत्यक्ष दर्शन किया था।

नेताजी की लम्बाई ६ फिट से कम नहीं थी। उनका रंग बहुत गोरा था व ललाट साफ था। इनके लिये किताबें वगैरह कलकत्ते से आती थी। वे रोज कई समाचार पत्र पढ़ा करते थे। नेताजी के विषय में ढेरों बातें बताते हुए उन्होंने कहा कि एक बार दो सांसदों के सरकिट हाउस में आकर रुकने पर नेताजी ने कहा था कि देखो हमको पहचानने आया है। कई बार खुफिया पुलिस ने भी उनके बारे में जानना चाहा लेकिन हर व्यक्ति उनसे बात करके नमित हो जाता था।

पंडाजी के अनुसार भगवन अपने अन्तिम दिनों में पुनः अयोध्या जाना चाहते थे लेकिन डा०आर०पी. मिश्रा इलाज के बहाने उन्हें यहीं रखे रहे।

श्रीकिशोर ने 'नये लोग' को विशेष जोर देकर बताया कि जब नेताजी का दाह संस्कार किया जा रहा था तो मैंने कहा कि आप आज फैजाबाद के इतिहास को मिटा रहे हैं। जहां आज १३ लाख जनता होनी चाहिये थी वहीं आज १३आदमी हैं। उन्होंने कहा कि जनता के लिये अन्तिम दर्शन की प्रार्थना को भी डा०मिश्रा ने नहीं सुना। उनका आरोप था कि फैजाबाद निवासी सेवक भक्तों ने उन पर पूरा कब्जा कर रखा था और अभी भी उनके सामानों पर गिद्ध दृष्टि लगाये हैं। जबकि वह सब राष्ट्रीय सम्पत्ति है। दाहक्रिया के बाद जब रामभवन के मालिक श्री गुरुबसंत सिंह को गुमनामी बाबा के नेता सुभाषचन्द्र बोस होने की बात बताई गयी तो वे बिफर पड़े, कहने लगे कि आप लोगों ने पहले क्यों नहीं बताया मैं रिवाल्वर लेकर खड़ा हो जाता, देखता कैसे उनको इस तरह गुमनाम जलाया जाता।

२० अक्टूबर ८५ के 'नये लोग' में छपी अन्य खबरें—

नेताजी की अंतिम यात्रा

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की अन्तिम यात्रा का सजीव वर्णन करते हुए पं० राम किशोर पण्डा ने 'नयेलोग' को बताया कि उनकी पवित्रता को अंतिम क्षण तक बरकरार रखा गया। नेताजी का शव एक मेटाडोर पर रखकर गुप्तारघाट मन्दिर के समीप पहले से तैयार रखी गयी चिन्ता तक ले जाया गया।

मेटाडोर में शव के इर्द—गिर्द पं० राम किशोर के अलावा राजकुमार शुक्ला, डा० बी राय, अरुण कुमार, महात्मा शरण, कृष्ण कुमार बैठे थे। काफी हुज्जत के बाद शव के चेहरे पर से कपड़ा हटाया गया। चेहरा देखकर सारी शंकाओं का समाधान मिल गया—'वे नेताजी ही थे।' इस समय उनके नाक के नीचे का चेहरा कपड़े से लपेटकर रखा गया था।

निर्मल खत्री को बताया था

(नगर संवाददाता)

कांग्रेस [इ] नगर कमेटी के उपाध्यक्ष पं० रामकिशोर पण्डा ने 'नयेलोग' को बताया कि उन्होंने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के निधनोपरान्त उनके अस्तित्व के बारे में सांसद निर्मल खत्री को जानकारी दी थी। निर्मल खत्री ने नई दिल्ली जाकर केन्द्र से सलाह मशविरा करके कोई अग्रिम कदम उठाने का आश्वासन दिया। किसी भी प्रकार की कार्यवाही करने के लिये तीन दिन का मौका मागा था और इसके बाद वे दिल्ली चले भी गये। श्री निर्मल खत्री ने इस तीन दिन की अवधि के दौरान नेताजी के किसी भी सामान को 'डिस्टर्ब' न होने देने की राय भी दी थी।

—०—

२९ अक्टूबर को मैं अपने एम० डी० श्री ओमप्रकाश मदान तथा श्री बी० एन० अरोड़ा के साथ डा० आर० पी० मिश्रा के पास गया। ३० अक्टूबर को हमने 'नयेलोग' में ये खबर छापी—

अब तक कहां थे आप लोग ?

(विशेष प्रतिनिधि)

फैजाबाद, २९ अक्टूबर। 'मैं नहीं कह सकता कि "वे" थे या नहीं।' ये जवाब उस महापुरुष के सबसे प्रमुख दावेदार डा० आर० पी० मिश्रा ने 'नयेलोग' के इस प्रश्न पर दिया कि 'क्या आपके भगवन जी नेता सुभाषचन्द्र बोस नहीं थे ?'

इस पूरे प्रकरण में सबसे संदिग्ध भूमिका निभाने वाले डा० आर० पी० मिश्रा जिला अस्पताल फैजाबाद के भूतपूर्व मशहूर सर्जन हैं, जो नेताजी के सम्पर्क के कारण ही फैजाबाद के झारखंडी मोहल्ले में ही घर व दवाखाना बनवाकर बस

गये हैं। भगवनजी के प्रमुख करीबी लोग अगर कुछ डा० मिश्रा के डर बस सामने नहीं आ पा रहे हैं तो कुछ व्यक्ति खुलेआम उन्हें दोषी बता रहे हैं। कुछ ने तो उन पर नेताजी की धन व संपत्ति पर नियत गड़ाने का आरोप लगाया है।

एक सूत्र का कहना है कि जब नेताजी का दाह संस्कार होना था तो उनके परिवार का एक सदस्य वहाँ एक वी० आई० पी० बैग लेकर गया था।

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में डा० मिश्रा ने कहा कि उनके भगवनजी की लम्बाई औसत थी अर्थात ६ फिट की थी। इस प्रश्न का उत्तर उन्होंने काफी टाल-मटोल करके दिया।

किन विशेष अवसरों पर उनके भगवनजी के पास कलकता से लोग आते थे के जवाब में डा० मिश्रा ने कहा कि एक नवरात्रि, दूसरे शायद नववर्ष ! क्या वह दिन २३ जनवरी होता था और उस दिन लोग उनका अर्थात नेताजी का जन्म-दिन मनाते थे के जवाब में डा० मिश्रा ने कहा कि मैं यह नहीं बता सकता कि वह समारोह किस उपलक्ष में मनाया जाता था ?

प्र०-आपने कलकत्ते के किन दो व्यक्तियों के पास १६ सितम्बर को टेलीग्राम भेजे थे।

उ०-एक नाम मुझे याद है पी० एम० राय तथा पता उन्होंने अपनी लड़की से पूछकर बताया कि शायद दमदम पार्क कलकत्ता है, दूसरे का नाम पता उन्होंने कहा कि डा० पी० बनर्जी को मालूम है।

प्र०-क्या नेताजी के पैर की गांठ में दर्द था?

उ०-हाँ ?

प्र०-क्या वे उसकी मैगनेटिक मशीन से सिकाई करते थे ?

उ०-हां,वह एक प्रकारके दो मैगनेट होते हैं जो पैर के दोनों तरफ रख दिये जाते थे।

प्र०-मैगनेट नहीं, मुझे बताया गया कि वह मशीन थी।

उ०-मैं ज्यादा हड्डी आदि के बारे में नहीं जानता। डा० मिश्रा ने एक अन्य प्रश्न के उत्तर में स्वीकार किया कि इटावा के कोई सज्जन उनके पास कभी कभार आते थे। डा० मिश्रा बड़े ही सयंत स्वर में जवाब दे रहे थे बस वे एकबार उत्तेजित होकर कहने लगे कि इस अयोध्या नगरी में महामानव के लिये मकान हेतु मैं दर—दर भटका हूं, तब कोई क्यों नहीं आया सामने ! उनसे बातचीत के दौरान उनकी कई पुत्रियां भी वार्ता कक्ष में आ गयीं और वे लोग भी यही कहती रही कि अब तक कहां थे आप लोग ?

(डा० मिश्रा के पड़ोस के दो नवयुवकों द्वारा व्यवधान डालने पर हमलोग डा० मिश्रा से ज्यादा बातचीत नहीं कर सके।)

—०—

३० अक्टूबर ८५ की ही एक और खबर —

नेताजी की पसंदें

(चन्द्रेश)

गुमनामी बाबा के रूप में अपना शरीर त्यागने वाले नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को 'गुलाब' के फूल, विशेष रूप से लाल-गुलाब-अत्यधिक प्रिय थे। उनके जन्मदिवस २३ जनवरी पर कलकत्ता से लालगुलाब के फूलों की सुन्दर एवं आकर्षक मालायें आती थीं।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस अपने उच्च विचारों के अनुरूप ही उच्चकोटि के स्वादिष्ट भोजन भी पसन्द करते थे। दही एवं शहद के साथ-साथ देशी घी व शुद्ध सरसों के तेल का वे नियमित रूप से सेवन करते रहे। शहद एवं देशी घी अन्य आवश्यक वस्तुओं के साथ उन्हें ज्यादातर कलकत्ता से ही भेजा जाता था।

नेताजी धूम्रपान के भी शौकीन थे। उन्हें 'चेन स्मोकर' भी कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। विदेशी ब्राण्ड की सिगरेट विशेष रूप से५५५ का वे प्रयोग करते थे। इसकी अनुपलब्धता पर वे पनामा फिल्टर का इस्तेमाल करते थे।

देश विदेश की अनेक भाषाओं का विशिष्ट ज्ञान रखने वाले नेताजी सुभाषचन्द्र बोस शार्ट-हैंड के भी विशेष ज्ञाता थे। उनका काफी कुछ लेखन कार्य सांकेतिक भाषा में लिपिबद्ध होता था।

देश विदेश की खबरों के प्रति हमेशा नेताजी का मस्तिष्क चैतन्य रहता था। जनता शासन के दौरान तत्कालीन विदेशमंत्री अटल बिहारी बाजपेई की ब्रिटेन यात्रा के दौरान नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के बारे में ब्रिटिश अधिकारियों ने कहा था "कि हमें विश्वास नहीं है कि नेताजी मर गये हैं।" इस गतिविधि पर यहां नेताजी ने टिप्पणी किया-"देखो! वह अपना नेता हेरता है।"

बल-बुद्धि के साथ-साथ नेताजी धन सम्पन्न भी थे। वे अपनी उंगलियों में सोने की हीरे जड़ित अंगूठियां पहना करते थे। वे हमेशा नये नोट प्रयोग करते थे। नेताजी पूजन एवं साधना में सदैव लीन रहते थे। अकेलापन उन्हें कभी-कभी अखरता था। ऐसे समय में किसी नजदीकी सेवक के पहुंचने पर

उसको धार्मिक,राजनैतिक एवं बौद्धिक शिक्षा दिया करते थे।

ये सब जानकारी देते हुए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के अयोध्यावास के दौरान उनके सर्वाधिक निकट सम्पर्क में आये पं० रामकिशोर पण्डा नगर उपाध्यक्ष कांग्रेस (इ) ने आज 'नयेलोग' को एक भेंट में देते हुए बताया कि नेताजी का सारा काम पर्दे के पीछे से ही होता था।

—o—

२९ तारीख को ही रात में मेरे पुराने परिचित मित्र डा० बी० राय, श्री रवीन्द्र नाथ शुक्ला के साथ मेरे घर पर आते हैं ! देखें खबर—

टेप की तलाशी

फैजाबाद, २९ अक्टूबर। कल रात्रि दस बजे डा० बी० राय भगवनजी के एक अन्य भक्त के साथ इस संवाददाता के निवास पर पहुंचे और बातचीत के दौरान कुछ उत्तेजित होकर कई बार बोले कि"अबतक साले ये पत्रकार कहां थे?"

अपरोक्ष रूप से यह स्वीकार करते हुये कि भगवनजी ही नेता सुभाषचन्द्र बोस थे। वे बार-बार कहते रहे कि अब उनके मरने के बाद यह सब करने से क्या फायदा जब उनके जिंदा रहने पर इस नगर व देश के लोगों ने उनके लिये कुछ नहीं किया, वे दानी–पानी के मोहताज रहे, तब सब कहां थे ये सारे चिल्लाने वाले !

इस बीच उनके साथ आये मिस्टर शुक्ला बार-बार इस प्रतिनिधि से पूछते रहे कि आपका अखबार कहाँ–कहाँ तक जाता है, क्या ये लखनऊ जाता है ? क्या ये खबर दिल्ली पहुंच गई होगी ? अब आप क्या छापने जा रहे हैं ? आपके पास अन्य कौन से प्रमाण हैं ? आप कैसे सिद्ध करेंगे कि ये नेताजी ही थे ? इसी बीच वे उठकर संवाददाता के कमरे का यह भी निरीक्षण किये कि कहीं उनके बयान टेप तो नहीं किये जा रहे हैं ?

डा. राय ने इस संवादादाता को कई तर्कों से प्रभावित करने की कोशिश भी की। उनका कहना था कि हमलोग कलकत्ता वालों की मर्जी के खिलाफ कुछ नहीं कर सकते।

—o—

२९ अक्तूबर को मैं व श्री मदान ने शहर के मशहूर होम्योपैथ डा० पी० बनर्जी से बात की। डा० पी० बनर्जी व उनका पूरा परिवार भगवनजी के यहाँ घर तक जाता था। ये खबर देखें —

'ही वाज ही'

(विशेष प्रतिनिधि)

फैजाबाद, २९ अक्टूबर । नेता सुभाषचन्द्र बोस उर्फ भगवनजी के चर्चित निकटस्थ व्यक्तियों में से एक प्रमुख व्यक्ति ने भी अप्रत्यक्ष रूप से 'नये लोग' के समक्ष स्वीकार किया कि उनके भगवन ही नेताजी थे ।

हम लोग तो उन्हें अपने गुरु के रूप में ही जानते हैं। वे हमारे भगवनजी ही थे। दूसरे के लिये नेताजी हो सकते हैं। इस महामानव में अगाध श्रद्धा रखने वाले इस सूत्र ने 'नये लोग' के इस प्रश्न पर 'क्या आप कह सकते हैं कि वे नेताजी नहीं थे' पर उपरोक्त बात कही !

उन्हीं के निकटस्थ एक अन्य सूत्र ने वार्ता के बीच में ही कई बार उत्तेजित होकर कहा कि 'अब तक आप लोग कहां थे ? ज्ञातव्य है कि इस संवाददाता से नेताजी के करीब लगभग सभी सूत्रों ने यही प्रश्न दोहराये हैं। सूत्र ने एक प्रश्न के उत्तर में अंग्रेजी में कहा था कि "ही वाज ही" ।

उक्त सूत्र ने बड़े ही शांत मुद्रा में गम्भीर होते हुये कहा कि आप लोगों ने सराहनीय कार्य किया है, इससे मैं प्रसन्न हूं ! उसने यहां तक बताया कि उनके कमरे में एक छोटी सी अटैची रखी है–उसमें काफी प्रमाण मिल सकते हैं। उन्होंने कलकत्ते के वे दो पते भी बताये–जिस पर १६ सित० को टेलीग्राम किया गया था। उनको पूरा यकीन है कि अगर उन दोनों कलकत्ता निवासियों से सम्बन्ध करें तो इस रहस्य पर से पर्दा उठ सकता है ! उन्होंने यहाँ तक कहा कि सत्यता के बारे में बहुत से अधिकारी व शहर के लोग भी जानते थे ।

—०—

उसी दिन 'नये लोग' में ये भी खबरें छपती हैं—

नेताजी को जयगुरुदेव ने क्यों नहीं प्रकट किया

कानपुर में जयगुरुदेव ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को प्रकट करने की घोषणा की थी निश्चित तिथि एवं स्थान पर हजारों की संख्या में देश-विदेश से आये हर वर्ग के लोगों की अपार भीड़ एकत्र थी। समय बीतता गया। निश्चित समय से काफी देर बाद जयगुरुदेव पुलिस संरक्षण में आते हैं और ऊंचे मंच पर गये, ज्यों ही खड़े होते हैं, जनता की एक ही आवाज से वातावरण गूंज उठा था 'सुभाषचन्द्र बोस को सामने लाओ' हताश एवं पराजित स्वर में उस समय जयगुरुदेव ने स्वयं को ही नेताजी सुभाषचन्द्र बोस होने का दावा कर डाला है जिसने

फलस्वरूप उन्हें जन सामान्य के आक्रोश का समाना करना पड़ा था। पुलिस के ही संरक्षण में किसी तरह वे अपनी जान बचा सके थे। जयगुरुदेव हिरासत में लिए गये और दूसरे ही दिन उन्हें जमानत पर छोड़कर पुलिस संरक्षण में जनपद बस्ती पहुंचा दिया गया था।

क्या कारण था कि जय गुरुदेव अपनी घोषणा के अनुरूप कार्य नहीं कर सके और उन्हें दुनिया की जलालत झेलनी पड़ी ? इस प्रश्न पर प्रकाश डालते हुए शंकायें व्यक्त की थी जयगुरुदेव के निकट के सूत्रों ने जिनके अनुसार जयगुरुदेव पर नेताजी को प्रकट न करने का सरकारी दबाव पड़ा था। नेताजी की मर्जी के खिलाफ उन्होंने घोषणा की थी और अन्तिम समय तक उन्हें राजी नहीं कर सके। दूसरी सम्भावना कुछ ज्यादा ही खरी उतरती है क्योंकि सरस्वती देवी शुक्ला के अनुसार उस समय भगवन उर्फ गुरुदेव उर्फ गुमनामी बाबा उर्फ सुभाषचन्द्र बोस अयोध्या में मौजूद थे।

विवेकानन्द का सानिध्य

पं० रामकिशोर पण्डा ने बताया कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस कभी-कभी अपने संस्मरण भी सुनाया करते थे।

एक बार अपने बाल्यावस्था का जिक्र करते हुए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था—"जब मैं पांच वर्ष का था, उस समय मैं बहुत सख्त बीमार पड़ गया था। मेरी माताजी बताती थीं कि लगभग मर सा गया था। मेरी माताजी ने कलकत्ता में उस समय उपस्थित स्वामी विवेकानन्द के पास जाकर वस्तु-स्थिति की जानकारी दीं। स्वामीजी तुरन्त ही आये और मुझ पर लेट गये। कुछ क्षणोपरान्त मुझमें श्वास का संचार हुआ। उस समय स्वामी विवेकानन्द ने मेरी माताजी से कहा था यह बच्चा जीवित हो गया, यह तेजस्वी एवं कीर्तिमान बनेगा।"

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस पर स्वामी विवेकानन्द एवं रामकृष्ण परमहंस का काफी गहरा प्रभाव था। वे मां काली के उपासक थे। अपनी उपासना की अवधि में नेताजी अपने सामने वह चित्र रखते थे जिसमें रामकृष्ण परमहंस एवं मां शारदा के बीच में मां काली का चित्र चित्रित है।

—०—

अयोध्या स्थित लखनऊवा कोठी, जहाँ भगवनजी लगभग दो वर्ष रहे
फोटो–वी० एन० अरोड़ा

'रामभवन' के एक कमरे में मिला भगवनजी का सामान

भगवनजी के कमरे में पुस्तकें व काली माँ का चित्र

वह तख्त जिस पर भगवनजी सोते थे

३० अक्टूबर को चौक में एक सर्वदलीय सभा के माध्यम से इस प्रकरण की न्यायिक जांच कराने मांग की गयी, सभा को भारतीय जनतापार्टी के युवा नेता अनिल तिवारी, जनता पार्टी के रामप्रकाश सिंह, साकेत महाविद्यालय के प्रवक्तागण डा० सत्येन्द्र त्रिपाठी, डा० गौरीशंकर तिवारी, व डा० स्वामीनाथ पाण्डेय महेशचन्द्र पाण्डेय एडवोकेट, कमला शंकर पाण्डेय, वसुपति अग्रवाल, भू० पू० विधायक जय-शंकर पाण्डेय, कम्युनिस्ट पार्टी के ओमप्रकाश नाहर, नौजवान सभा के कृष्णकांत, फारवर्ड ब्लाक के शिवकुमार आजाद, साकेत महाविद्यालय छात्रसंघ के महामन्त्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, बहुजन पार्टी के रामदुलारे यादव आदि ने सम्बोधित किया।

इस सभा के बाद से ही रामभवन पर न्यायिक जांच की मांग को लेकर अनिश्चित कालीन धरना शुरू हो गया ! रामभवन के बाहर टेन्ट लगाकर उस दिन रामप्रकाश सिंह एडवोकेट, रामदुलारे यादव, मुन्ना पहलवान, सूर्यकान्त पाण्डेय, कवीन्द्र साहनी, रमेश रस्तोगी आदि बैठे !

इसके पूर्व अनिल तिवारी एडवोकेट ने जिलाधिकारी के समक्ष दो प्रार्थना पत्र दिये, जिसमें कहा गया कि रामभवन में निवास कर रहे गुमनामी बाबा के सामानों पर नाजायज ढंग से कब्जा करने के आरोपों में सभी सम्बंधित लोगों को गिरफ्तार किया जाये।

तथा दूसरी रिपोर्ट में कहा कि यदि 'नये लोग' द्वारा प्रकाशित समाचार भ्रामक पाया जाय तो सम्पादक, प्रकाशक एवं पत्रकार को गिरफ्तार किया जाये।

इन प्रार्थना-पत्रों पर (जी० डी० क्रम सं० ४४/२३-५० दिनांकित ३१-१०-८५) पर जिलाधिकारी ने निम्नलिखित आदेश किये—"ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक/कृपया रिपोर्ट दर्ज कराकर जांच एवं उचित कार्यवाही कराने पर विचार कर लें।" दूसरा आदेश किया—"ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक/ नियमानुसार रिपोर्ट दर्ज कराकर जांच एवं उचित कार्यवाही हेतु"

—ह० डिस्ट्रिक मजिस्ट्रेट ३०-१०-८५

इस पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक महोदय ने प्रभारी निरीक्षक कोतवाल फैजाबाद को निम्न आदेश दिये——

"गोपनीय

श्री ए० के० हिंगवासिया

निरीक्षक कोतवाली

दिनांक १६-९-८५ को सर्किट हाउस के सामने स्थित रामभवन में निवास कर रहे संत की मृत्यु हुई थी। इस व्यक्ति के सम्बन्ध में दैनिक पत्रिका में करीब

२–३ दिन पहले यहां सूचना दी गई कि वह नेता सुभाषचन्द्र बोस थे। इस सूचना से नगर में राजनैतिक गतिविधियों में काफी तेजी आई है, ऐसी हालत में यह आवश्यक है कि आपके द्वारा पूरे प्रकरण पर जांच कर ली जाय। मैं चाहूंगा कि आप अपने स्तर से दो उ० नि० नियुक्त करें जो उक्त बाबा के बारे में पूरी जानकारी करें कि वह फैजाबाद में कहां से आये थे और कहां–कहां पर रहे और जो सम्पत्ति है उन सबकी इनवेनटरी तैयार करें ताकि उनके बारे में जानकारी की जा सके और.........

ह० करमवीर सिंह"

इसी आधार पर ३१ अक्टूबर को १२ बजे के करीब शहर कोतवाल श्री हिंगवासिया के नेतृत्व में एक दल रामभवन पहुंचा और वहां पर मौजूद लोगों में से बार एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री सत्य नारायण सिंह 'सत्य' एडवोकेट, 'नये लोग' के प्रबन्ध निदेशक ओ० पी० मदान, अनिल तिवारी, राम प्रकाश सिंह, नार्दन इण्डिया पत्रिका के संवाददाता एवं प्रवक्ता बी० एन० अरोड़ा, डंका के बहुचर्चित युवा नेता अरविन्द सिंह तथा मुझे गवाह बनाते हुये हम लोगों के समक्ष पुलिस उपनिरीक्षक श्री हरीशचन्द्र सिंह ने तीनों व्यक्तियों से तालियां मंगाकर कमरा खोलकर सामानों की एक सूची बनानी शुरू की। पुलिस की सहमति से 'नयेलोग' के फोटोग्राफर व पत्रिका के बी० एन० अरोड़ा ने लगभग एक घण्टे तक अन्दर कमरे व वहां मौजूद पत्रों व किताबों आदि के कुछ चित्र खीचे, लेकिन फिर जब कुछ देर बाद नेताजी से सम्बन्धित प्रकाशित साहित्य व कुछ पत्र मिलने शुरू हुए तो अरविन्द सिंह ने कोतवाल से कहकर फोटोग्राफी बन्द करा दी। कुछ ही घण्टे बाद जैसे ही युवा नेता अजय सिंह ने वहां रखे गुमनामी बाबा का एक चश्मा ढूढ़ा–जो बिल्कुल नेताजी द्वारा लगाये जाने वाले गोल चश्मे की तरह था, तो सभी का आश्चर्य बढ़ने लगा! क्योंकि थोड़ी देर तक वहां कोई ऐसा सामान नहीं मिल रहा था, जो नेताजी से सम्बन्धित कहा जा सकता, सभी के चेहरे सशंकित हो चले थे कि क्या यहां कोई सूत्र नहीं मिलेगा?

अन्दर मिले बंगला के पत्रों को पढ़–पढ़कर डा० स्वामीनाथ पाण्डेय ने उसका हिन्दी अनुवाद बताया। दूसरे व तीसरे दिन–दिनभर ये सूचीबद्ध का कार्य चलता रहा और जहां पुलिस की ओर से हस्तलिपि विशेषज्ञ आदि भेजे गये, वहीं पर कांग्रेस के नेता श्री के० के० सिन्हा तथा जपा के डा० सत्येन्द्र त्रिपाठी, प्रसिद्ध सिविल अधिवक्ता श्री मदन मोहन पाण्डेय आदि ने भी अन्दर जाकर वस्तुओं का अवलोकन किया। तीसरे दिन जब नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के

माण्डले जेल से लिखे गये एक पत्र की फोटो कापी से गुमनामी बाबा की मौजूदा अंग्रेजी की हस्त-लिपियों को मिलाया गया तो पुलिस विभाग के हस्तलिपि विशेषज्ञ के अतिरिक्त अरविन्द सिंह सहित सभी गवाही न देकर स्वीकारा कि दोनों के and में d लिखने की स्टाइल तथा B, i, s, is, p. आदि अक्षर प्रथम दृष्टया हूबहू मिल रहे हैं !

—o—

१ नवम्बर ८५ के 'नये लोग' में छपी मुख्य खबर—

'नये लोग' की भविष्यवाणी सच्ची

नेता सुभाषचन्द्र बोस का चश्मा, घड़ी व उनसे सम्बंधित पत्र एवं साहित्य मिले और भी बहुत से प्रमाण मिलने की सम्भावनाएं प्रबल : जांच जारी

जांच दल—सर्वश्री सत्यनारायण सिंह 'सत्य', ओमप्रकाश मदान, अशोक टण्डन, अनिल तिवारी, रामप्रकाश सिंह, वी० एन० अरोड़ा व अरविन्द सिंह एवं पुलिस अधिकारी श्री एच० सी० सिंह

(अशोक टण्डन एवं ओमप्रकाश मदान)

फैजाबाद, ३१ अक्टूबर । आज दिन भर की जांच में यह सिद्ध हो गया है कि वह गुमनामी बाबा ही नेताजी सुभाषचन्द्र बोस थे । वहां पर प्राप्त बीसों बक्सों में उपलब्ध साहित्य में जहां विश्व के समस्त विषयों पर किताबें उपलब्ध हैं वहीं नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से सम्बन्धित जितनी पुस्तकें आज तक प्रकाशित हुई हैं, वे भी मिलीं । वहां मिले पत्रों से यह साफ जाहिर है कि ये व्यक्ति तथा इनसे सम्बन्धित लोग नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद, मोरारजी देसाई, चरण सिंह, अब्दुल गनी खान राजनारायण आदि से मिलते रहे हैं और इन सारे नेताओं को नेताजी के जीवित रहने की पूरी जानकारी थी । एक पत्र में, जो सुनीलदास ने उन्हें लिखा है उससे जाहिर होता है कि वे प्रकट क्यों नहीं हो रहे थे ? दूसरे पत्र में इटावा के एक व्यक्ति ने उन्हें लिखा है कि आपके प्रकट होने पर पूर्व की भांति ही प्रतिष्ठा

मिलेगी। इनके २३ जनवरी जन्मदिन होने के बहुत से प्रमाण मिले हैं। दुनिया की हर राजनैतिक व अन्य विषयों पर बहुतेरे समाचार पत्रों की कतरनें मिली हैं तथा वार्ता एजेन्सी द्वारा जारी समाचार जिसमें नेताजी के सम्बन्ध में जयपुर के उच्च न्यायालय में दायर वाद की कटिंग थी उस पर उन्होंने अन्डरलाइन किया हुआ था। खासकर नेताजी के बारे में छपे साहित्य व खबरों के प्रति वे बहुत सचेत लगे। उनके पास मिले सामानों को देखने से यह लगा कि वे बहुत ही उच्चकोटि के हैं जिन्हें वे बड़ी सुरक्षा से रखे थे। वहां मिले सामानों में कपड़े, एक काफी लम्बी खाकी पैण्ट (लम्बाई लगभग ४४ इंच) तथा आसमानी हाफ कमीज भी काफी लम्बी थी। सामान में एक लाख लगाने वाली सील पर तारा व 'उ' तथा एक भगवे रंग का झंडा भी मिला जिस पर गोले में चार त्रिशूल चारों दिशाओं में बने थे।

'दि पाइनियर' अखबार के २२-२-८३ के सम्पादकीय जो "आसाम होलो कान्ट" के शीर्षक से था उस पर उन्होंने बगल में पेन से यह टिप्पणी लिखी—'प्राविंसेस रिआर्गनाइज' हुई थी तब लैंगवेज व ऐथिक ग्रुप की रक्षा करने की प्रिंसिपुल को स्वीकार करके हुई थी उसी के फलस्वरूप एक ही आसाम का पांच टुकड़ा किया गया।" जांच में मिले सामानों में एक चश्मा गोल पतले सुनहरे फ्रेम का मिला जिसे नेता सुभाषचन्द्र बोस पर छपी किताबों में छपे उनके चित्रों में पहने चश्मे से मिलान करने पर हूबहू लगा। कई घड़ियों में नेताजी की प्रसिद्ध गोल विदेशी जेब घड़ी भी थी।

वहां मिली खास पुस्तकें—१— बुलेटिन आफ द नेताजी रिसर्च ब्यूरो २—हिस्ट्री आफ द फ्रीडम मूवमेण्ट आफ इण्डिया ३—मास्कोस हैण्ड इन इण्डिया (पूरी पुस्तक अन्डर लाइन की हुई है) ४—फ्रीडम एण्ड आफ्टर ५—नेहरूजी फैटल फ्रेंडशिप ६—जेल में तीस वर्ष—लेखक त्रिलोक नाथ आदि अनेक पुस्तकों के साथ तमाम पत्रिकायें मिलीं। मिले सामानों में ब्रासो (पीतल चमकाने वाली पालिश) की चार शीशी, सुनहरी सेफ्टी पिनें, चार स्पूलों सहित पुराने टाइप का टेप रिकार्डर।

सैकड़ों ग्रामाफोन के रिकार्ड, बिस्मिल्ला खां, विलायत खां, के० एल० सहगल तथा नन्दलाल, पंकज मलिक, रवीन्द्र नाथ ठाकुर आदि के थे। दो खाकी किट-बैग, सात जोड़े लम्बे ऊनी मोजे। बरसाती टोपी। मंहगे सिल्क के बीसों शाल, नये नोट इकतीस सौ रुपये के, रेजगारियां, नेपाल के दो नोट। दक्षिणावृत शंख, रुद्राक्ष की मालायें, तन्त्र साहित्य, धार्मिक साहित्य, एक ओमेगा तथा एक रोलेक्स घड़ी, एक सोने की अंगूठी में मूंगा जड़ा था। नेताजी पर बंगला में

तमाम पुस्तकें, उनकी छड़ी, सेकाई हेतु मैगनेट।

अभी मात्र एक चौथाई समान की ही जांच हुई है जो कल भी जारी रहेगी। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की मृत्यु का समाचार पाकर यहाँ सन्यासियों का आगमन शुरू हो गया है। सुरक्षा की दृष्टि से नगर में पुलिस की गतिविधियां तेज हो गयी है।

—o—

२ नवम्बर को फिर छपी खबर—

"फैजाबाद, १ नवम्बर। युवा नेता श्री अनिल तिवारी द्वारा नेताजी प्रकरण की रिपोर्ट पर रामभवन में आज भी शहर कोतवाल श्री ए० के० हिंगवासिया के नेतृत्व में पुलिस दल द्वारा सामानों को सूचीबद्ध किया जाना जारी रहा। इस मौके पर आज भी सर्वश्री सत्य नारायण सिंह 'सत्य', ओमप्रकाश मदान, अशोक टण्डन, अनिल तिवारी, रामप्रकाश सिंह, बी० एन० अरोड़ा, मदन मोहन पाण्डेय, अरविन्द सिंह आदि मौजूद थे।

सूचीबद्ध किये जा रहे सामानों में जहाँ विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण पुस्तकें मिली हैं वहीं पर नेता सुभाषचन्द्र बोस के माता–पिता के विभिन्न चित्र व पिता के साथ के फोटोग्राफ्स, विभिन्न पारिवारिक चित्र तथा २३ जनवरी के जन्मोत्सव से सम्बन्धित विभिन्न फोटोग्राफ्स कई चश्में, विदेशी दूरबीन, कलम, धार्मिक व तन्त्र साहित्य, स्वामी विवेकानन्द, परमहंस रामकृष्ण, माताजी के चित्र व नेताजी पर लिखे गये प्रकाशित साहित्य का अपार संग्रह, एक बहुत बड़ा तिरंगा झण्डा, आजाद हिन्द फौज की २५ वीं वर्षगांठ पर जारी फर्स्ट डे कवर टिकट संग्रह, खोसला आयोग से सम्बन्धित कागजात की प्रतियां व कई आभूषणों के खाली डिब्बे समाचार पत्रों की वे कतरनें जिनमें नेताजी से सम्बन्धित समाचार छपे हैं, सामानों में अन्यान्य पत्र जो नेताजी के जीवन से संबन्धित तथ्यों पर आधारित हैं, आदि प्राप्त हुए हैं।

आज १२ बक्सों के सामान सूचीबद्ध किये गये हैं, अभी लगभग ६–७ बक्से व अन्य बहुत से सामान सूचीबद्ध होने हैं। विस्तृत विवरण की प्रतीक्षा करें।"

पुलिस द्वारा तीसरे दिन सामानों का सूचीबद्ध करने की प्रक्रिया के बाद पुलिस ने अपने ताले लगा दिये, जिस पर एक साधारण अंगूठी की सील लगाकर एक दो गवाहों ने हस्ताक्षर बना दिये लेकिन जो कागज की सील लगी है वह कोई पुख्ता सील नहीं है! गुर्मों के गवाहों ने कमरे से बाहर निकलकर संयुक्तरूप से हस्ताक्षर करके एक बयान जारी किया, लेकिन अरविन्द सिंह ने इस बयान पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। बयान—

"हम अधोहस्ताक्षरीकर्त्ता जो कि रामभवन स्थित कथित गुमनामी बाबा उर्फ भगवनजी उर्फ स्वामीजी के निवास के दो कमरों में उपलब्ध सामानों, अभिलेखों, पुस्तकों, चित्रों, कपड़ों तथा अन्य सभी सामग्रियों को पुलिस दल द्वारा सूचीबद्ध किये जाते समय प्रथम दृष्टया निरीक्षण करने से इस मत के हैं कि वे सभी वस्तुयें नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से सम्बन्धित हो सकती हैं।

इसलिये इन परिस्थितियों में इस तथ्य पर स्पष्ट और अन्तिम निर्णय, निष्कर्ष तथा घोषणा हेतु हम उच्च स्तरीय न्यायिक जांच की मांग करते हैं।

सम्पूर्ण जांच एवं घोषणा तक हम ये भी मांग करते हैं कि सम्बन्धित समान यथावत् पूर्ण सुरक्षित रखा जाय। हस्ताक्षर—सत्य नारायण सिंह 'सत्य', मदन मोहन पाण्डेय एडवोकेट, अनिल तिवारी, रामप्रकाश सिंह, शक्ति सिंह, अजय प्रताप सिंह, डा० सत्येन्द्र त्रिपाठी, वी० एन० अरोड़ा, ओमप्रकाश मदान, एवं अशोक टण्डन।"

उसी दिन सायंकाल फिर एक जोरदार जनसभा चौक में हुई, जिसमें सूची के कई गवाहानों ने जनता के समक्ष सारे तथ्यों को उजागर करते हुये एक स्वर से उच्च न्यायिक जांच की मांग की!

—०—

पुलिस द्वारा तैयार पहले दिन की सूची के अंतिम पृष्ठ पर सब इन्सपेक्टर श्री हरिश्चन्द्र सिंह के अलावा गवाहान सर्वश्री सत्यनारायन सिंह 'सत्य', ओम प्रकाश मदान, अनिल तिवारी, राम प्रकाश सिंह, अरविन्द सिंह, वी० एन० अरोरा तथा अशोक टण्डन के हस्ताक्षर।

सामानों में मिले कुछ पत्र की फोटो प्रतिलिपि

মা

পরম পূজনীয় শ্রী শ্রী ঠাকুর,

আপনার ৮৭তম জন্মবার্ষিকীর এই পুণ্যতিথিতে আপনাকে আমার শতকোটি প্রণাম। [illegible]

[illegible]

उपरोक्त पत्र जो वहां मिला उसका हिन्दी अनुवाद—

मां

परम पूज्यनीय श्री श्री ठाकुर (बाबाजी महाराज)

आपके सत्तासीहवें जन्म वार्षिकी की इस पुण्य तिथि पर आपको मेरा शत-कोटि प्रमाण। मामाजी से यह सुनने को मिला कि गिर जाने से आपके घुटने पर

गहरी चोट लगी है । माँ जननी के आशिवाद से अब आप निश्चय ही निरोग हो रहे होंगे । आपके जन्मदिन के पुण्य-तिथि पर मेरा यानि आप ही के एक दीन सेवक का यह श्रद्धार्घ्य—

मां मेरी यह इच्छा है कि/अगर तुम पटरानी होती/तब तुम्हारा यह घर छोड़ने में/क्या डर था/उधर उस तालाब के किनारे/दियल पेड़ के बाड़ की तरफ/वह मानव कोई घोर जंगल के बीच में/जहाँ कोई नहीं है/उधर झाऊ की झाड़ी से तुम्हारे लिए/एक छोटी सी झोपड़ी बनायेंगे/सूखी हुई पत्ती बिछाकर/दोनों रहेंगे/बाघ—भालू बहुत हैं । लेकिन कोई तुम्हारे पास नहीं आयेगा । दिन और रात कमर कसकर रहेंगे हम पहरे पर ।

—०—

पत्र का पृष्ठ भाग—
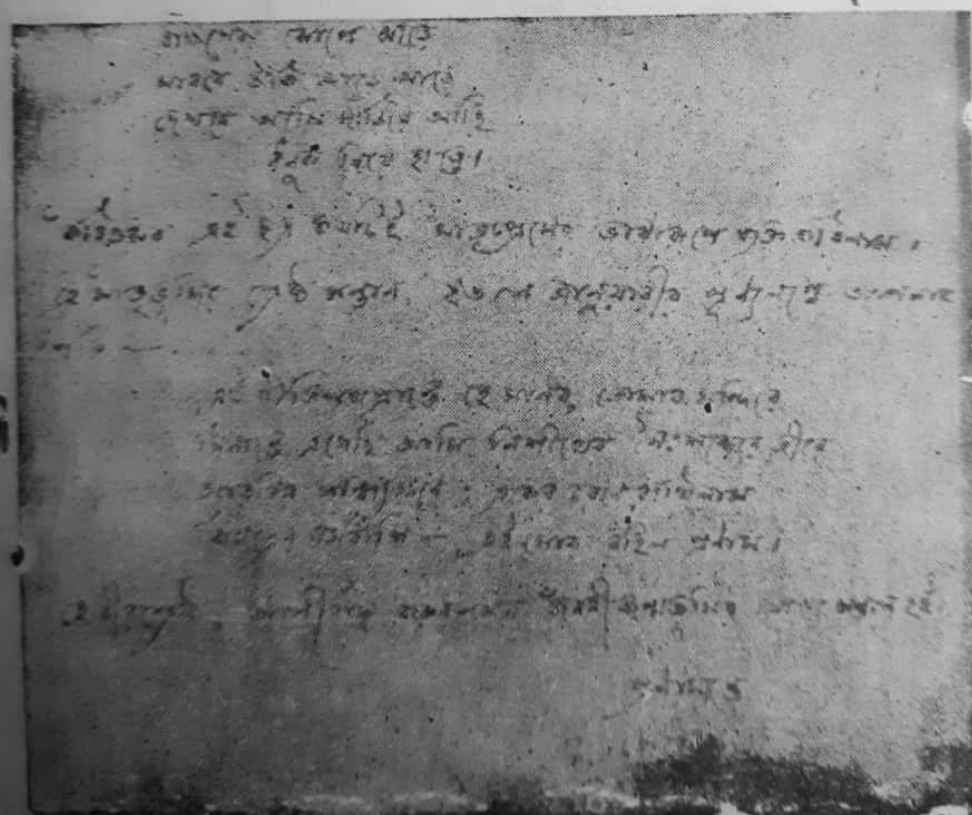
राक्षस लोग झाड़ी के/पीछे से देखेंगे कि/
हम खड़े है धनुष हाथ में लिये ।

कवि गुरु (रवीन्द्र नाथ ठाकुर) के उक्त कविताशं को मातृभूमि की भाषा में हमने व्यक्त किया।

हे मातृभूमि की श्रेष्ठ संतान २३ जनवरी की पुण्य-लग्न में आपके प्रति—

इस गाने के रास्ते के मानव तुम्हारे मन्दिर में
दिन के समाप्त होने पर आए हैं हम
निशीथ के निशब्द किनारे
आरती के संध्याकरण में, एक चरण में
वैचित्र्य की नर्म बांसुरी—यह मेरा रहा प्रणाम
हे वीर श्रेष्ठ—आशिवाद करें कि
जननी जन्मभूमि के लिये हम संतान रहें।

प्रणामंते
सेवक
जगदजि दास गुप्ता

—o—

कमरे में मिला एक एक्नालेजमेंट जो श्री स्वामीजी द्वारा अब्दुल गनी खां चौधरी, केन्द्रीय मन्त्री को भेजा गया !

ACKNOWLEDGEMENT

Abul Barkat Ataul
Gani Khan Chowdhury, Esqr.,
Union Cabinet Minister : New-Delhi

Rs.

........196

*Score out the matter not required.
†For insured articles only.

एक्नालेजमेंट का पृष्ठ भाग—जो डा० मिश्रा को भेजा है।

भारतीय डाक तार विभाग
INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT
भेजने वाले का पता Sender's address

SRISWAMI
c/o Raghunath Prasad Mishra. Esqr.
M. S.
Senior Surgeon, Dist. Hospital,
127/1, Jharkhandi
Dt. Faizabad (U.P.)

तारीख-मोहर
Date-stamp

I. P. P. M. Cal-1—SDP/L-604/Ptg. 24 dtd. 8-7-75—(1,00,000) Copies

—o—

সাধুদর্শন ও সৎপ্রসঙ্গ। ১৪শ খণ্ড।

পরমার্থ প্রসঙ্গে। ১৪শ খণ্ড।

শ্রীকৃষ্ণ প্রসঙ্গ

শ্রীশ্রী বিশুদ্ধানন্দ প্রসঙ্গ। ২য় খণ্ড।

বিবিধপ্রসঙ্গ। ১ খণ্ড।

শ্রীশ্রী মা আনন্দময়ী

एक कागज पर लिखी बंगला इबारत का हिन्दी अनुवाद—

साधू दर्शन और सत् प्रसंग /१८वां खण्ड/

परमार्थ प्रसंग में /१८वां खण्ड/

श्री कृष्ण प्रसंग
श्री श्री विशुद्धानन्द प्रसंग / द्वितीय खण्ड /
विजिज्ञासा / प्रथम खण्ड /
श्री श्री मां आनन्दमयी

—o—

बंगला में लिखा हुआ एक और पत्र–

पत्र का हिन्दी अनुवाद–

"श्री कनक चटर्जी

हावड़ा शैल मुखर्जी का दौहित्र (नाती)–

(शैलवास हावड़ा म्यूनिसपलिटी के चेयरमैन व हावड़ा के मशहूर परिवार से थे)

"श्री कनक चटर्जी–इन्हीं लोगों के–M/S.S.c.c. Films

वर्तमान में Subhash Chandra (बंगला) Films का

हिन्दी फिल्म बना रहे हैं

श्रीमान कनक चटर्जी–हम लोगों के (श्रीयुत लाहड़ी बाबा के)

हम लोगों के दल में एक आशा है! अच्छा लड़का है!

यह सब किताब खुद ही लाये थे श्रीमान कनक चटर्जी।

———

इसी के साथ 'दि टेलीग्राफ' (दैनिक अखबार में १९ मार्च १९८३) के अंक के एक पन्ने में सम्पादकीय भी भेज रहे हैं

"टेलीग्राफ"—दैनिक अंग्रेजी पत्रिका–आशा था–या निकल रहा है–"आनन्द बाजार पत्रिका का ही अखबार वर्तमान में आनन्द बाजार ग्रुप का दैनिक अंग्रेजी अखबार कहा जा सकता है।

पिछले दिनों की एक खबर नया करके छापा जा रहा है—वर्तमान में लोगों के लिये जानने योग्य यह खबर है। पुरानी बात–नोट भेज रहे हैं।"

—०—

यह पत्र कलकत्ता से २० जनवरी १९६४ को श्री सुनील दास ने भगवन उर्फ नेताजी को भेजा था। मूल पत्र अंग्रेजी में है। यहां उसका सारांश दिया जा रहा है।

"२० जनवरी १९६४ को मैं हेमन्त बोस से मिला। सुरेन्द्र मोहन घोष एम० पी० मेरे साथ मुख्यमन्त्री (सी० एम०) के कमरे में थे। प्रफुल्ल चन्द्र सेन सी० एम० थे। वे यह तय करना चाहते थे कि क्या गवर्नमेंट नेताजी के जन्मदिवस २३ जनवरी पर जलसों आदि पर लगे प्रतिबन्ध हटा सकती है या नहीं। मुख्यमन्त्री ने कहा कि सरकार अभी कोई रिस्क नहीं उठा सकती है। उन्होंने ढाका में हुए विर्सा हादसे का जिक्र किया और उठकर चले गये। हम लोगों ने श्री सुरेन्द्र मोहन घोष से मुलाकात किया और उनसे शौलमारी आश्रम में नेताजी के होने पर चर्चा किया। सुरेन्द्र मोहन घोष ने शौलमारी आश्रम के शारदानन्द से दो दिनों तक

चार घण्टे बात की।

सुरेन्द्र मोहन घोष शौलमारी जाने से पहले नेहरूजी, राजेन्द्र प्रसाद व मोरारजी देसाई से मिले थे। उन्होंने निम्न बातें बताईं "जब नेताजी की मृत्यु का समाचार प्रकाशित हुआ कि उनकी मृत्यु ताईहोकू के प्लेन क्रैश (विमान दुर्घटना) में हो गई, तो उसके बाद मुझे एक स्वप्न आया, जिसमें मुझे नेताजी दिखाई पड़े—तो मैंने उनसे पहला सवाल किया कि हैव यू फिक्स्ड अपआन योर एसलम ?" तब नेताजी ने मुझे प्यार से गले लगा लिया और मैं जग गया।" तब से वे (सुरेन्द्र (घोष मानते हैं कि नेताजी अब नहीं हैं। लेकिन विमान दुर्घटना से शौलमारी आश्रम की कहानी की तह में जाने पर वे मानने लगे हैं कि (१) नेताजी जीवित हैं (२) तथा वह कारण वे जाने गये हैं कि जिस कारण से नेताजी सामने नहीं आ रहे हैं?

इस बात को लेकर कि सभी वार क्रिमनल (युद्ध अपराधियों) की सूची से नेताजी का नाम काट दिया गया है क्योंकि ब्रिटिश सरकार तथा मित्र राष्ट्र ने यह मान लिया है कि नेताजी अब नहीं रहे। अब अगर नेताजी प्रकट होते हैं तो उन्हें मित्र राष्ट्रों की ओर से इम्पोजर करार दिया जायेगा।

वन कुड सी दैट ही वाज गोइंग आउट द माइंड आफ दी गवर्नमेंट आफ इण्डिया एन्ड नाट आफ दि एलाइड पावर्स। दैन टू अनडू दिस इम्प्रेसन।

सुरेन्द्र घोष ने शौलमारी जाने से पहले पं० नेहरूजी से अधिकार मांगा था कि यदि उन्हें विश्वास हो जाता है कि वही नेताजी हैं तो वे इस बात की घोषणा कर दें। ऐसा करने पर राजेन्द्र बाबू शौलमारी आश्रम दौड़ गये होते और मोरारजी देसाई, जो उस समय इंग्लैंड में थे, वे वहां की सरकार से बात करते, किन्तु श्री घोष इस विश्वास के साथ वापस लौट आये कि शौलमारी वाले बाबा शारदानंद सिलहट में रहे हैं और वे भिन्न व्यक्ति हैं।

श्री घोष की बातों से तीन बातें जाहिर होती हैं—

१—वो ये विश्वास करते हैं कि नेता जी जीवित हैं।

२—ही इज अलाइव टू दि प्रोबेब्लिटी आफ डिक्लेरिंग नेताजी ऐन इमपोस्टर अंडर सरटेन कोलिजेन्स सरकम्सटासेस इन दि ईवेन्ट आफ हिज रीएपियरेन्स।

३—ही इज आन दि अलर्टस टू रीच नेताजी इफ ही कुड ट्रेस हिस व्हेयर एबाउट्स। इट इज ए नोन फैक्ट दैट श्री सुरेन्द्र घोष फन्कशन्स एवी व्हेयर एन एजेन्ट आफ जे० एल० नेहरू।

—सुनील दास
२०-१-६४

—०—

'नये लोग' में ७ नवम्बर को छापी एक खबर—

विश्वासपात्र पण्डा रामकिशोर

फैजाबाद, ६ नवम्बर। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस उर्फ भगवनजी का पं० राम किशोर पण्डा को किसी अन्य से लिखा कर भेजा गया वह पत्र जिसमें भगवनजी ने २३ जनवरी (नेताजी के जन्मदिवस) के विशेष आयोजन पर उन्हें न आने की सलाह दी है किन्तु प्रेम भाव का प्रदर्शन करते हुए बाद में केवल श्रीपण्डा जी एवं उनकी पत्नी को ही उस विशेष आयोजन में सम्मिलित होने की अनुमति दे दी थी।

प्यारी यशोमती मइया, नन्द बाबा जी,

आशीर्वाद प्रेम प्यार, आप दोनों को इस दीन एकान्तवासी संन्यासी की।

उम्मीद करता हूँ आप लोग स्वस्थ चित्त में आनन्द में हैं।

विशेष रूप से यह बात कहने के लिये लिख रहा हूँ कि:

कुछ वजह से विशेष दिन में न आना ही, शायद, अच्छा होगा। अगरचे दिल ना माने, और केवल आना ही तो सिर्फ आप दोनों ही — याने प्यारी यशोमती मइया और नन्द बाबा, सिर्फ ये यही दोनों, और कोई भी नहीं आ सकते हैं।

प्रेम प्यार आशीर्वाद स्वामी दिल की

[illegible]

प्यारी श्रीमती यशोमती मइया, नन्द बाबा

श्रीमती यशोमती मइया, पण्डा रामकिशोर जी [illegible],
स्वर्गद्वार, श्री अयोध्यापुरी,
अयोध्या यू. पी.

—०—

गुमनामी बाबा के एक भक्त श्री आर० एन० शुक्ला के नाम उनके भतीजे द्वारा भेजा गया अन्तर्देशीय पत्र का पूरा पाठ -

Jamshedpur
24-6-84

"आदरणीय चाचाजी,

सादर चरण स्पर्श,

कुछ तो भगवान की दया से एवं कुछ आप सब की कृपा से हम लोग २२ तारीख की सुबह सात बजे Tatanagar स्टेशन पर पहुंच गये थे। स्टेशन पर हम एवं भैया जब टैक्सी लेने गये थे तभी प्लेटफार्म पर पापा की मुलाकात मम्मी से हो गई थी, तथा तब हम सभी आराम से घर पहुंच गये। हम लोग यहां पूर्ण कुशलता से हैं तथा भगवान से आप सब की कुशलता मनाया करते हैं। यहां हम लोगों का परीक्षाफल शायद 27 June तक निकल जाय। बहरहाल Result निकलने पर उसकी सूचना हम लोग आपको दे देंगे।

इधर २३ तारीख को आपके कहे मुताबिक मैं अपने उसी दोस्त के यहां उस सम्बन्ध मे जानने के लिए गया किन्तु मेरा दोस्त इस वक्त पटना गया हुआ है, फिर भी बात हुई। बात मे मैं उसके पिताजी से उस सम्बन्ध में काफी कुछ मालूम किया जिसका की उन्हे थोड़ा भी संदेह नहीं हुआ। हालांकि वो अखबार उन्होंने बहुत खोजा था किंतु नहीं मिला। फिर भी उन्होंने बताया की वो जुलूस २८ नवम्बर एवं २९ नवम्बर १९८३ को निकला था जिसमें ४००० आदमी भाग लिये थे, इसमें वो भी शामिल थे। उन्होंने बताया की इस जुलूस का मुख्य उद्देश्य लोगों के मन में सिर्फ (नेताजी) के लिए प्रेम एवं सद्भावना भरना था तथा उन्हें ये विश्वास दिलाना था कि नेताजी अभी जिन्दा हैं तथा वो हिमालय की कन्दराओं में तपस्यारत होकर काफी सिद्ध पुरुष हो गये हैं, तथा वे कुछ ही समय में बाहर प्रकाश में आकर गरीबों की सेवा करेंगे तथा देश की वर्तमान समस्याओं का समाधान करेंगे। उस अखबार में उनका एक बड़ा सा फोटो था तथा उनके अच्छे कामों की प्रशंसा एवं उनके योग शक्ति का वर्णन था। इसके बावजूद जनता के प्रति उनके अच्छे-२ संदेश थे। इस जुलूस में करीब एक हजार बंगाली सम्मिलित थे बाकी सभी बिहारी हिन्दू ही थे।

इसी तरह की जानकारी हमें उनसे प्राप्त हुई जो कि ऊपर पूर्णतः वर्णित है। चाचाजी यहां आ जाने के बाद भी सबको वहां की याद आ रही है, खासकर वन्दना की वो प्यारी-प्यारी तोतली बोलियों का जिक्र ज्यादा होता है। चाचाजी आप सब मेरी गलतियों को छोटा समझकर माफ कर दीजियेगा।

चाचीजी को मेरा चरण स्पर्श कहियेगा तथा वन्दना को मेरा प्यार। बाकी सब ठीक है शायद जुलाई मे हम सब वहां कालेज के चक्कर में आए। बहरहाल आप पत्रोत्तर शीघ्र दीजियेगा।

आपका भतीजा
शैलेन्द्र

"श्री सरस्वती विद्या शोधपीठ"
चौधरी भवन
इटावा।
१६-१०-७९

आत्मस्वरूप मेरे भगवन !

साष्टांग प्रणाम।

आपके निर्देशन अनुसार इटावा — — — — — — — — अमावस को ही आ गया। यहां पर बनारस के डा० अष्ट भुजा प्रसादजी पाण्डे जो तन्त्र और मन्त्र शास्त्र के अच्छे विद्वान हैं दिल्ली राजनारायणजी के पास गये थे। अपने लोगों के कार्य के लिये पैसा जुटाने परन्तु वे घोर निराश होकर लौटे और घर पर — — — — मिल तब महाकाल को — — — — करने के लिये और आपको ब्रह्म ऋषि पद मिलकर राष्ट्र उद्धार के लिये प्रगट होने के लिए — — — — —"

—o—

पत्रांश–२ का पाठ—

"पैर में चोट आ गई थी, पर अभी ठीक नहीं हुई है और बुखार आने लगा है मैं यहां पूर्णिमा ४ नवम्बर तक रहूंगा। आपने राजघराने के पते पूछे थे जो विश्व हिन्दू परिषद से सम्बन्धित १. राजमाता सैन्धिया—जयबिलास पैलेस ग्वालियर, (२) महाराणा उदय सिंह राजमहल उदयपुर, (३) राजमाता गायत्री देवी राजमहल जैपुर, (४) काशीराज विभूतिनरायन सिंहजी–राजाप्रसाद रामनगर, वाराणसी।

हमारा पता है c/o Dr Satya Pal Bagga, Manjeet Manjan, Keralaya, Etawah. हमने डा० को बता दिया है कोई पत्र अथवा तार आवे सीधे मुझे देना—मेरा स्वास्थ्य ठीक हुआ और बाहर गया सो ही "साकेत" लेकर आपकी सेवा में भेजूंगा। मैं नहीं जानता मेरी सेवा राष्ट्रमाता के चरणों में कब से"

—o—

पत्रांश—३

उपरोक्त पत्रांश–३ में लिखा है—

"प्रयोग नवरात्रि भर — — — — फिर भगवती — — — के क्षेत्र केला देवी, मथुरा में करने के बाद दतिया पीठ के स्वामीजी का निधन हो गया है वहां जाकर उनकी प्रतिष्ठा पीताम्बरी और धूमावती के प्रयोग करने के बाद

आपको ब्रह्म ऋषि पद मिल गया है और अतिशीघ्र आपको राष्ट्र निर्माण के लिये जगत में प्रगट किया जायेगा, और आपके ही शासन में इस — — के प्रसार प्रचार — — — बन सकेंगे ।

कल पाण्डेजी बनारस चले गये और दिल्ली जो दो व्यक्ति बहुगुनाजी और चौधरी साहब के पास गये, वे भी नहीं लौटे, उन्हें सफलता ही नहीं मिली। — — — — — इन दिनों घोर आर्थिक संकट में फिर फंस गया हूं । इसी कारण बाहर से — — — —साकेत नहीं ला सका और इस अनुष्ठान में ८०० रु० और उधार लेकर लगाए हैं परन्तु मुझे पूर्ण संतोष है हमारे भिखमंगा बाबा का मार्ग साफ हो गया और ब्रह्म ऋषि का सर्वोच्च पद मिल गया ।"

—०—

पत्रांश ४—

पत्रांश–४ का मूलपाठ

और कहां पर होंगे । इधर स्वास्थ्य शिथल हो रहा है । राष्ट्र चिन्ह निर्माण

के लिये बड़ी — — — — कैसे बना पाऊंगा। अब सब आप ही जाने प्रभो

आपका दीना विदीन
सेवक
ह०-सुरेन्द्र चौधरी

"भरत की तरह एक-एक घड़ी की प्रतीक्षा कर रहा हूं।"

—०—

पुलिस द्वारा तैयार सूची

चित्र में गुमनामी बाबा के निवास स्थान (राम भवन) में गवाहों को अन्दर प्रवेश कराते हुये सब इन्सपेक्टर श्री हरिशचन्द्र सिंह !

बायें से-सर्व श्री सत्य नारायण सिंह 'सत्य' अनिल तिवारी, राम प्रकाश सिंह, रामप्रकाश मदान व मदन मोहन पाण्डेय !

कई दिनों के प्रयास के बाद राम प्रकाश सिंह ने पुलिस द्वारा दी गई सूची की कार्बन कापी की फोटोस्टेट कापी मुझे दी ! देखें सूची क्या कहती है—

फर्द लावारिस सामान संदिग्ध बाबा

आज दिनांक ३१-१०-८५ को मैं एस० आई० हरिशचन्द्र सिंह हस्त आदेश एस० एस० पी० महोदय एस० टी०/सी० २२/१९८५ दिनांक ३० अक्तूबर १९८५ के जांच के सिलसिले में मोहल्ला सिविल लाइन मकान स्थित रामभवन परिसर पहुंचकर समक्ष गवाहान सर्वश्री सत्यनारायन सिंह पुत्र श्री योजन सिंह आर/ओ दिल्ली दरवाजा व श्री ओमप्रकाश मदान पुत्र श्री सूगरमल निवासी खवासपुरा, अशोक टण्डन पुत्र नानक चन्द टण्डन निवासी लक्ष्मणपुरी कालोनी, विश्वम्भरनाथ अरोड़ा पुत्र स्व० श्री अमरनाथ अरोड़ा १२, लक्ष्मणपुरी कालोनी, अनिल तिवारी पुत्र श्री रामप्रताप तिवारी निवासी वीर सावरकर नगर झारखण्डी, रामप्रकाश सिंह पुत्र रामाज्ञा सिंह २१३ महाजनी टोला, अरविन्दसिंह पुत्र श्री रामबचनसिंह २/७/३३ अंजना निवास बालकराम कालोनी के समक्ष संदिग्ध बाबा स्थित रामभवन के किराये के मकान में लगे तीन ताले को खुलवाने हेतु डा० श्री रघुनाथ प्रसाद मिश्र रिटायर्ड सर्जन जिला अस्पताल फैजाबाद व हाल पता मो० झारखण्डी व डा० पी० बनर्जी पुत्र टी०सी०बनर्जी मो० रिकाबगज थाना कोतवाली जिला फैजाबाद व सेविका माताजी श्रीमती सरस्वती शुक्ला निवासी जनपद बस्ती को बुलाकर कमरे के तीनों ताले खुलवाये गये। कमरे के अन्दर समग्त लावारिस वस्तु का समक्ष समस्त गवाहान उपरोक्त विवरण अंकित किया जा रहा है।

विवरण सामान—

१ नीले रंग के झोले में माला तुलसी की पुरानी इस्तेमाली
२ सिल्क के दो शाल नये खादी
३ तीन साड़ी हैंडलूम की नई
४ गमछा सफेद नया एक
५ सिल्क चादर नया एक
६ दो चादर नये बिछाने के
७ ऊनी शाल नीला व खादी दो नये
८ एक तौलिया नई
९ रजि० पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय पत्रकार्ड ५ पैसे, १० पैसे के टिकट व डा० मिश्रा के कुछ पत्र, मिले। जिस पर······लिखा है, हवाई अन्तर्देशीय पत्र।
१० एकनालेजमेन्ट अब्दुल बरकत उल्ला गनी खान कैबिनेट मिनिस्टर नई दिल्ली प्रेषक डा० रघुनाथ प्रसाद मिश्र वास्ते स्वामीजी।
११ अन्तर्देशीय बंगला में व एक लिस्ट बंगला में किताबों की कलकत्ता से।
१२ लिस्ट जिसमें कपड़ा, घी, मिठाई भेजने की कलकत्ता से।
१३ रजि० लेटर सुनील गुप्ता, ३८······एच०पी०आर० स्ट्रीट बैंक,······कलकत्ता।

१४ एक लिफाफे के अन्दर पत्र इटावा के राजा साहब का भेजा —श्रीमंत स्वामी जी, राम किशोर पण्डाजी स्वर्गद्वार अयोध्या श्री सरस्वती विद्या शोधपीठ, चौधरी भवन इटावा वर्ष १९७९ एव अन्य तमाम पत्र, तार व पत्र बहुत से

१५ एक पत्र डा० पी० एम० राय दमदम पार्क ७०००५५ पत्र लिखा था डा० मिश्रा के लिए ।

१६ पेपर कटिंग 'हेडिंग' नेताजी कहां है ।' तीन स्थान पर अंडर लाइन जयपुर १९ अगस्त वार्ता एक वयोवृद्ध स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी आचार्य नन्दलाल शर्मा जिन्होंने उच्च न्यायालय में एक रिट के माध्यम से चाहा है कि इस मामले की जांच हो। आचार्य शर्मा ने अपने रिट की पुष्टि में कल उच्च न्यायालय को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की डायरी के कुछ भाग पेश किये ।

१७ एक पत्र राजकुमार का स्वामीजी से ५ हजार रुपया आर्थिक मदद हेतु ।

१८ पंपलेट सुभाषचन्द्र इन हिंदी तथा कमेंट पेपर पर जिस पर बंगला में लिखा गया है कि मुझे ताज्जुब है कि यह फिलम हिंदी में कैसे रूपांतरित की गई।

१९ कापी आफ डियो नं० १६–१६/८२ Phi/Dated दिनांक १६-३-८२……

२० पत्र जिसमें ८७वीं जन्म वार्षिकी पर जगजीत दास गुप्तो द्वारा लिखित हे भाव भूमि के श्रेष्ठ संतान २३ जनवरी की पूर्ण लग्न में आपके प्रति हे बीर श्रेष्ठ आशिर्वाद दीजिए जिससे मैं जननी जन्मभूमि की श्रेष्ठ संतान बन सकूं ।

२१ एक कंबल लिहाफ लगा ।

२२ एक बक्सा पीला टिन–मच्छरदानी हरे रंग एक, एक अदद बनियान नारंगी रंग, एक पोटली में करीब आधा कि० रेजगारी तकिया का गिलाफ एक, स्वेटर एक अदद, ऊनी हाफ, चड्डी एक अदद, चुनरी गमछा, एक टोपा ऊनी, एकबनियाइन एक बंडल, गमछा एक, कपड़ा मलमल एक बंडल नया, कमीज सिलकन नई, ऊनी कमीज एक, गमछा एक, सफेद कपड़ा मलमल एक बंडल, तकिया का गिलाफ तीन नया ।

२३ एक हीटर बजाज का, लाइट दो अदद विदेशी, पुरानी डायरी, एक भगवतगीता दुर्गा सप्तसती, कैप रेलवे २, सादे पैड दो, अन्तर्देशीय तारों का फार्म, एक पुरानी डायरी जिसमें कुछ पत्र पड़े है। दुर्गा सम्बन्धी कुछ पुस्तके, ……… एव संस्कृत, एक एशिया का एटलस ।

२४ टीन का छोटा दूसरा बक्स, लिफाफे, तीन बंडल सादा अन्तर्देशीय पत्र, वायु द्वारा भेजे जाने वाले पत्र व कुछ लिफाफे, रेक्सीन के पर्स में एक फाइल

जिसमें कुछ सादे लिफाफे व हिन्दी लिखित कागजात, एक बंडल एअर मेल पत्र, अन्तर्देशीय तारों की एक पुस्तिका, लेटर पैड ३ सादे, पालीथीन में स्टेशनरी का सामान, एक काला डिबिया जिन कोड डायरी।

२५ एक कार्टन पुरानी दवाएं अगरबत्तियाँ, खाली शीशी।

२६ एक अदद काला बेग एक छोटे बक्से में माला रुद्राक्ष, एक साबुन केस, शीशियां दवाइयां

२७ दो बैग नये

२८ जापान के बने तीन टेप स्पूल तथा १७ रिकार्डस एक लकड़ी के छोटे बक्से में

२९ दूसरा टीन का छोटा बक्स, दो टिन ब्रुश, एक टेप, १७ बड़े तथा ८ छोटे रिकार्डस, एक कटिंगलीड

३० रिकार्ड प्लेयर एच० एम० वी० का एक अदद

३१ एक स्पूल टेप रिकार्ड हालैंड का व एक रिकार्ड प्लेयर एच० एम० वी० का नया एक छोटे काठ के बक्से में

३२ एक बक्से में छोटे दस तो बड़े रेकार्डस जिसमें एक 'दि ट्रीब्यूट आफ काजी नजरूल इस्लाम', दि वायस आफ रवीन्द्रनाथ

३३ एक बक्से में ·········छोटे रिकार्डस १३ रिकार्ड्स बड़े

३४ एक बक्से में एक ट्रे, एक रबर, एक केतली, मोम टाइप चकला एक, दो आइस कैप

३५ बड़े बक्से में ८ तकिया का गिलाफ, लिहाफ दो, दो किट बैग, खाकी पैंट, खाकी व आसमानी हाफ शर्ट, ४ लिहाफ कवर सफेद, ७ पीस सफेद कपड़े, एक ऊनीशाल, एक पैकेट में सिलकन कपड़े, एक ऊलनशाल, एक लाल कपड़ा तकिये का गिलाफ केसरिया रंग २, एक खाकी बरसाती, एक पीला किट बैग, एक पैकेट में सात जोड़ ऊनी मोजे, तौलिया बड़ी एक,·········· एक बड़ी बनियान २ ········ टुकड़ा मलमल का कपड़ा······· , दस्ताने चड्ढी एक, तौलिया दो, टोपा एक, एक बरसाती ······एक सिलाकन, एक शाल ऊनी, एक गिलाफ, बनियान एक, पीस मलमल, चड्ढी एक, एक गमछा सिलकन, ५ पीस गमछा, एक कमीज सिलकन, तीन सिलकन कमीज, लाल झंडा एक।

३६ पी० एम० राय द्वारा कलकत्ता से आया पार्सल जिसमें वीक एण्ड टेजी······ २३ मार्च १९८३ का अखबार तथा १३ बंगला पुस्तकें तथा एक अंग्रेजी पुस्तक, एक बंगला मैगजीन,

३८ एक बड़ा बक्स में एक छोटा रेक्सीन, बड़ा बक्स जिसमें नाश्ते में प्रयोग में आने वाले कप्स, चाकू, टिफिन, रूमाल आदि हैं, ५ बंगला साहित्य

... ... पुस्तक, मीडियम ... ... बंगला ५, जेल में तीस वर्ष, यौन रोग और उनकी प्रामाणिक चिकित्सा, अंग्रेजी पुस्तक ९ अदद, बुलेटिन आफ दि नेताजी रिसर्च ब्यूरो जनवरी अंक १९६६, नेहरू.........
Fattal Fraindship ... छोटी पुस्तकें ......Nahru's Fraindship 1955 राष्ट्रधर्म की पत्रिका हिन्दी की, तीन पुस्तकें...

एक छाता, एक कंबल, लाल रंग का तौलिया, एक कंबल लिहाफ लगा चादर सिलकन, ३ बेड सीट, एक स्वेटर एक ऊनी, स्टोव के पुर्जे एक डिब्बा टीकोजी, एक बंडल डायरी २ सादी, चश्मा गोल शीशे का, एक मैरेज ग्रीटिंग स्पेन की एक डिब्बा बनियान, एक पीस कपड़ा, एक पुरानी पीतल की थाली

३९ एक बक्सा बड़ा जिसमें तीन बनियान, दो चड्ढी गेरुआ रंग, चादर एक, साबुन, तेल सेल सेंट आदि ऊलन टोपी मोजा मलमल कपड़ा अंगोछा २ शर्ट सिला हुआ, किताबें बंगला में चार, जिसमें दो पर सुभाषचन्द्र बोस के फोटो बने हैं ।

४० बक्सा सफेद स्टील में, ५ ऊलेन कपड़ा, दो वडल कपड़ा एक दाब लोहे का व एक चाकू, कुल्हाड़ी एक, कैंची एक, हथौड़ी पहुपूल, खुर्पा बंगला पुस्तकें दस एक रीडर्स डाईजेस्ट जून ८४,

४१ दस के नोटों की एक गड्डी न० ७८११०१,दो की गड्डी ५ अदद एक–एक रुपयों के नोटों की ४ गड्डी, नेपाल राष्ट्र बैंक के.........एक के दो अदद नोट, एक छोटा थैला, एक दक्षिण वृत शंख, एक चन्दन लकड़ी, एक शीशे का मुसम्मो ... ...सभी नोट नई गड्डियां हैं। बैंक स्लिप नहीं हैं ।

४२ एक अलमुनियम का बक्सा छोटा जिसमें एक अदद अंगूठी सोने की जिसमें मूंगा लगा है, घड़ी एक अदद ओमेगा व एक अदद घड़ी रोलेक्स व घड़ी पाकेट पुरानी स्विस मेड ....मीटर तथा ५ के नोटों की एक नई गड्डिया जिस पर बैंक की स्लिप नहीं है तथा दो के पचास नये नोट ।

इस समय नावक्त हो गया है अतः आगे की कार्यवाही यहीं स्थगित की जाती है। उपरोक्त समस्त व्यक्तियों को पढ़कर सुनाया गया। सुनकर तस्दीक करने के बाद सबने अपना–अपना अलामात बनवाई। उक्त कमरे में सभी सामानों की लिस्ट बनाने के बाद उन्हीं स्थानों पर सुरक्षित रख दिया गया। उक्त कमरे में दो ताले लगाकर जिसे उपरोक्त गवाहों को दिखाया गया।

ह० हरिश्चन्द्र सिंह, अशोक टण्डन, राम प्रकाश सिंह, ओम प्रकाश मदान, सत्य नारायण सिंह, अनिल तिवारी, बी. एन. अरोड़ा, अरविन्द सिंह ।

फर्द लावारिस संदिग्ध बाबा

दिनांक १-११-८५ को पुलिस द्वारा रामभवन में संदिग्ध बाबा के सामानों की तैयार की गयी सूची—

विवरण सामान

१ एक बक्से में एक ऊलन कंटोप कत्थई रंग, चड्ढी १०४० नम्बर की ५ पीस मलमल सफेद, एक चादर, तीन धोती मर्दाना, स्वेटर दो ३८ नं०, ब्लाउज पीस रूबिया १० व रंग लाल, दो तौलिया, ऊनी शाल एक, आसनी १, रबड़ की थैली १, धोती सफेद, मलमल दो, गमछा ५ अदद, एक बेडशीट, एक गिलाफ, मोजा ११ नम्बर, १ जोड़ा पेटीकोट १० अदद, ४ चड्ढी ४० नं० बनियाइन चार ३८ नं०, एक किताब होम्योपैथिक।

२ एक तख्त काठ का जिस पर दो अदद गद्दे, एक ऊनी चादर, दरी दो अदद, एक कालीन, एक बेडशीट, एक चादर सफेद, एक पीस सिल्क ······

३ एक लकड़ी के बक्से में होम्योपैथिक दवाएं।

४ एक बक्से में तीन शील ब्रांडी की शीशी, ४ शीशी शलोन, एक······बंगला में, जिसमेंएक लिफाफा जिसमें एक नोट १०० रु० की, एक नोट ५० रु० की, तीन नोट १० के, ५ नोट, ४ नोट ५ के, ५ नोट २ के कुल २९० रु० शेष दवा ब्रासों तथा अन्य तमाम पुरानी दवाएं।

५ एक पत्र आदरणीय भगवानजी को आपकी···द्वारा, एक पत्र अंग्रेजी में डा. पी. राय स्वामीजी C/O आर० पी० मिश्र, एक अन्तर्देशीय पत्र अंग्रेजी में डा० प्रधान कानपुर द्वारा लिखा गया।

६ भविष्य अखबार की वर्ष १९३१ की पुरानी प्रतियां जो इलाहाबाद से प्रकाशित होती है ६ अदद २ पेपर युगान्तर बंगला में द पायनियर सनडे मैगजीन २० जनवरी १९८५, अंग्रेजी में एक पत्रिका बंगाली में एक अखबार, बंगला में वर्तमान समाचार दिनांक २३ जनवरी, एक लिफाफे में कुछ टेलीग्राम कुछ अन्तर्देशीय पत्र ग्रेजुएट पत्रिका फरवरी१९८५एक पत्रिका अंग्रेजी में एस्ट्रोलोजी पाइनियर के पेपर की गड्डी दो पचांग बंगाली में १२ पत्रिका बंगला में, १४ पत्रिका इंगलिश में, इंगलिश में तीन पत्रिका सादे पैड२बड़े एक छोटा चार बंडल पत्रिका हिन्दी,एक बंडल धार्मिक किताबे,एकपुरानाबड़ा रेडियो फिलिप्स, आलमारी में दवायें और शीशियां पूजा के स्थान पर काली मां की तस्वीर, जरीकेन,

चड्ढी दो शीशी में अस्थि अवशेष, ५ रु०की एक नोट, मजीरा, एक शीशी जल, एक गिलास एक इंची टेप, एक लोहे का टुकड़ा, कैंची एक टीन का डिब्बा ।

(कमरा नं० २)

१ एक बक्से में पांच डिब्बे टुब को इसमें छोटा मोटा सामान रोजमर्रा प्रयोग के लिए हैं एक चादर, २ जर्दा के डिब्बे- एक पैड, २७ इंगलिश की किताब छोटी बड़ी, बंगाली की किताबें ११, बंगाली में ५ किताबें, इंगलिश की १० किताबें छोटी किताबे, १८ हिन्दी, ६ प्लास्टिक के कवर में मढ़े हुये बैक स्टैण्ड लगे हुये नेताजी सुभाष चन्द्रबोस के बिभिन्न अवस्थाओं के एवं उनके माता–पिता के फोटो (पुरानी), एक फोटो ग्राफ प्लास्टिक में मढ़ा बैक स्टैण्ड लगा छोटा किसी परिवार का चित्र है। जिस पर सबसे नीचे अंकित है। जानकीनाथ विथ हिज फेमिली (सुभाष चन्द्र आन एक्सट्रीम राइट) ११ अन्य फोटोग्राफस, २ छपे हुये पन्ने वर्ड पीस जय नेताजी, प्लास्टिक में मढ़ी स्वामी रामकृष्ण परमहंस एवं स्वामी विवेकानन्द की कुल ५ फोटो, ३ बंगाली किताबें बंगला भाषा में लिखी एक कापी जिसमें कुछ लिखी तथा सादी, ११ जून १९४७ का संदेश अखबार एक कापी जिसमें... लाल स्याही से लिखी, २६ सितम्बर १९४७ का उजाला अखबार, एक कापी संस्कृत में लिखी।

२ एक बक्से में एक जोड़ बाटा के काले लकड़ी के सैन्डिल, एक जोड़ स्लीपर ब्राऊन एक जोड़ जूते वाटरप्रूफ छोटे काले, एक माला व एक सुमरनी की थैली कपड़े की, एक टिफिन एलमोनियम, नीला सन ब्रान्ड, एक स्ट्रोब रंग काली, एक राष्ट्रीय ध्वज मय डोरी, एक आसनी ऊठन व रंगसफेद कढ़ाईदार पेन स्टैन्ड, एक बगैर कलम का दो होल्डर निब लगे, दो पेपर कटिंग पैड, एक पैड पेपर कटिंग वर्ष १९६२ लखीमपुर खीरी से लिखे पत्र व एक नक्शा वाराणसी का, लाल कपड़ा एक गेरुआ खोल एक–एक मोटा सफेद चादर २, एक मच्छरदानी नीले रंग की, चार इंगलिश किताबें एक हिन्दी किताबें, एक धार्मिक किताब हिन्दी में, एक बन्द पैकेट में कुछ पत्र व एक पोर्ट फोलियो रैक्सीन जिसमें एक कापी जिसमें संस्कृत में लिखा हुआ है, एक लिफाफा जिसमें ७ छोटे फोटोग्रापस, एक संसद सदस्य का १९६७का बंगला मे पत्र, आजाद हिंद सरकार की २५वी वर्षगांठ व नेताजी के जन्म दिन पर जारी.........सरकार डाक विभाग फस्टं–कटर की गड्डी कटिंग से भरी एक बैग, चिट्ठियों से भराएक पैड, एक टाइप शुदा पत्र, अमल राय बिरला धर्मशाला अयोध्या द्वारा प्रेषित जिसमें श्रीमती सरस्वती देवी एवं भगवन के स्थान परिवर्तन के सम्बन्ध में टाइप है। पांच पत्र हिन्दी अंग्रेजी में, एक पत्र अंग्रेजी में जो एक लिफाफे में है।

३ कमला बस्स पंचकोटा बंगाल द्वारा श्री मन्त स्वामीजी को छपा हुआ भेजा

तारीखी १३-६-४५ को जो चर्म रोगों का इलाज करती है एक छपी किताब लीकोडर्मा व लिप्रोसी के सम्बन्ध में, अंग्रेजी व हिन्दी के पेपर व हिन्दी व अंग्रेजी में व बंगला भाषा में एक रेडियो जिनी बंगला डाक से अनेकों तार पत्र व अंग्रेजी के पत्र व पेपर कटिंग, तीन पेपर कार्ड के पैकेट, एक बन्डल पेपर कटिंग, आठ पुस्तकें बंगला में, ३ पुस्तकें बंगला में, बंगाली भाषा की ६ किताबें, २ इंगलिश के किताबें, चार हिन्दी पत्रिका, इंगलिश की दो पत्रिका, एक किताब, इंगलिश, हिन्दी व बंगला में पत्रिकायें, बन्डल विभिन्न भाषा में पत्र व पेपर कटिंग, जो एक लकड़ी के बक्से में हैं।

४- लकड़ी के एक बक्से में विभिन्न धर्मग्रन्थ, मैगजीन, छोटी-बड़ी पुस्तकें, काफी तादाद में भरी हैं। ब्रिटिश टेक ओवर आफ इण्डिया हिंदी से डा० के० पी० अग्रवाल का एक लेख ८१ अंकों में प्रकाशित किया कटिंग एक बन्डल फाइल कवर के साथ ६ पत्र दुर्गाप्रसाद एडवोकेट बस्ती का लिखा हुआ व दो जवाब की एक कापी।

पृष्ठ —४—

५- एक बक्से में (टीन) विविध प्रकार तथा भाषाओं में बहुत सी पुस्तकें।

६- एक बक्से में एक बनियान गेरुआ रंग, रेशमी सिल्क चादर गेरुआ कलर, बनियान गेरुआ कलर २, एक शिल्क गेरुआ कलर साड़ी,...सूती तीन एक थान......, ३ शर्ट शिल्क, दो बनियान सिल्क नाइलान, दो शिल्क के कपड़—एक ......क्रीम कलर, शिल्क शाल एक ऊनी बनियान एक, एक शिल्क मोटा कपड़ा, एक दास्ताना चमड़े का, एक कुर्ता गेरुआ, एक गेरुआ, एक अंगोछा गेरुआ, एक गेरुआ और काला तहमद, एक रुई का बन्डल।

७- एक बक्से में किताबें इंगलिश व बंगला में तमाम भरा हुआ बक्सा व एक डिब्बे में सुई तागा बटन।

८- एक बक्से में किताबें बंगला भाषा इंगलिश में बक्सा भरा हुआ।

९- खोसला जांच आयोग से सम्बन्धित नेताजी के सम्बन्ध में कागजात बयान दुर्जन नाथ बोस १९७७, बंडल अखबारों की कटिंग, किताबें इंगलिश, बंगला म बहुत सी, जिला २४ परगना के एडवोकेट, कमिशनर ने सुरेश चन्द्र बोस को २४ परगना के जिला जज के सामने १७ अगस्त को उपस्थित होने के सिलसिले में सम्मन कमीशन कोर्ट की इन्क्वारी में गवनहान के जवाब सवाल अंग्रेजी में ४० पेज जी० डी० खोसला की रिपोर्ट, कुछ फोटोग्राफ्स नेताजी के जन्मोत्सव के सम्बन्ध में, पेपर कटिंग के चार बण्डल, एक पत्रों का बण्डल।

१०- पाइप ४ पीने के चुर्ट, कलम एक, एक पैकेट, रुद्राक्ष व तुलसी की माला, लकड़ी

चन्दन की, २ शीशा बड़ा, एक डिब्बा प्रसाधन सामग्री, पेट्रोमैक्स, चम्मच २–स्फटिक की माला, अगरबत्ती चन्दन ५ — — — आदि, कछली २ अदद, एक चश्मा धूप का पुराना जिसका प्लास्टिक फ्रेम जीर्ण—शीर्ण हालत पर छूने पर टूट रहा है। ६ अदद चश्में — — फ्रेम के अण्डाकार — — चेरी बूट पालिश, एक गोदरेज ताला — — — — प्लास्टिक का पैकेट चार रिफिल पारकर की लाल धागा एक डिब्बा, एक पैकेट रुद्राक्ष माला ब्यूटी कुटा साबुन २ पैकेट, पूजा का इत्र, — — —एक पैकेट — — — टिकोजी— — — एक, एक पैकेट में ब्रस एक चश्मा धूप एक सेविंग रेजर व ब्लेड – एक पैकेट – —व तार वगैरह प्लास्टिक सीट एक पैकेट एक पैकेट में ५ ब्रस एक – – की टोपी, एक पैकेट में इत्र, एक टार्च एवरेडी नई, एक दाढ़ी बनाने की मशीन – एक बण्डल, एक चन्दन एक धातु की डिब्बी ऊपरी— – गुलाबी रंग का नग लगा हुआ है तथा जिसपर एक – – –लिखा है,– –एक पैकेट में ६ रिकार्ड क्लीनर, माला – – – पूजा सामग्री एक बंडल, एक डिब्बे में सुई तागा तीन जेवर रखने के डिब्बे छोटे-बड़े एक आलमोनियम के डिब्बे में राख दो पेचकस एक – -- एक चिमटी आदि रखने का डिब्बा एक – — छोटी बैट्री एक पैकेट, कील का एक डिब्बा, कुनेन की गोली ३ पैकेट, एक टेप के दो एक मैप पी० एम० राय के मकान का।

११ एक बक्से में दुरबीन Lensollelt Wetzlar जिसके ऊपरी लेदर कवर पर अंकित है, एक टाइप टाइटर मेड इन इंग्लैंड काले रंग के बैग में Emp air एक मिक्सर, एक पांच सेल की टार्च एवरेडी एक सैंडिल चमड़े का लेडीज तीन डिब्बा मेंटल एक पैकेट कार्बन एक बड़ा – — ५ हैंगर लकड़ी एक जोड़ चट्टी हिरन के खाल की, एक बैटरी ऐवरेडी ९ Volt, तीन टाइप राइटर रिबन, ४ माचिस की डिब्बी में टूटे दांत, एक डिब्बे में मिट्टी के गोले जिन पर लाल धागे लिपटे हैं। तथा रूई के अन्दर रखे हैं। एक बंगाली भाषा में किताब बच्चों की — -- बन्द की एक फोटो प्लास्टिक में मढ़ी हुई एक खाली टेप स्पूल।

१२ दो चद्दटी ९५ नम्बर की, एक दर्जन खाली कैसेट एक नया नेशनल पेना-सोनिक टेप रिकार्ड व उसका कवर, एक अदद माता-पिता की फोटो ११ बंगला भाषा किताबें, ११ इंगलिश भाषा में किताबें नेताजी सुभाषचन्द्र बोस पर एक एक इंगलिस में एक बंगला प्लास्टिक पैकेट एक गड्डी, कार्बन पेपर एक पैकेट एक पैकेट मलमल का कपड़ा, एक गमछा एक पैकेट बनि-यान सिल्क।

चूंकि इस समय नावक्त हो गया है अतः आज की फर्द की कार्य

स्थगित की जाती है उपरोक्त फर्द व सामान का विवरण गवाहान को पढ़ कर सुनाया गया सुनकर तस्लीम करने के बाद सबने अपना-अपना अलामात बनवाये गये समक्ष गवाहान उक्त कमरे को ताला बन्द करके सील लगाई गई सील पर हस्ताक्षर गवाहान करवाये गये।

हस्ताक्षर हरिश्चन्द्र सिंह पुलिस उप निरीक्षक, अशोक टण्डन, सत्यनारायण सिंह सत्य, अनिल तिवारी, राम प्रकाश सिंह, ओम प्रकाश मदान, अरविन्द सिंह, बी० एन० अरोड़ा।

—o—

फर्द लावारिस सामान संदिग्ध बाबा

आज दिनांक २-११-८५ को मैं एस० आई० हरिशचन्द्र सिंह हस्त आदेश एस० एस० पी० महोदय एस० टी०/सी-२२।१९८५ दिनांक ३० अक्तूबर १९८५ के जांच के सिलसिले में मुहल्ला सिविल लाइन मकान स्थित राम भवन परिसर पहुंच कर समक्ष गवाहान सर्वश्री सत्य नारायन सिंह पुत्र श्री योजन सिंह निवासी दिल्ली दरवाजा व श्री ओमप्रकाश मदान पुत्र श्री सूगरमल निवासी,खवासपुरा, अशोकटण्डन पुत्र श्री नानक चन्द टण्डन निवासी लक्ष्मण पुरी कालोनी, विश्वम्भर नाथ अरोड़ा पुत्र स्व० श्री अमरनाथ अरोड़ा, १२, लक्ष्मणपुरी कालोनी, अनिल तिवारी पुत्र रामप्रताप तिवारी निवासी वीर सावरकर नगर झारखंडी, रामप्रकाश सिंह पुत्र रामाज्ञा सिंह २।३ महाजनी टोला थाना कोतवाली फैजाबाद व अरविन्द सिंह पुत्र श्री रामवचन सिंह २१७।३ अंजना निवास बालकराम कालोनी, कैण्ट फैजाबाद के संदिग्ध बाबा स्थित राम भवन के किराये के मकान में लगे ताले व सील को समक्ष गवाहान उपरोक्त खोल कर सूची लावारिस सामान मुस्त की जा रही है।

कमरा नं० २

१३–१३ पुस्तकें बंगला में शरद चन्द्र चटर्जी की लिखी हुई, दो लेटर पैड सादे, १ पैकेट पेपर कटिंग, नक्शे आदि २ नये टेप,नये एक डिब्बे में छोटे-छोटे नटबोल्ट, एकडिब्बे में ब्लेड ब्रश, इंजीटेप, फिल्टर सिगरेट, ओपनर,—–अन्य छोटे—छोटे सामान, दो खाली डिब्बे,—––दो टेप, खुले टेप पुराने लगते हैं, एक पोलेथीन में कुछ कागजात, दो पुस्तकें इंगलिश, कुछ पेपर, पेपर कटिंग, एक तस्वीर साधू की।

१४–गेरुआ कलर चादर, एक मलमल सफेद एक पीस, तीन मोजा दो ऊनी एक सूती. ५ बंगला की मोटी लाल रंग की किताबें (महाभारत) ४४ किताबें बंगला भाषा में, दो आक्सफोर्ड इंगलिश, डिक्शनरी २ वाल्यूम, नई ५ संस्कृत की किताबें, १६ किताबें इंगलिश की, जीलेट ब्लेड एक पैकट में कागज कटिंग आदि ।

१५–३४ किताबें बंगला भाषा में जिल्ददार मोटी, बंगला भाषा में ९ पत्रिका ९ प्लेट द्रूथ पत्रिका २४ अंग्रेजी में, ६ पुस्तकें छोटीबड़ी बंगला भाषा में, पत्रिका एनुअल १९७३, ज्योतिष व्यक्तित्व पत्रिका एक ।

१६–किचेन कटर, एक परात पीतल, सड़सी दो, एक पीतल, एक लोहा, एक पतीली पीतल, दो खाना ढकने का बर्तन पीतल का, एक लोटा, एक–––पीतल का, तामचीनी का एक प्लेट, पीतलकी,–––तस्तरियां ६, एक तस्तरी छोटी पीतल की, दो दूध गरम करने के बर्तन ढक्कन दार, एल्यूमुनियम के, एक गिलास पीतल का ढक्कनदार, दोकटोराफूल का,—एक, एक कलछुल पीतल की; एक एस्ट्रे पीतल का, दो प्लेट––––एक खुर्पी लोहे की, एक–––टिफीन नया, पीतल की मथनी, एक पलटा पीतल का, एक रेती लोहे की, एक पेचकस, ३ प्लेट कांच की ।

१७–......, एक टी सेट मेड इन जापान, एक...।...चीनी मिट्टी का बर्तन, सीसे का एक जार, सीसे के दो गिलास, गैस के दो सीसे; एक...बंडल रुई, एक मच्छरदानी; दो नेपाल के बैग

१८–एक छोटा बक्सा जिसमें एक सीसा, रुद्राक्ष की माला; घड़ी का खाली डिब्बा व अन्य छोटे सामान एक;

१९–चौकी के नीचे ३ बटलोई फूल; पीतल; ताबाँ थाली ३; एलमूनियम का बड़ा बर्तन.........स्टील का एक भगोना बड़ा; एक पीतल का भगोना; ताम चीन ५ थाली; १ पीपा पैनमुदा जिसमें कोई वजनदार पदार्थ चार बंडल ऊपर रंगे हुए तीन डिब्बे ब्रिटानिया बिस्कुट के ।

उक्त दोनों कमरों में मौजूद लावारिस सामान का विवरण सुदा रूप से अंकित किया गया अब कोई कार्रवाई शेष नहीं रह गयी । फर्द की कार्रवाही यहीं समाप्त की जाती है । समक्ष गवाहान उपरोक्त दोनों कमरों का बाहर से ताला बंदकर सील मोहर किया गया । फर्द पढ़कर सुनाया गया । सुनकर तस्दीक करने के बाद अपना-अपना अलामात बनाया ।

ह० सत्य नारायन सिंह; हरिश्चन्द सिंह; अशोक टण्डन, ओम प्रकाश भवान; अनिल तिवारी; राम प्रकाश सिंह; अरविन्द सिंह । —०—

मीडिया मदद करेगी

सूची बनाये जाते समय हमलोगों ने भी कुछ जल्दी-जल्दी नोट किया। वह इस प्रकार है-

१- जो खाकी फुल पैन्ट व नीली कमीज मिली है उस पर टेलर के मोनोग्राम पर लिखा है

'TEES DEES Dresses'

२- एक केसरिया रंग का झण्डा भी मिला है !

३- पवित्र मोहन राय के घर का नक्शा !

४- The Janta party : The particular & Aligments (दसियों टाइपड् पेपरों में) : ऐनिमी ला की कापी !

५- एक पत्रिका ३१ जुलाई १९७७ की जिसमें 'Netaji Mystry' (नेताजी १८ अगस्त १९४५ में नहीं मरे होंगे) लेख।

६- नेताजी जन्मोत्सव समिति के कई फोटोग्राफस

७- एक कापी में १४ पृष्ठ लिखे हुये (जो गुमनामी बाबा द्वारा लिखित प्रतीत होता है) उसमें अंग्रेजी में विवेकानन्द के कोटेशन्स् हैं।

८- Dissentient Report by Suresh Chandra Bose

९- The Indian observer अखबार का वह अंक जिसमें छपा है--- 'Netaji Alive ?'

१०-एक पुस्तक 'The Lessons of History-by-Will and Ariel' (इस पूरी पुस्तक में स्वामीजी द्वारा अंग्रेजी में कमेंट लिखे हुये हैं जैसे- पाश्चात्य लेखकों का मत कभी हिन्दुओं पर सही नहीं रहा)

११-एक पेपर कटिंग-''नेहरू के साथ अनीता बोस का चित्र'

१२-स्वामीजी को पटा प्रवास के दौरान लिखा गया एक पत्र

१३-स्वामीजी के एक शिष्य को मनुभाई का लिखा हुआ एक पत्र वहां प्राप्त हुआ है जिसमें मनुभाई ने लिखा था कि "अगर नेताजी प्रगट हों तो नेता जी को लोग पैसे से मदद करेंगे।' इस पर अंग्रेजी में गुमनामी बाबा-उर्फ स्वामीजी ने कमेंट लिखा है जिसका तात्पर्य है कि-'गलत, बेवकूफ, मीडिया मदद करेगी।"

१४-कुछ पुस्तकें

(१) Subhash Chandra Bose-by-Nanda Mukherji

(२) Message of Subhash Chandra Bose-Published by Suresh Chandra Bose

(३) Netaji Ka Ahvahan (in Bengla)
(४) Netaji Concept of Free Indian Nov. 44 (Tokyo Speech)
(५) Shakespear
(६) Mistirious Lady—"Miss Merry"
(७) Tellors Confessions—'Netaji Still alive'–Her father was acquinted with Netagi in England, Mrs Shenkel so called wife of Netaji is not wife of Netaji
(८) Netaji Speaks
(९) Mismarisom
(१०) Neumorologi—'Its facts is Secrets'
(११) Fatehpur Seekri is a Hindu city
(१२) Chirio Book of Neumorologi
(१३) Some Blunders of Indian Historical research
(१४) Life Beyound death–Abhedanand
(१५) The reformations—Newyork 1957
(१६) The Science of Creation Sound—"Japsutram."
(१७) The age of Voltaire
(१८) Netaji through German Lence
(१९) Sharat Chandra की १३ किताबें
(२०) 2 New Oxford Dictionry
(२१) Confession Memories of A Morden……Cheiro
(२२) महाभारत के सभी अध्याय, बंगला में
(२३) सुभाष सेवादल की पत्रिका

१५- स्वामीजी के बबात लिखे गये २१-५-६८ के किसी पत्र के जबाब में लेफ्टि० कर्नल वी० आर० मोहन के दिनांकित ९-६-६८ पत्र के कुछ अंश

'Mr, Mohan replied that, "Swamiji 1 can only say untill such time you disclose as what you want I can do nothing In case you have been anything to disclose you may do so I shall see what possible can be done"

१६-११ जून १९४७ के 'संदेश' अखबार जिसमें नेताजी के धन की तलाशी—२० करोड़ डालर का धन……" संबन्धित खबर छपी है !

१७— पूरा पारिवारिक एलबम—जिसमें विभिन्न पारिवारिक फोटो पिताजी के साथ, माताजी के साथ, अलग—अलग अवस्थाओं के, सबसे छोटी अवस्था तीन चार वर्ष की ग्रुप फोटो।

१८— कर्नल हब्बुर्रहमान का बयान 'जुगान्तर' में

१९— एक पेपर कटिंग "Sikkim was never a part of India—Chogyal.

२०— २५–९—७४ से २२–१०—७४ तक के 'आनन्द बाजार पत्रिका' में २४ किश्तों में छपी खबर "ताईहोकू विमान दुर्घटना एक बनाई हुई कहानी है" की कटिंग्स।

२१— बंगलादेश संविधान (संशोधित १९७७) की प्रमाणीकृत प्रतिलिपि।

२२— २३–२—३४ को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस द्वारा अपनी मां के नाम कटक भेजे गये पत्र की फोटो कापी।

२३— २३—९—२३ मांडले जेल से नेताजी द्वारा मां को लिखे गये पत्र की फोटो कापी, जिस पर बी० आई० जी० द्वारा सेन्सर मोहर लगी है।

२४— किसी तृप्ति द्वारा १९७७ में स्वामीजी को लिखे पत्र के अंश—"माता सरस्वती देवी के लिए आपने जो कुछ किया वह बेमिशाल है यदि वे आपसे असन्तुष्ट हैं तो हम उन्हें आकर समझायेंगे। उनके लड़के के लिये भी आपने बहुत कुछ किया, अब वो लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं? हम लोगों को बहुत कष्ट होता है जब बस्ती में उन्होंने आपकी सेवा करने के लिये कहा था, तब उनकी कोई शर्त नहीं थी। २०–७–७७ को हम ४ लोग वहां पहुंचेगे। आपके दर्शन करके तीन चार दिन रहकर हम लौट आवेंगे।"

२५— एक अखबार में प्रकाशित लेख की हेडिंग की कटिंग—"You have heard of roses but what about cactuses?"

२६—राष्ट्रधर्म पत्रिका की तीन प्रतियां
(i) जुलाई ७३ गुरु गोलवरकरजी पर विशेषांक
(ii) मई ७३—महात्मा बुद्ध पर विशेष
(iii) जून ७१

२७— १९—३—८३ के 'Weekend Telegraph' की कटिंग जिसमें—'The Netaji-Mahatma Letters की हेडिंग से काफी लम्बा लेख प्रकाशित है।

२८— इलुस्ट्रेटेड वीकली, आरगनाइजर तथा धर्मयुग की तमाम प्रतियां।

२९— श्री त्रिलोकनाथ चतुर्वेदी द्वारा लिखित 'जेल में तीस वर्ष' नामक पुस्तक

३०— History of the Freedom Movement in India

३१– २३ जनवरी १९७९ को बंगाल के एकमात्र सबसे बड़े बंगला दैनिक 'जुंगातर' में नेताजी जैसा चित्र छपा था जिसे समरगुहा ने जारी करते हुये कहा था ये एक साल पहले खींचा गया चित्र है ! उन्होंने एक लिखित बयान दिया जो कुछ इस तरह का छपा है—

—"भारतवासी २३ जनवरी को हमारे वक्त के महान विप्लवी वीर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्मदिन मनायेंगे। इस अवसर पर वे और ज्यादा आनंदित होंगे अगर उन्हें यह पता चल जाये कि उनके प्रिय नेता जिन्दा हैं ! इस वक्त वह बिल्कुल स्वस्थ हैं। १८ अगस्त १९४५को फारमोसा के ताईहोकू हवाई अड्डे पर एक विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई थी; इस घोषणा के अलावा आज तक कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिले हैं जिससे यह साबित हो पाता कि नेताजी की मृत्यु हो गई है। दरअसल विमान दुर्घटना वाली कहानी बनाई गयी थी ताकि तत्कालीन मित्र राष्ट्रों(एलाइड फोर्सेस)को चकमा देकर नेताजी भाग सकें। १७ अगस्त १९४५ को नेताजी ने सायगान छोड़ा था, उसी दिन शाम को वे टयूरिन पहुंचे थे और वहां से वे आगे नहीं बढ़े ? यहीं से उनके अज्ञातवास अध्याय की शुरुआत होती है। नेताजी जिस पुण्य क्षण में अपने आपको प्रकट करेंगे। उसी दिन भारत के लोग उनसे यह जान सकेंगे कि अज्ञातवास के दिनों में उन्होंने क्या किया !

३२– Message of Subhash Chandra Bose—नामक बुकलेट की कई प्रतियां

३३– जी० डी० खोसला कमीशन में १९७७ में श्री द्विजेन्द्रनाथ बोस द्वारा दिये गये बयान की प्रतियां ! गवाहों के जबाब–सवाल की प्रति !

३४– चौबीस परगना के जिला जज की अदालत में १७ अगस्त को श्री सुरेशचन्द्र बोस को प्रस्तुत होने के लिये चौबीस परगनाके एडवोकेट कमीशनर द्वारा भेजा सम्मन।

३५– अयोध्या के बिड़ला धर्मशाले से श्री अमलराय द्वारा स्वामीजी को भेजा गया पत्र जिसमें लिखा है कि सरस्वती देवी द्वारा फारवर्ड ब्लाक के कुछ स्थानीय कार्यकर्ताओं की मदद करने से स्वामीजी परेशान होकर बस्ती छोड़े। इस पत्र की एक प्रति श्री समरगुहा को प्रेषित की गई है !

—०—

पवित्र मोहन राय

हुआ ये कि 'नयेलोग' में सबसे पहले यह खबर छपने से स्थानीय संवाददाताओं को बड़ा कोफ्त हुआ कि यह समाचार पहले उन्हें क्यों नहीं मिला ! बस फिर क्या था–विरोध की शुरुआत की एक अन्य स्थानीय दैनिक 'जनमोर्चा' ने ! उसने तुरन्त नयेलोग में छपी खबर का जिलाधिकारी के बयान के रूप में खण्डन छाप दिया, (जबकि बाद में जिलाधिकारी ने बताया कि उन्होंने'जनमोर्चा' को इस तरह का कोई बयान नहीं दिया था) जनमोर्चा ने १ नवम्बर ८५ को फिर छापा कि 'लावारिस सम्पत्ति राज्य सरकार की होगी तथा नगर मजिस्ट्रेट ने उस दिन भी जाचकर अफवाह को निराधार बताया था। 'नयेलोग' में लगातार छप रही खबरों का फिर जनमोर्चा ने २ नवम्बर को इस प्रकार खण्डन करना चाहा—" "—जो पत्र मिले हैं वे भी किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा नहीं लिखे गए हैं जो नेताजी के साथियों में रहा हो– — — !" पत्र आगे लिखता है — — — गुमनामी बाबा कौन थे — — — अभी भी यह रहस्य ही है पुलिस इसे उजागर नहीं कर पाई है।" फिर ३ नवम्बर को जनमोर्चा ने किसी गुमनामी आदमी को आधार बनाकर एक काल्पनिक कहानी छापी कि गुमनामी बाबा कोई तथाकथित हत्यारे के० डी० उपाध्याय थे ! जबकि उसी खबर के नीचे जनमोर्चा एक छोटी सी खबर छापता है कि "कलकत्ता से पवित्र मोहन राय नामक व्यक्ति के पत्र अधिक मिले हैं !

इस पत्र के संपादक श्री शीतला सिंह इस समय उ० प्र० श्रमजीवी पत्रकार यूनियन के अध्यक्ष हैं। उन्होंने तुरन्त मामले की जांचकर रहे सब इन्सपेक्टर श्री हरिशचन्द्र सिंह को साथ लेकर अपने दो धनाढ्य मित्रों के साथ कलकत्ता की यात्रा की और कलकत्ता के 'जुगांतर' दैनिक के एक पत्रकार के माध्यम से डा० पी० एम० राय से साक्षात्कार किया ! ये साक्षात्कार पूरा टेप किया गया !

और कलकत्ता से लौटने के बाद ६ नवम्बर ८५ को जनमोर्चा में प्रमुखता से विशेष प्रतिनिधि के नाम एक खबर इस शीर्षक से छपी कि 'नेताजी के निकट सहयोगी कहते हैं वो नेताजी नहीं थे" लेकिन खबर में लिखा गया कि– — — डा० पवित्र मोहन राय..........वास्तव में नेताजी के निकट सहयोगी रहे हैं और सिंगापुर, मलेशिया में नेताजी के लिए काम करते रहे हैं तथा पनडुब्बी से भागकर हिन्दुस्थान आये थे।" एक प्रश्न के उत्तर में डा० राय ने कहा कि —"हम नेताजी की खोज में हर साधु के पास जाते रहे हैं। कोहिमा से पंजाब तक गये हैं। शौलमारी आश्रम भी गए हैं। वैसे ही फैजाबाद भी जाते थे ।

'प्रश्न——उनके निधन की आपको सूचना दी गई थी ?

'उत्तर—डा० आर० पी० मिश्र के लड़के व एक अन्य डाक्टर यह सूचना देने आए थे............।"

अखबार आगे लिखता है कि – – –"इसके बाद हमारे प्रतिनिधि ने सुभाष चन्द्र बोस के भतीजे श्री शिशिर बोस से मुलाकात की – – – उन्होंने आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा—दिस इज आल रबिस। (लेकिन कलकत्ते गई पार्टी के एक प्रवक्ता ने मुझे बताया कि शिशिर बोस से फोन पर ही बात हुई थी और उन्होंने मिलने से ही इंकार कर दिया था) पत्र आगे लिखता है— "एक अन्य प्रमुख व्यक्ति जिनका नाम इस प्रकरण में आता रहा है वे हैं सुनील गुप्ता।" उनसे मिले तो उन्होंने कहा कि, 'भगवनजी की मृत्यु से हमें बहुत दुःख हुआ है। – – –अखिल भारतीय प्रकाशक संघ के अध्यक्ष दाऊ दयाल मेहरा ने बताया कि – – – कुछ समय पहले मिहिर बोस ने नेताजी पर एक पुस्तक 'लास्ट हीरो' लिखी है, वे इस सम्बंध में नेताजी की खोज में फैजाबाद भी गए थे...... ...।'

–०–

लेकिन फिर मैंने भी उस टेप को सुना, जिसमें डा० पी० एम० राय ने श्री शीतला सिंह व पुलिस अधिकारी से निम्न बातें कही थीं। जरा पाठक इन्हें भी गम्भीरता से देखें—

डा० राय ने पहले दिन कहा कि अयोध्या उनके पास दवा लेने जाता था। 'आप उनको पैसा खर्चा देते थे ?' का उत्तर दिया डा० राय ने कि——"ऐसा याद नहीं कुछ दिया हो ?"एक अन्य प्रश्न के उत्तर में डा० राय ने कहा कि—कोई बोलता है जिन्दा हैं कोई बोलता नहीं हैं।"

प्रश्न—'आपका माइंड क्या कहता है ?

उत्तर—'मेरे माइंड के बोलने से क्या फायदा।'

प्रश्न-'दुर्गाप्रसाद कहते है कि वे नेताजी थे ?

उ०—'दुर्गा प्रसाद बोल सकता है.........हम केवल एक प्रूफ नहीं दे सकता कि वे जिन्दा हैं।' जबकि डा० राय ने स्वीकारा कि वे बंगाली थे !

प्र०-आप डिनाई (इंकार) करते हैं कि वे नेताजी नहीं थे ?

उ०—'क्या डिनाई करेगा, जो हमें बोलना था बोल दिया।'

प्र०—लोग चिल्ला रहे हैं कि वे नेताजी थे ?

उ०—अभी तो जैसा माफिक होता है होने दो, उसके बाद.........

प्र०—आपके साथ ४—५ बंगाली लोग जाते थे, कौन थे ?

उ०—मुझे याद नहीं।

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में डा० राय बोले—

—"मैं यह नहीं कह सकता कि स्वामी किसकी तरह थे।'

—'मैं वहां दो तीन बार गया लेकिन अपना मन नहीं बना पाया।······मेरा पहला सम्पर्क उनसे तब हुआ जब सुना कि बस्ती में नेताजी हैं।'

प्र०—'आपका निष्कर्ष क्या है ?'

उ०—मैंने उन्हें कभी नहीं देखा !

प्र०—'आप कभी फैजाबाद में रामभवन भी गये ?'

उ०—'मैंने ये नाम नहीं सुना। मैं वैसे फैजाबाद में उनसे एक बार मिला। — — — डा० आर० पी० मिश्रा को मैं जानता हूं······ यहां अनुपम मिश्रा एक आदमी के साथ आया था······उसने कहा कि स्वामीजी के सामान का हमलोग क्या करें········।'

प्र०—'फैजाबाद की जनता को क्या बतायें ?

उ०—'जो बोले हैं वही बोल देना।'

प्र०—'स्वामीजी की रायटिंग नेताजी से मिल रही है क्या वे नेताजी थे······ बताइये साफ–साफ ?

उ०—'He did not meet me in Basti,'

प्र०—'दुर्गा प्रसाद कहते हैं कि आप उन्हें बस्ती छोड़ आये थे, आप ने उन्हें बताया कि वे नेताजी हैं ?

उ०—हम नहीं समझा कि वे नेताजी हैं कि नहीं फिर कैसे बताता !'

—o—

६ नवम्बर ८५ को जनमोर्चा में डा० पी० एम० राय से सम्बन्धित छपी खबर पढ़कर मैंने दूसरे दिन 'नये लोग' के मुख पृष्ठ पर संपादकीय लिखा—

अपनी बात

लास्ट हीरो

—अशोक टण्डन—

नेताजी प्रकरण को उद्घाटित करने के बाद 'नये लोग' प्राप्त तथ्यों, प्रमाणों व निकट सहयोगियों के कथनों के माध्यम से किसी निष्कर्ष विशेष की ओर

बढ़ रहा है तभी एक स्थानीय दैनिक ने कलकत्ते के माध्यम से विशेष प्रतिनिधि की खबर छापकर डा० पवित्र मोहन राय का कथन प्रकाशित किया है कि... ... लेकिन नेताजी सुभाषचन्द्र बोस नहीं थे ।' उक्त दैनिक आगे फिर उन्हीं डा० पवित्र मोहन राय का एक उत्तर भी छापता है कि–'हमें नहीं पता कि वो कौन थे ?' अर्थात डा०पी०एम०राय बीसों वर्षों में जब यह नहीं जान पाये कि गुमनामी बाबा कौन थे, तो उनकी इस शंका का निवारण कैसे हो गया कि 'वो नेताजी नहीं थे' विचारणीय प्रश्न है ! डा० राय ने इस बाबत कोई प्रमाण भी नहीं दिया कि उनको कैसे विश्वास हो गया था कि 'वो नेताजी नहीं थे ।'

आश्चर्य इस बात पर भी होता है कि डा० पी० एम० राय को जब यह यकीन हो गया था कि ये नेताजी नहीं हैं (तथा वे यह भी नहीं जानते हैं कि वे व्यक्ति कौन है तो किस भावना के वशीभूत होकर उक्त 'गुमनामी' बाबा से एक लंबे अर्से तक सम्पर्क बनाये रहे, उसकी आज्ञा का पालन करते रहे (रामभवन में प्राप्त पत्रों से), उसके लिये हर साजो–सामान मुहैय्या कराते रहे । जबकि उनके जीवन का सबसे अहम कार्य नेताजी को खोजना रहा हो !

अब उक्त दैनिक ने भी 'नये लोग' व इस देश की जनता के इस महत्वपू तथ्य की पुष्टि की है कि आज तक नेताजी के निकटस्थ लोग उनकी खोज करते रहे है, अर्थात् उन्हें भी यह विश्वास था कि नेताजी की मृत्यु किसी दुर्घटना में नहीं हुई है और वे देश में ही कहीं साधु के वेष में छिपे हुए हैं ।

असलियत यह है कि डा० पी० एम० राय सारी वास्तविकता से परिचित हैं और किसी विशेष कारणवश राज नहीं खोलना चाहते हैं । अब जबकि यह फैजाबाद में रह रहे उनके सबसे छोटे स्तर के सेवक समझे जाने वाले लोग वास्तविकता को छिपा रहे हैं तो एक पत्रकार को क्षणिक मुलाकात में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का एक लेफ्टिनेन्ट (सहायक) डा० पी० एम० राय संसार का सबसे बड़ा रहस्य कैसे उद्घाटित कर देता–यह सोचने की बात है ?

डा० राय ने नेताजी का सहयोगी होना तथा उनके लिये सिंगापुर व मलेशिया में काम करना तथा पनडुब्बी से हिन्दुस्तान भागकर आना स्वीकारा है । डा० राय ने कहा है कि "हम लोग हर साधु व रहस्यमय व्यक्ति के पास नेताजी की खोज में जाते रहे हैं, कोहिमा से पंजाब तक और शौलमारी आश्रम तक हम लोग गये । ऐसे ही बस्ती, फैजाबाद और अयोध्या में बाबाजी के पास जाते थे...।" डा० राय अपने निरन्तर फैजाबाद व अयोध्या आने का कारण बताते हैं कि हम नेताजी की जांच में हर साधु के पास जाते रहे हैं । कोहिमा से पंजाब तक गये हैं । शौलमारी आश्रम भी गये हैं । वैसे ही फैजाबाद भी जाते थे । बाबा के निधन की सूचना

के सम्बन्ध में डा० राय का कहना है कि डा० आर० पी० मिश्रा के लड़के व एक अन्य डा० यह सूचना देने आये थे। और डा० आर० पी० मिश्रा ने भी 'नयेलोग' से एक भेंट में स्वीकार किया था कि उक्त बाबा की मृत्यु सम्बन्धी सूचना उन्होंने डा.पी.एम. राय को तार द्वारा भेजी है। क्या इस बात से यह नहीं प्रमाणित होता है कि उक्त बाबा के अन्तिम दिनों तक डा० राय उनसे पूरी तरह जुड़े हुये थे। आखिर क्यों ?

डा० राय का यह भी जवाब सन्देहात्मक लगता है कि…"मैंने अपने किसी भी पत्र में उन्हें नेताजी नहीं कहा। बस्ती के वकील दुर्गा प्रसाद पाण्डेय या अन्य किसी से भी मैंने ऐसा कभी नहीं कहा।" डा० राय जैसे महान देशभक्त से जब उक्त दैनिक के विशेष प्रतिनिधि ने पूछा कि जनता के लिये कुछ संदेश। तो डा० राय ने उत्तर दिया—'संदेश क्या जो आप से कह रहा हूं वही है, बड़ा ही सार-गर्भित लगता है।

उक्त दैनिक का विशेष प्रतिनिधि जो प्रकरण की गम्भीरता को समझते हुये तुरन्त कलकत्ते गया, नेताजी के भतीजे कहे जाने वाले विधायक श्री शिशिर बोस से भी बात की। श्री बोस ने आक्रोश व्यक्त करते हुये कहा— "दिस इज आल रबिस।" मेरी जानकारी के अनुसार श्री बोस इका के विधायक हैं और वे वही बोलेंगे जो उनकी पार्टी की सरकार बोलती या उनसे बोलवाती रही है। पाठकों को याद होगा कि फैजाबाद के सांसद स्व० राम कृष्ण सिन्हा के चुनाव प्रचार में श्री अमि बोस नामक एक व्यक्ति, जो अपने को नेताजी का भतीजा बताते थे, ने भी प्रश्नों के जवाब में कहा था कि नेताजी मर गये हैं। इन लोगों के बयान की क्या अहमियत है—जबकि पी० एम० राय स्वयं नेताजी की खोज में दर-दर भटकते रहे।

उक्त दैनिक के अनुसार फारवर्ड ब्लाक के नेता प० बंगाल सरकार के मन्त्री श्री कमल गुहा का कहना हैं कि "मेरा निश्चित विश्वास है कि वे नेताजी नहीं थे। मैं शौलमारी आश्रम भी नेताजी की तलाश में गया था……लेकिन जाँच पड़ताल करने पर वह ढोंगी बाबा निकला" समझ में नहीं आता कि श्री गुहा ने शौलमारी के बाबा को ही ढोंगी क्यों कहा, अयोध्या—फैजाबाद के इस गुमनामी बाबा को भी ढोंगी क्यों नहीं कहा, जबकि वे जानते हैं कि एक विशिष्ट व्यक्ति नेताजी के जीवित होने की वकालत किया करता था। वह व्यक्ति थे फारवर्ड ब्लाक से पूर्व राज्य सभा सदस्य श्री अमर चक्रवर्ती।

उक्त पत्र के अनुसार कलकत्ता के ही श्री सुनील गुप्ता को बाबाजी के निधन के समाचार से बहुत आघात लगा। निश्चय ही किसी निकटस्थ

व्यक्ति की मृत्यु पर ही आघात लगता है, वरना एक सन्त की मृत्यु पर श्री गुप्त का दुखी होना ही काफी था। कलकत्ते जाने वाले इस विशेष प्रतिनिधि का दुर्भाग्य था कि उस व्यक्ति की मृत्यु एक सप्ताह ही पूर्व हो चुकी थी जो नेताजी के जीवित होने की वकालत किया करता था। वह व्यक्ति थे फारवर्ड ब्लाक से पूर्व राज्यसभा सदस्य श्री अमर चक्रवर्ती। उक्त पत्र ने 'नये लोग' की श्री मिहिर बोस वाली खबर की पुष्टि करते हुए कि वह नेताजी पर किताब लिख रहे हैं और नेताजी की खोज में फैजाबाद गये थे-लिखा है कि कुछ समय पहले मिहिर बोस ने नेताजी पर एक पुस्तक "लास्ट हीरो" लिखी है...लेकिन उनकी किताब में फैजाबाद के बाबा का कोई जिक्र नहीं है। क्या यह बात यह नहीं सिद्ध करती है कि श्री मिहिर बोस नेताजी की उपरोक्त तरह की खोज करने वालों से जानकर ही फैजाबाद आए होंगे और जिस तरह नेताजी सुभाषचन्द्र का वफादार लेफ्टिनेन्ट अपनी जबान नहीं खोल रहा है उसी तरह श्री मिहिर बोस ने भी सब कुछ लिखकर रख दिया हो और अब उनके देहावसान के बाद अपनी सनसनीखेज पुस्तक प्रकाशित करें। खेद है कि उक्त दैनिक का विशेष संवाददाता फिर मात खा गया। जिस सुश्री लीलाराय नामक महिला ने 'जयश्री' अखबार में नेताजी के जिन्दा होने की वकालत करते हुए लेख लिखे थे—उसका भी कुछ दिन पूर्व निधन हो चुका है। खोसला आयोग के समक्ष नेताजी के जीवित होने की बात कहने वाले का इस विशेष प्रतिनिधि ने नाम नहीं बताया है। पत्र का यह कहना कि इनमें से किसी ने भी यह स्वीकार नहीं किया कि वे २३ जनवरी को नियमित रूप से फैजाबाद जाते थे और भगवनजी के यहां नेताजी का जन्मदिन मनाते थे। इस वाक्य से इस बात की अक्षरश: पुष्टि होती है कि २३ जनवरी को कलकत्ता से कुछ लोग आते थे और भगवनजी का जन्मदिन मनाते थे बस। वे लोग नियमित नहीं आते थे। अर्थात् कभी कोई आता होगा और कभी कोई !

सबसे बड़ी विरोधात्मक बात उक्त अखबार के विशेष प्रतिनिधि ने अपने अन्तिम पैरे में लिखी है कि—"सबका कहना था कि उन्होंने भगवनजी को कभी देखा नहीं" ...तब वे लोग किस आधार पर दृढ़ता से कह सकते हैं कि भगवनजी नेताजी नहीं थे। ऊपर से तुर्रा यह भी कि—'सब उनको केवल भगवनजी के रूप में ही जानते और मानते रहे हैं।"

—•—

आपने ऊपर डा.पी. एम.राय के उस बयान के अंश भी पढ़े, जिसे श्री शीतला सिंह सहित पुलिस पार्टी ने टेप किया ! इन बातों से ऐसा लगता है कि डा० राय

बहुत कुछ छिपाते हुए तथा खुलकर न कहना चाहते हुये भी, बहुत कुछ कह गये हैं। अब देश की जनता को चाहिये कि वह ऐसे विप्लवी क्रांतिकारी देशभक्त के शब्दों का अर्थ स्वयं लगाये।

डा० राय जिस कारण इतना बड़ा सत्य छिपा रहे हैं, क्या उस पीड़ा की झलक इन शब्दों से नहीं मिलती कि "मेरे माइण्ड के बोलने से क्या फायदा।" शायद यह जवाब उन लोगों के लिए काफी होगा, जो कहते हैं कि आखिर डा० पी० एम० राय क्यों नहीं असलियत बता रहे हैं ! डा० राय ने बहुत बड़ी दुनिया देखी है वे इस बात को अच्छी तरह समझते होंगे कि उन्हें किस मौके पर मुँह खोलना है।

पाठक देखेंगे कि जब प्रश्न किया गया कि क्या उनकी आवाज मिलती थी क्योंकि आपने तो दोनों की आवाज सुनी थी। डा० ने मौन साध लिया ! क्या "मौनम् स्वीकारम् लक्षणम्।" का सिद्धान्त यहाँ नहीं लागू होता ? डा० राय ने बंगाली ही बताया।

और वास्तविकता तो यह है कि डा० राय ने यह कहकर कि "क्या डिनाई करेगा, जो बोलना था बोल दिया। बहुत कुछ कह दिया है हमारे आपके समझने के लिए।

—०—

अगर बता दूंगा तो पूरे मुल्क में आग लग जायेगी

११ नवम्बर ८५ को हमने 'नयेलोग' में अपने बस्ती संवाददाता 'उपेन्द्र' के हवाले से जो खबर छापी वह पण्डा जी द्वारा बताये वाक्यांशों पर खरी उतरती नजर आयी ।

बस्ती के एक वरिष्ठ वकील श्री दुर्गा प्रसाद पाण्डेय ने 'नयेलोग' के संवाददाता से कहा कि—"अभी कल फैजाबाद के दो पुलिस अधिकारी आये थे। कह रहे थे फैजाबाद चलिए। मैंने कहा—क्या आप जबरदस्ती ले चलेंगे। आप जो जानना चाहते हैं अगर बता दूंगा तो पूरे मुल्क में आग लग जायेगी। जाओ एस० पी० और कलेक्टर से कह दो कि मामले को शान्त करें ।

बाबाजी के सम्बन्ध में ज्यादा जोर देकर पूछने पर उन्होंने स्पष्ट कहा, "मैं एक शब्द नहीं कहूँगा, वचनबद्ध हूँ। शेष सब ठीक है। आप लोगों (नये लोग) का प्रयास स्तुत्य है, सराहनीय है। आपने सच्चाई कही है। सच्चाई कभी दब नहीं सकती।"

उन्होंने कहा कि जब भगवनजी ने शरीर छोड़ा तो वे बद्रीनाथ गये हुए थे। उन्होंने आगे कहा कि—"अभी मैं कुछ कहने की स्थिति में नहीं हूँ। समय आने पर कहूँगा। मैं गोली और फांसी जैसी सजा से भी नहीं डरता, खेद इस बात का है कि अब उनके परिवार व निकटवर्ती लोग उल्टी दिशा में चल रहे हैं, तो ऐसी स्थिति में मेरा चुप रहना उचित है।" उन्होंने रुंधे गले से कहा कि—"भगवन कहा करते थे कि कुत्ते पर विश्वास करो पर आदमी पर नहीं।" उनकी अन्तिम इच्छा थी कि वे किसी तीर्थस्थल पर अपना शरीर त्याग करें।

वैसे गुमनामी बाबा के बस्ती आने का किस्सा कुछ यूं रहा कि श्री महादेव प्रसाद मिश्र थाना रुंधोली ग्राम मिश्रोलिया के निवासी थे। श्री मिश्र संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। इनका सम्बन्ध नेपाल राजघराने से भी था। इनके द्वारा नेपाल में कई संस्कृत की पाठशालायें चलाई जाती रही। भगवनजी का सम्बन्ध श्री मिश्र से

'राज नेपाल' के माध्यम से ही हुआ। श्री मिश्र की लड़की सरस्वती शुक्ला का विवाह थाना मेंहदावल ग्राम एकला शुक्ल निवासी स्व० श्रीराम चरित्र शुक्ल के साथ हुआ था। पति की मृत्यु के बाद अपने पुत्र के साथ श्रीमती सरस्वती शुक्ला भी अपने पिता के साथ नेपाल में रहा करती थी।

सन् १९६३-६४ में अपने कुछ चकबन्दी के मुकदमों के कारण श्रीमती सरस्वती शुक्ला को बस्ती आना पड़ा। उनके साथ उनका पुत्र—पिता तथा गुमनामी बाबा भी आ गये। सर्वप्रथम ये लोग बस्ती नगर के पठान टोला स्थिति श्री नवल किशोर श्रीवास्तव के मकान में रहे। फिर बस्ती रामभवन के ठीक सामने स्थित एक मकान में आ गये, जिसका अगला हिस्सा पक्का और पिछला खपरैल का था। यह मकान राजा बस्ती का था। इस मकान में भी कुछ इस तरह के परिवर्तन किए गये जिसमे स्वामी जी की गोपनीयता न भंग हो।

बस्ती के राजा श्री ओंकार सिंह का कहना है कि बाबा के पास अक्सर बाहर के लोग आया जाया करते थे जिनमें बंगालियों की सख्या अधिक होती थी। तत्कालीन जिलाधिकारी श्री आर० के० भार्गव ने एक बार बाबा की जाँच करना चाहा, लेकिन फिर न जाने किन कारणों से मौन साध गये। बस्ती के एक अन्य निकटवर्ती सूत्र श्री श्यामलाल का कहना था कि 'स्वामीजी के यहां अधिकतर बंगाली आते थे और कभी-कभार विदेशी भी। वे हमेशा पर्दे के पीछे से ही बात करते थे। उनकी आवाज बेहद गम्भीर और बुलन्द थी। उनके यहां २३ जनवरी को 'सुभाष जयन्ती' मनाई जाती थी, उस दिन पड़ोस की महिलायें गीत गाती थी और बाबा की ओर से उन्हें दो—दो रुपये व मिठाई दी जाती थी। नोट नये हुआ करते थे और मिठाइयां बंगाली। बाबा के यहां १५ अगस्त व २६ जनवरी को झण्डा फहराया जाता था।

उस मोहल्ले के तत्कालीन पोस्टमैन के अनुसार उनके पास नित्य भारत के कोने कोने से डाक व पार्सल आया करते थे। ज्यादातर बंगाल से डाक आती थी। विशेषकर २३ जनवरी को 'जन्मदिन' बधाई के टेलीग्राम अधिक संख्या में आते थे।

बस्ती के सक्सेरिया इण्टर कालेज के अर्थशास्त्र के प्रवक्ता डा० प्रेमप्रकाश श्रीवास्तव ने बताया कि (नये लोग १८ नवम्बर ८५) उस समय मैं बस्ती नगर-पालिका में उपाध्यक्ष था एक बार मुझे उसी मोहल्ले में एक मकान के नक्शे के विवाद के सम्बन्ध में जाना पड़ा। उस समय पुरानी बस्ती क्षेत्र के स्वास्थ्य निरीक्षक श्री जगदीश प्रसाद त्रिपाठी थे। उसी समय श्री त्रिपाठी ने मुझे बताया

कि वह देखो कि उस मकान में सुभाष बाबू रहते हैं। मुझे सुनकर उत्सुकता हुई इसलिए त्रिपाठी जी के साथ मैं उनके मकान पर गया। बाहर एक बूढ़ा बंगाली बैठा था, जो त्रिपाठी को पहचानता था। त्रिपाठी ने मेरे बारे में उस व्यक्ति को बताया, उसने भीतर जाकर प्रसाद के रूप में मिठाई लाकर मुझे दिया। साधारणतया वह किसी को वहाँ रुकने नहीं देता था। त्रिपाठी जी के ही माध्यम से लगभग एक माह प्रयास के बाद मुझे यह अवसर मिल सका कि मैं भीतर जा सकूं। कमरे में पर्दे के पीछे रहते हुए उन्होंने मुझसे कुछ मिनट तक धर्म की बातें की।

मेरा उद्देश्य केवल उनकी बातों को सुनना था। उनकी आवाज, बोलने के ढंग से मुझे पूरा विश्वास हो गया कि वे ही सुभाष बाबू हैं।

डा० श्रीवास्तव के अनुसार द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ होने के पूर्व सुभाष बाबू ने बस्ती में फारवर्ड ब्लाक का गठन किया था। उस समय सक्सेरिया कालेज के अध्यापक तथा मेरे गुरूजी स्वर्गीय राम सेवक सिंह ने जो क्षत्रिया आश्रम के संचालक थे, यह कार्यभार अपने ऊपर लिया था और उन्होंने अपने विश्वसनीय छात्रों को उसका सदस्य बनाया था। मुझे भी उसका सदस्य होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस समय ८वीं कक्षा का छात्र था। श्री राम सेवक सिंह के रिश्ते के एक भाई ठाकुर व्रत सिंह फारवर्ड ब्लाक के संचालक बनाये गये थे। इसी सिलसिले में सुभाष बाबू बस्ती आये थे। तथा सक्सेरिया कालेज के तत्कालीन प्रधानाचार्य स्व० विजयनाथ चक्रवर्ती के यहां ठहरे थे। वहीं सुभाष बाबू हमलोगों को बुलाकर देश की गुलामी तथा स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बारे में बताते थे। ऐसा कई बार अवसर मिलने के कारण मैं उनकी भाषा, बोलने के ढंग तथा विभिन्न हिन्दी शब्दों के उच्चारण से परिचित था। और जब पुरानी बस्ती में स्वामी जी की बोली सुनी तो तुरन्त पहचान गया कि वे ही सुभाष बाबू हैं। फिर मैं बहुधा आने-जाने लगा।

डा० प्रेमप्रकाश वरिष्ठ पत्रकार भी हैं, उन्होंने एक बार वाराणसी के 'आज' दैनिक में बाबा जी के नेता सुभाषचन्द्र बोस होने की एक खबर भी छापी थी। जिसे पढ़कर तत्कालीन जिलाधिकारी श्री टी० के० चाटलू भी उन्हें देखने व जांचने गये थे। लेकिन न जाने बाबा से क्या संकेत पाकर वे चुप्पी लगा गये। डा० श्रीवास्तव के अनुसार इस समाचार प्रकाशन से बाबा बेहद नाराज भी हुए थे। उनका कहना है कि बाबा प्रायः सभी अखबार मंगाते थे तथा बड़ी गहराई से पढ़ते थे। वे मां काली के अनन्य भक्त व तांत्रिक विद्या के माहिर थे।

अब देखिये इन्हीं दुर्गा प्रसाद पान्डेय द्वारा भेजे गये पत्रों के कुछ अंश ! ये पत्र रामभवन में मौजूद हैं :—

Jai Hind !

You had been an Ex. I. C. S. of profound scholarship and far reaching commond over english mark with an enormously beautiful and elegent handwriting.

January 23rd was celebrated as your birthday. The most auspicious day of country when the immortal word 'Jai Hind' resounded.

Through and through all the flora and fauna on the Indian soil.......... I pledge to keep this secret as long as I am in the world. My pleasure is thy pleasure............

Durga Prasad Pandey
10-2-67

श्री पान्डेय द्वारा २१-२-६७ को लिखे दूसरे पत्र का अंश—

You are the wealth of our nation. So we should be allowed provision for preserving and maintaining your health where we will save our wealth against the Tyranny and mighty .... forces of .... time and tide.

—०—

नमो नेताजी सुभाषाय नमः

फैजाबाद होम्योपैथिक मेडिकल कालेज के प्रवक्ता डा० तोमर उस दिन पत्नी से खुटपुट होते ही घर से निकल पड़े और नित्य की भांति भगवन जी के पास चल दिये। लेकिन मन खिन्न होने के कारण सोचकर चले कि आज दस मिनट ही रुकेंगे, जबकि वहां जाने पर वे ५-६ घण्टे से पहले कभी न लौटते थे।

भगवन जी के पास जाकर बैठे ही थे कि बात ही बात में भगवन जी बोले— 'मातृ पक्ष से झगड़ा करना अच्छा नही होता। डा० तोमर का माथा ठनका कि यह बात भगवन जी ने किस सन्दर्भ में कही। बहरहाल दस मिनट अभी बीता भी नहीं था कि भगवन जी श्रीमती सरस्वती शुक्ला से बोले—'जगदम्बे झट से चाय बनाकर डा० साहब को पिलाओ, इन्हें तुरन्त घर जाना है।" डा० साहब चाय पीकर लौटते समय इस अज्ञात शक्ति के बारे में सोचने पर मजबूर थे।

रवीन्द्रनाथ शुक्ला उस दिन ज्यों ही भगवन जी को प्रणाम करके बैठे होंगे तो भगवन जी ने पूछा कि तुम्हारे पिताजी कहां गये हैं। उनके जबाब देने पर कि उनके पिताजी बिहार गये हुए हैं, बोले आज वे जिस ट्रेन से सफर कर रहे थे उनका एक्सीडेन्ट हो गया है लेकिन घबड़ाने की कोई बात नहीं है। क्योंकि उनको कुछ नहीं हुआ है। ठीक दस दिन के बाद श्री शुक्ला जी के पिताजी लौटकर जब आये तो उन्होंने बताया कि वे जिस नीलांचल एक्सप्रेस से सफर कर रहे थे, वह दुर्घटनाग्रस्त हो गयी थी।

श्री शुक्ला तो भगवन जी की आध्यात्मिक शक्ति से अत्यधिक प्रभावित हैं। उसका कारण यह है कि उनके पुत्र का पोलियो जब कहीं से नहीं ठीक हुआ तो वह भगवन जी की कृपा से ठीक हो गया था। उन्होंने बताया कि मात्र अंगूर के सेवन से कैंसर नहीं ठीक हो सकता, लेकिन मेरे एक रिस्तेदार को भगवन जी ने एक माह तक मात्र अंगूर सेवन करने की सलाह दी और वह ठीक हो गये।

पंडा रामकिशोर की पत्नी को जनेंद्रिय में कैंसर हो गया था, और भगवन जी के ही प्रयास से लखनऊ के विवेकानन्द पाली क्लीनिक अस्पताल में इलाज चल रहा था। ठीक होकर लौटने पर उन्होंने घर में बताया कि एक दिन अस्पताल में भगवनजी वहाँ आये थे और मेरी चारपायी के कई चक्कर लगा रहे थे। एक दिन भगवन जी

ने पंडाजी की पत्नी से पूछा—"कहो यशोमति मैया क्या तुमने मुझे अस्पताल में देखा था ?"

—"और क्या भगवन जी आप ही तो मेरे सिरहाने चक्कर............"

—"चुप्प ! चुप्प !" ये सब बातें किसी से कही नहीं जाती।

डा० आर० पी० मिश्रा सीतापुर अपनी आंख का आपरेशन कराने गये थे। जब कई दिन तक कोई समाचार नहीं आया तो उनकी पत्नी घबड़ायी हुई स्वामी जी के पास पहुँची और रोने लगी।

भगवन जी ने ढांढस बंधाते हुए कहा कि उसका आपरेशन हो गया है और दो चार दिन में आ जायेगा और जाओ उसका पत्र तुम्हारे घर पर आ गया है। श्रीमती मिश्रा लौटकर घर आईं तो देखा कि डा० मिश्रा का पत्र आया हुआ है और वही सब बातें लिखी हैं।

दीवाली के दिन डा० मिश्रा की पुत्री कु० गौरी मिश्रा को कनपटी पर चोट लग गयी थी और उस वजह से उसकी हालत खराब होती गयी तथा डा० मिश्रा के अनुसार उनकी लड़की मर गयी कि तभी उनका लड़का दौड़ा-दौड़ा भगवन जी को इसकी सूचना देने गया—भगवान जी ने उनके लड़के से कहा कि जाओ डा० मिश्रा से कहो कि वह लड़की मरी नहीं है, उसको किसी को छूने न दे। बल्कि स्वयं इलाज करें। डा० मिश्रा की पत्नी श्रीमती लक्ष्मी मिश्रा द्वारा पुलिस को दिये गए उपरोक्त बयान में उन्होंने बताया कि गौरी आज भी जिन्दा है।

कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव ने एक बार दो सौ किलोमीटर दूर किसी व्यक्ति से कोई बात की थी। कुछ दिन बाद लौटकर आने पर जब भगवन जी के पास गये तो उन्होंने उनके द्वारा कही गयी उस बात के लिए उन्हें डाँटा। श्रीवास्तव जी तब से खासकर भगवन जी के बारे में कहीं कुछ नहीं कहते थे।

पंडा राम किशोर ने उसी दिन मुझे बताया था कि भगवन जी कहा करते थे कि—"पूरा हिमालय मेरी नजरों के सामने हैं, मैं इस पर्वत की एक-एक पगडण्डी घूमा हूं।" भगवन जी ने बताया था कि वे तिब्बत (ज्ञानगंज) की उस तंत्रशाला में रहे हैं। जहां आज भी कई-कई हजार वर्ष की आत्मायें व शरीर हैं, जो तन्त्र के बल पर चलती व बोलती हैं।

पंडा जी जिन्होंने भगवनजी के जीवनकाल में कभी उनके कमरे में प्रवेश नहीं किया था, की बातें तब सही सिद्ध प्रतीत होने लगीं, जब वहाँ पर इटावा के सुरेन्द्र सिंह चौधरी का पत्र, तंत्र पर पुस्तकें, रुद्राक्ष मालायें, दक्षिणावृत्त शंख तथा एक कापी में कुछ मन्त्रों के समान लिखा था जैसे,........"मेरी आयु जीवन आज से और १००८ वर्ष........मेरी शरीर ७ फिट ९ इंच कद की कर दी जाये।"

डा० आर० पी० मिश्रा ने पुलिस को दिये गये लम्बे बयान के बीच यह भी बताया है कि भगवनजी के पास एक ऐसी रुद्राक्ष की माला थी जो बहुत ही जाग्रत अवस्था में थी और हर समय कट-कटाया करती थी और जब वह सुरा (शराब) में डाली जाती, तभी उसका कट-कटाना शान्त होता था। लेकिन वह माला कमरे में नहीं है।

उनके शिष्यों का मानना यह भी है कि भगवनजी इतने बड़े तांत्रिक थे कि एक साथ कई परकाया प्रवेश कर लेते थे। अयोध्या निवास के दौरान जब पंडाजी या महात्मा शरण इलाहाबाद जाते तो भगवनजी उन लोगों से माँ आनन्दमयी का हालचाल जरूर पुछवाते थे।

नैमिशारण में एक बार माँ आनन्दमयी भगवनजी से मिलने भी गयी थीं। (९ जनवरी १९८६ : नार्दन इण्डिया पत्रिका)

उन्हीं के निकटस्थ रहे शिष्यों की जबानी—"भगवनजी ने खुद बताया था कि जब वे लखनऊ प्रवास में थे तो वहाँ से रात्रि में कार में बैठकर सौ वर्ष पुराने एक शिव मन्दिर में जाकर नित्य रात्रि में काफी दिनों तक साधना करते थे। उस तंत्र साधना हेतु मुर्दे की आवश्यकता पड़ती थी, जिसकी व्यवस्था तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व० सम्पूर्णानन्दजी के आदेश से मेडिकल कालेज द्वारा होती थी।

साकेत महानगरी के 'रामभवन' में शरीर त्याग कर पवित्र पावन सलिला सरयू के पवित्रतम् गुप्तार घाट पर गुप्त होने वाले महान साधक, परम तांत्रिक, अद्वितीय राजयोगी के रूप में अपने भक्तों द्वारा पूजे जाने वाले गुमनामी जिन्दगी जी रहे इस राजयोगी के कक्ष से जहाँ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से सम्बन्धित अपार साहित्य मिला है वहीं पर दुनिया के विभिन्न विषयों के साथ तंत्र-मंत्र योग और धार्मिक साहित्य का भी काफी भण्डार है।

वहाँ पर "मिरैकिल्स आफ गाड" महाभारत के सब अंश, संस्कृत में दर्जनों पुस्तकें, प्लेन ट्रुथ अमरीकिन पत्रिकायें, शक्ति एवं शाक्त, लाइफ बियांड डेथ लेखक अभेदानन्द, मृच्छकटिकम व विवेकानन्द पर पुस्तकें व चित्र स्वामी रामतीर्थ व माँ व काली माँ का चित्र जिसकी वे पूजा करते थे। स्वामी प्रत्यागातमानन्द सरस्वती की पुस्तक "जप सूत्रम्" (दी साइंस आफ सरटेन साउण्ड) के अलावा वहाँ पर ऐसे विषयों पर हजारों पत्र-पत्रिकाओं कटिंग्स पाई गयी, जिनको देखने मात्र से लगता है कि वास्तव में वहाँ पर कोई सिद्ध राजपुरुष ही तपस्या कर रहा था।

World Peace Jai Netaji

Proof Copy

NAMO KRISNA NAMAH

NAMO
BUDDHAYA
NAMAH

●

NAMO
MAHAMMODAYA
NAMAH

NAMO
KSHRISTAYA
NAMAH

●

NAMO
SARBAYA
NAMAH

NAMO NETAJI SUBHASYA NAMAH

Friends,

You are requested to concentrate on the photo of Netaji Subhas Chandra Bose. there by get divine power and the miracle in your life. Your prayer will be :—

JAI NETAJI, TAKE OUR Everything and give truth of Universal Oneness to the suffering Humanity for lasting peace

JAI NETAJI.

Yours faithfully

उपरोक्त तरह का यह पम्पलेट 'राम भवन' में मौजूद है, जिसके एक कोने पर 'प्रूफ कापी' हाथ से लिखा है । इस पम्पलेट का हिन्दी भावार्थ कुछ इस तरह होगा—

"विश्व शान्ति, जय नेताजी !" नमो कृष्णाय नमः, नमो बुद्धाय नमः, नमो मुहम्मदाय नमः, नमो ख्रिष्टाय (क्षत्रायः) नमः, नमो सरभाया नमः, नमो नेताजी सुभाषाय नमः ।"

मित्रों, आपसे अनुरोध किया जाता है कि आप नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के चित्र पर अपना ध्यान केन्द्रित करें और उसके द्वारा अपने जीवन में दैवी शक्ति तथा रहस्य प्राप्त करें । आपकी प्रार्थना यह होगी— "जय नेताजी, हमारी प्रत्येक वस्तु आप ले लें और कष्ट पीड़ित मानवता की चिरंतन शान्ति के लिए सार्वभौम ऐक्य का सत्य हमें प्रदान करें—जय नेताजी !!!"

'गुमनामी बाबा' की सेविका श्रीमती सरस्वती शुक्ला

पं० राम किशोर मिश्र

(स्व०) डा० टी० सी० बनर्जी

NANDA MOOKERJEE

सामानों में प्राप्त एक पुस्तक की फोटो।

हिन्दी में बनी फिल्म 'सुभाषचन्द्र बोस' के पम्पलेट का मुख पृष्ठ

हिन्दी में बनी फिलम 'सुभाषचन्द्र बोस' के पम्पलेट का मध्य पृष्ठ ।

नेता जी कहाँ हैं...

जयपुर २९ अगस्त (वार्ता)। नेता जी सुभाषचन्द्र बोस अब कहाँ और किस स्थिति में हैं यह प्रश्न एक बार फिर राजस्थान उच्च न्यायालय में उभरा है।

इस प्रश्न को इस बार उभारने वाले हैं एक वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी आचार्य नन्द लाल शर्मा जिन्होंने उच्च न्यायालय में एक रिट के माध्यम से चाहा है कि इस मामले की जांच हो।

आचार्य शर्मा ने अपनी इस रिट की पुष्टि में कल उच्च न्यायालय में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की डायरी के कुछ भाग पेश किए।

उच्च न्यायालय अब कल इस बात का फैसला करेगा कि रिट को विचारार्थ स्वीकार किया जाना चाहिए या नहीं।

किसी समाचार पत्र में छपी खबर पर स्वामी जी द्वारा की गयी अन्डर लाइन

२५ मई १९८५ के 'The Pioneer' पर स्वामीजी द्वारा लिखी इबारत

C/o Dr. Satya Pal Bagga. Manjul Manjan Karyalaya Etawah.

इटावा के राजा सुरेन्द्र सिंह चौधरी द्वारा लिखित (पत्रांश : २ पृष्ठ : ४१)
की फोटोकापी

२५ मई १९८५ के 'The Pioneer' पर स्वामीजी द्वारा लिखी इबारत

आखिर वे थे कौन ?

अब बात आती है कि गुमनामी बाबा थे कौन ? और अगर वह नेताजी थे तो क्यों छिपे हुए थे ? इसी के साथ ही साथ २८ अक्टूबर के बाद से जनता व अखबारों के द्वारा कई सामान्य से सवालात उठाये गये। आइये हम उनपर एक-एक कर विचार करें।

सबसे पहला सवाल स्थानीय एक अन्य दैनिक ने उछाला कि वह कोई के० डी० उपाध्याय थे जो किसी की हत्या करने के बाद गुप्त रूप से रह रहे थे। बहरहाल इसका प्रतिवाद करते हुए लोगों ने के० डी० उपाध्याय के बारे में और तथ्य ढूंढ़ निकाले और पुलिस ने भी इस स्टोरी को नहीं माना। अब उनका कोई नाम दिये जाने के पहले हर अखबार वाला, पुलिस व प्रशासन सचेत हो चला। क्योंकि अगर उनका कोई नाम दिया जाता है तो यह भी साबित करना होगा कि उनके पिता व बाबा का नाम व पता, उनका घर व रिश्तेदार पता-ठिकाना पहले क्या था, बताना होगा और उसको प्रमाणों से सिद्ध करना होगा तथा आज के सारे सूत्रों से जोड़ना भी होगा।

अर्थात अब यह बड़ी टेढ़ी खीर हो चली है कि उस शख्स को कोई भी अलम-गलम नाम देकर पूरे प्रकरण को शान्त कर दिया जाय।

अब इधर जब रामभवन से प्राप्त नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से सम्बन्धित प्रकाशित साहित्य के अपार भण्डार की जानकारी जगजाहिर होने लगी तो लोगों ने कहा कि वह व्यक्ति जरूर कोई नेताजी का करीबी या भक्त रहा होगा। फारवर्ड ब्लाक पार्टी के प्रमुख प्रवक्ता दिल्ली से प्रकाशित समाचार पत्र जन-गर्जन (मासिक) के सम्पादक श्री देवदत्त शास्त्री ने नव० ८५ के अपने सम्पादकीय तक में लिखा कि—"अयोध्या जिला फैजाबाद में एक बंगाली साधु रहा करते थे—वे विरक्त थे, पर जवानी के दिनों में वे 'नेताजी' के न केवल भक्त थे, बल्कि उनके सहकर्मी थे। लखनऊ से प्रकाशित 'नवभारत टाइम्स' ने भी कहा कि "........वह व्यक्ति कोई महत्वपूर्ण जासूस या फिर नेता सुभाषचन्द्र बोस का अन्ध समर्थक कोई आनन्दमार्गी था। (५-१-८५)

उपरोक्त बातों के आधार पर अब अगर यह माना जाये कि वह व्यक्ति नेताजी का कोई अंधभक्त सहकर्मी था तो समझ में नहीं आता कि वह खुद को क्यों छिपाये रखता था। फिर नेताजी से सम्बन्धित साहित्य में अभी तक किसी बंगाली या व्यक्ति विशेष का नाम नहीं आया, जो इस तरह इतिहास से अचानक गायब हो गया हो। फिर दुनिया में ऐसा कौन किसी का भक्त होगा कि उसका जन्मदिन भी वही हो तथा जन्म समय भी वही हो और पी० एम० राय जैसे अनेकों बंगाली उस दिन उसका जन्मदिन मनाने वहाँ पहुँच जाते हों। या फिर देवदत्त शास्त्री की बात मान ली जाये कि वह ठीक उन्हीं की उम्र का उनका कोई सहकर्मी था तो शास्त्री जी को उसका नाम बताने में हर्ज क्या था लेकिन कोई ऐसा आदमी हो तो बताये ? ऐसा कोई नाम आज तक इतिहास की पकड़ में भी नहीं आया है। और फिर उस व्यक्ति का भी तो कोई अपना नाम पता-ठिकाना रहा होगा। जिसे कम से कम सरकार तो ढूढ़ ही निकाल सकती है। लेकिन सरकार भी उस व्यक्ति को कोई 'नाम' देने से कतरा रही है।

शौलमारी वाले बाबा ने भी कहा था—"मैं वह प्राणी नहीं हूँ जिसे अचानक आसमान से डाला गया हो। निश्चित ही मेरा कुछ पूर्व का इतिहास है।" ठीक इसी तरह गुमनामी बाबा का भी पूर्व का कुछ इतिहास होगा ? आखिर पता तो चले कि यह बाबा कौन थे। देश में आज कौन सा दूसरा गुमनामी व्यक्ति या साधू है जो पुलिस की नजरों से बचा हुआ है ? और तब जबकि विगत बीसों वर्षों में उसके बारे में दर्जनों पुलिस अधिकारियों व जिलाधिकारियों ने पता लगाने की ठानी हो।

सुनने में तो यहाँ तक आता है कि गुमनामी बाबा अयोध्या, बस्ती नैमिषारण्य लखनऊ व इटावा आदि जिन भी स्थानों पर रहे हैं उसका पूरा रिकार्ड पुलिस के पास सुरक्षित है पुलिस रिकार्डों में यह भी अंकित है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी भी एक बार उनसे मिलने गयी थी और मिलकर लौटने पर उन्होंने कहा था कि वे नेताजी नहीं हैं। आखिर इन्दिराजी को उनसे मिलने की जरूरत ही क्यों आन पड़ी ? यह भी एक रहस्य है ?

बस्ती प्रवास के दौरान एक प्रत्यक्षीदर्शी ने बताया कि उसने खुद नेहरू व इन्दिराजी को बाबा से मिलने आते देखा है। लेकिन वह सरकारी कर्मचारी नाम बताने से डर रहा है।

अब जासूस या सी० आई० ए० वाली बात पर गौर करके देखते हैं। पहली बात जो यह है कि दसियों पुलिस वालों व दसियों गवाहों को उस कमरे में सामानों की सूची बनाते समय एक भी ऐसा संदिग्ध सामान नहीं मिला है, जिससे यह साबित हो सकता है कि वह व्यक्ति देशद्रोही या जासूस था। हाँ वहाँ पर एक दो पत्र ऐसी भाषा में लिखे मिले हैं जो वहाँ की किसी भी स्थिति से मेल नहीं खाते हैं लेकिन वह पत्र स्वामी जी को सम्बोधित न होकर किसी 'चाची' जी के नाम सम्बोधित है। जिसमें किसी तिवारी ग्रुप के आदमियों के मारे जाने व पकड़े जाने के बारे में लिखा है।

हमारे बस्ती सम्वाददाता 'उपेन्द्र' ने जब गोरखपुर क्षेत्र के मशहूर विधायक श्री वीरेन्द्रशाही से 'गुमनामी बाबा' के बारे में पूछा तो वे बस इतना कहकर रह गये कि मैं उन्हें बस्ती प्रवास के दौरान से ही जानता हूँ! वैसे इस बात के संकेत भी मिलते हैं कि और भी कई मशहूर व्यक्ति 'गुमनामी बाबा' को पूजते थे। भगवान के मन्दिर में किसी को भी जाने की मनाही नहीं होती है।

और फिर कोई व्यक्ति इस तरह रहकर किसके लिये जासूसी कर रहा था इसका कोई तो प्रमाण सामने आना चाहिये था? या फिर वह कोई 'महान' जासूस था तो हमारी सरकार क्या कर रही थी? इन प्रश्नों का कोई उत्तर है किसी के पास?

कई लोगों ने उन्हें स्मगलर तक कहा है। बड़ी मोटी सी बात है। स्मगलिंग धन-दौलत के लिये की जाती हैं। और धन एशो-आराम के लिये आदमी चाहता है। लेकिन 'गुमनामी बाबा' ने गुजारे बीस सालों में अयोध्या, फैजाबाद या नैमिषारण्य में किस तरह की जिन्दगी बिताई—देखकर हैरत होती है! लखनऊवा मन्दिर में बिजली नही थी, मच्छरों का राज था। पानी का नल नहीं था! आखिर वह कौन सी तस्करी होती है जिसे आदमी करते हुए भी जिन्दगी के एशो-आराम कौन कहे—जरूरीयात की चीजों के लिए भी तरसता रहे?

नवभारत टाइम्स (७-१-८६) की इस बात का क्या अर्थ निकाला जाये—"बाबा स्वयं को सुभाष चन्द्र बोस साबित करना चाहते थे इस बात की पुष्टि इससे होती है कि वह बराबर दूरदराज के अपने शिष्यों को पत्र लिखकर इस

बात का पता लगाते थे कि यदि सुभाषचन्द्र बोस जनता के सामने चमत्कारिक रूप से पैदा हो जायें तो उनके साथ कैसा सलूक करेंगे । इसका भारतीय राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ेगा । इस तरह बाबा द्वारा सर्वेक्षण कराने के कई पत्र तलाशी के दौरान उनके कमरे से बरामद हुए हैं।"

इसका मतलब तो यह हुआ कि ऐसा नेताजी ही स्वयं के लिये कर सकते थे । और अगर कोई दूसरा व्यक्ति ऐसा कर रहा था, तो उसे जरूर नेता जी का पता होगा कि वह कहां हैं ? तो, फिर तो जरूरी हो जाता है कि उस व्यक्ति से पूछा जाये कि नेता जी कहां हैं ? लेकिन वह व्यक्ति शरीर छोड़ चुका है । अब तो उसके सामानों को ही ठीक से जांचा परखा जाना चाहिए। वहां पर जरूर कुछ ऐसे सूत्र उपलब्ध होंगे ही ।

इसी पत्र के अनुसार—"बाबा के पास अपना वायरलेस सेट भी था ?" अर्थात वह जब कहीं बात करते होंगे तो जरूर पुलिस की रेडियो वेव में उसका संकेत मिलता रहा होगा ?

उस दिन मेरे सामने भारतीय गुप्तचर सेवा के एक वरिष्ठ एवं बुजुर्ग अधिकारी ने बड़ी आत्मग्लानि से कहा—"मुझे तो गोली मार दी जानी चाहिये। आखिर इतने बड़े-बड़े काम करने के बाद भी मैं इनके बारे में क्यों नहीं कुछ जान पाया।"

बहरहाल यह सब कहना कि वे जासूस, सी० आई० ए० एजेण्ट, तस्कर थे । दिमागी वहशीपन के अलावा कुछ नहीं है । क्योंकि कहने वाले कम से कम सूई की नोक के बराबर एक सबूत तो देते ! और उन्हें नेताजी के करीबी या अंधभक्त या सहकर्मी भी तभी माना जा सकता है, जबकि उस व्यक्ति का नाम पता ठिकाना व पूर्व का इतिहास सामने आये । लेकिन ऐसा मानने व कहने वाले लोगों के हाथ भी उनके मतलब का कोई सबूत नहीं मिल पा रहा है ।

एक प्रश्न और उभरता है कि वह अगर नेताजी का भक्त होता तो नेताजी के जीवन से सम्बन्धित साहित्य रखता—वह उनके माता-पिता के दर्जनों चित्र व उनके बचपन के दर्जनों चित्र क्यूंकर रखेगा ? क्यूंकर वह उन्हीं की तरह का गोल चश्मा पहनेगा ? क्यूंकर वह उन्हीं की तरह गोल घड़ी रखेगा ! क्यूंकर उनकी खाने-पीने से से लेकर चिन्तन तक की प्रक्रिया को अपनायेगा ! ऐसा

विचित्र मानव अभी तक तो विश्व इतिहास में दूसरा नहीं दिखा है ? और फिर अगर यह मान भी लिया जाये कि वह इन गुणों से अभिभूषित था, तो वह भी स्वयं देश का एक सपूत रहा होगा। आखिर उसके बारे में भी जनता को जानने का हक होना चाहिए कि वह गुमनामी सितारा कौन था ?

यह सही है कि 'गुमनामी बाबा' ने कभी अपने को सीधे सुभाष चन्द्र बोस नहीं कहा। लेकिन उनके शिष्यों का कहना है कि वे जब भी बीते इतिहास में सुभाष चन्द्र बोस का किस्सा सुनाते थे तो स्पष्ट कहा करते थे कि—

—"जर्मनी में हिटलर फुरसत के क्षणों में एक पहाड़ी पर बैठकर वायलिन बजाता था। वहां पर किसी को भी जाने की अनुमति नहीं होती थी। लेकिन 'यह शरीर' वहीं हिटलर से मिला था।"

बाबा ने अपने शिष्यों से बात करते समय अधिकतर 'यह शरीर' का ही इस्तेमाल नेताजी के लिये किया है।

उन्होंने अनजाने में ही अपने अनगढ़ शिष्यों को उस क्रांतिकारी इतिहास के ऐसे किस्से सुनाये हुए हैं, जिन्हें जानने के लिए शायद दुनिया को अभी वक्त लगेगा। जापान की सरकार ने किस प्रकार 'आजाद हिन्द सरकार' के धन की वापसी हिन्दुस्तान को थी ? यह बात आज भी रहस्यों के घेरे में है। किस प्रकार शहनवाज खां ने गद्दारी की ? किस प्रकार नेताजी के विमान दुर्घटना वाली बात असत्य है ? अनीता बोस आखिर में कौन हैं ? बाबा को किस लड़ाई में घण्टों घुड़सवारी करने के कारण पाइल्स (बवासीर) हुई थी ? ऐसे सैकड़ों किस्से इन शिष्यों को बाबा ने सुनाये हुए हैं जिन्हें इतिहास खोज रहा है।

क्या फैजाबाद के मशहूर व संभ्रांत वयोवृद्ध बंगाली डा० टी० सी० बनर्जी पागल थे जो हर करीबी को बताया करते थे कि नेताजी जीवित हैं। उनकी पत्नी ने जब बाबा को देखकर पहचानने की जिद की तो क्या देखा उन्होंने मालुम है ?

—"तुम मुझे देखकर कैसे पहचानोगी ?"

बाबा ने पूछा था।

—श्रीमती डा० बनर्जी ने देखने के बाद कहा था "आपका चेहरा मुझे याद है आप सन् १९३८ में लखनऊ में ए० पी० सेन रोड पर सेन दादा के यहाँ आये थे। मैंने वहाँ पर आपको देखा व सुना है।"

—बाबा ने दर्शन देने के बाद घटना सुधारी थी "सन् ३८ नहीं ३९ था!"

और तभी से बनर्जी परिवार का अन्दर आना जाना लगा रहा। डा० बनर्जी इतने बड़े रहस्य को पचा नहीं पा रहे थे उन्होंने लोगों से कहना शुरू किया। बाबा नाराज हो गये और लगभग दो वर्ष तक उन्हें अपने पास फटकने नही दिया। डा० बनर्जी तड़प कर रह गये।

अब आप ही बताइये कि वह कौन सा ऐसा सन्त व साधू या क्रांतिकारी था जिसे नेताजी समझकर पवित्र मोहन राय उसके पास दौड़ आते थे? अरे भई अगर उन्हें विश्वास हो चला था कि वे नेताजी नहीं हैं तो क्यूंकर उनको सामान भेजते थे? उनका आदेश पालन करते थे? उनके शरीर छोड़ने तक यहां के शिष्यों के लिए आखिरी सूत्र बने रहे? वहीं बतायें कि वह कौन था?

—०—

लेकिन नहीं। डा० पवित्र मोहन राय नहीं बतायेंगे? बतायें भी तो कैसे? बता भी दें तो क्या आप मान लेंगे? क्या सबूत नही मांगेंगे? क्या सैकड़ों सवालात नहीं पूछेंगे? और पूछना भी चाहिये! लेकिन जरा सुभाष पर लिखे जा रहे साहित्य पर भी थोड़ा सा गौर करें तो आपको लगेगा कि यह बात आज भी विश्व के महानतम रहस्यों में से एक है।

कहा जाता है कि नेताजी का नाम युद्ध अपराधियों में अंकित है और प्रगट होने पर उन्हें किसी करार के तहत इंग्लैण्ड को सौंपना होगा।

साप्ताहिक पत्रिका 'रविवार' २२ जनवरी १९७८ में प्रकाशित तारापद बसु के लेख का अवलोकन करें—

"ब्रितानी सरकार" ने पिछले साल, 'ब्रिटेन और भारत के संवैधानिक संबंध' का छठा खन्ड प्रकाशित किया, ... (जिसमें प्रकाशित एक पत्र)—

टॉप सीक्रेट

२८ जुलाई १९४५

प्रिय मूडी,

'महामहिम ने अभी-अभी यह फरमाया है :

'एस० सी० बोस का क्या किया जाये, इस पर हमें सोचना है। अगर जापानियों ने आत्मसमर्पण कर दिया, तो हम स्पष्टतः मांग करेंगे कि बोस हमें सुपुर्द कर दिये जायें। पर उसके बाद क्या हमें उन पर भारत में ही मुकदमा चलाना चाहिए और अगर हां, तो किस तरह की अदालत में? उनके मुख्य सहयोगियों का सवाल है।

............वे बड़े युद्धापराधियों में एक हैं और उन्होंने भारत का जितना अहित किया है, उतना ही महामहिम की सरकार का भी!

आपका विश्वस्त
ई० एम० जेंकिन्स

—०—

अब इस पत्र के जबाब में तत्कालीन वायसराय लार्ड वावेल ने गृह विभाग से 'सुभाष चन्द्र बोस के साथ सलूक' के सिलसिले में जो कदम उठाये जाने चाहिये उन पर एक 'नोट' एटली सरकार द्वारा अनुमोदनार्थ तैयार करने को कहा। ....गृह विभाग ने निम्नलिखित सुझाव दिल्ली और लन्दन की सरकार के अनुमोदनार्थ पेश किये :

(क) उन्हें भारत ले आना और उन पर युद्ध में भाग लेने के लिए या शत्रु के एजेण्ट वाले अध्यादेश के अन्तर्गत मुकदमा चलाना,

(ख) बर्मा या मलाया में उस देश के सम्राट के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के लिए उन पर मुकदमा चलवाना,

(ग) उनपर भारत के बाहर किसी सैनिक अदालत द्वारा मुकदमा चलाना।

(घ) उन्हें भारत में नजरबन्द रखना।

(च) उन्हें किसी अन्य ब्रितानी उपनिवेश (जैसे सेशेल्स द्वीप) में नजरबन्द रखना तथा

(छ) बोस जहाँ हैं, उन्हें वहीं रहने देना और समर्पण की मांग नहीं करना।'

............श्री मूडी (होम मेम्बर) ने सुझाव दिया कि 'बोस के साथ सलूक' बाबत सर्वोत्तम मार्ग यही होगा कि........ 'वे जहाँ हैं उन्हें वहीं छोड़ दिया जाये और समर्पण या रिहाई की मांग न की जाये। क्योंकि—

"किन्हीं खास स्थितियों में रूसियों द्वारा उनका निश्चिततः स्वागत हो सकता है।"

............लार्ड वावेल इस 'नोट' को एटली मंत्रिमण्डल के सामने रखने खुद ले गये। इसे ब्रितानी सरकार ने नेताजी की विमान दुर्घटना की रिपोर्ट के ६७ दिन बाद अनुमोदित किया।

............ब्रितानी सरकार ने ऊपर-ऊपर से ऐसी मुद्रा बनाये रखी मानो वह नेताजी को मृत मानती हो, पर अन्दर अन्दर उसने जो नीति अख्तियार की वह थी 'बोस जहां हैं, उन्हें वहीं छोड़ देना और समर्पण या रिहाई की मांग नहीं करना।' (वही 'रविवार')

उपरोक्त बातों से साफ-साफ जाहिर है कि नेताजी सुभाषचन्द्र अंग्रेजों के लिए एक युद्ध अपराधी हैं और प्रगट होने पर आज भी इंगलैंड उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय कानून के तहत गिरफ्तार करके सजा देगा। जैसे कि हिटलर का एक ९१ वर्षीय साथी रुडोल्फ हेस ४२ साल से बर्लिन की एक खास जेल स्पैण्डाउन में चार देशों—अमरीका, रूस, इंगलैण्ड और फ्रांस की निगरानी में रखा गया है। इन चारों देशों को उसके मरने का इन्तजार है। वैसे जेल में उसका ताबूत तैयार रखा है। और उसके मरने के बाद उसकी राख तक का सुराग नहीं मिलेगा। और ठीक इसी तरह हिटलर के एक साथी 'आइसमैन' को इजरायल की गुप्तचर सेवा 'मोसाद' ने २५ वर्षों की लगातार खोज के बाद पकड़कर फाँसी पर चढ़वा दिया।

कहा तो यह जाता है कि दुनिया में हिटलर की अभी भी तलाश जारी है।

कुछ बात तो जरूर है, नहीं तो राजीव गांधी जैसा द्रुतगति से देश की समस्याओं को निपटाने वाला प्रधानमंत्री एक ओर तो देश की सांस्कृतिक थाती को मजबूत करने के नाम पर स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस १२ जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस मनाये जाने की घोषणा करे, और वहीं जब २७ नवम्बर १९८५ को वियतनाम तथा जापान गये तो वहां पर उन्होंने उस महान सपूत को क्यों नहीं याद किया। जहां के देशवासी आज भी नेताजी का नाम इज्जत के साथ लेते हों। जरूर कोई राज या कशिश रहती होगी? क्या है वह राज? कौन सी है वह कशिश? शायद २१ वीं सदी के पहले हम उसे जान भी नहीं सकें और इक्कीसवीं सदी में शायद राजीव गांधी स्वयं ही इस रहस्य को उजागर करें? वैसे भी श्रीमती इन्दिरा गांधी का अपने प्रधानमंत्रित्व काल में अक्सर यह कहना था कि "हम जिस आजादी के लिए लड़े थे वह अभी तक हमें नहीं मिली है। हमारी आजादी अधूरी है।"

(जनगर्जन : नव० ८५)

वह कौन सा समझौता है जिसके बारे में भारत के अन्तिम गर्वनर जनरल लार्ड माउन्ट बेटन के प्राइवेट सेक्रेटरी मिस्टर लियोनार्ड मोसले की पुस्तक Last day's of British Rule in India की प्रस्तावना में लिखा है कि १५ अगस्त १९४७ को जो संधि या समझौता कांग्रेस के नेताओं ने अंग्रेजों से सत्ता परिवर्तन के समय किया, उसकी जानकारी भारतीय जनता को सन् २००० के बाद होगी।'

"Leonard Mosley ने लिखा है : Official documents dealing with the transfer of power in India will not be officially released untill 1999."

(शैलेश डं)

और तभी शायद भारत मजबूरन (?) कामनवेल्थ आफ नेशन का सदस्य है।

श्री रामनारायन आर्य मिशनरी की पुस्तक Freedom of India a big hoax (हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता एक बड़ा धोखा) के अनुसार—'इन साइक्लोपिडिया ब्रिटानिका' के 1953 के संस्करण में जैसा कि आज-कल 'इम्पायर का पर्यायवाची कामनवेल्थ आफ नेशन से है, यह शब्द पूरे ब्रिटिश इम्पायर का अर्थ प्रकट करता है। इसी पुस्तक के १९५५ के संस्करण में ब्रिटिश कामन वेल्थ' ताज की समस्त सीमाओं के प्रधान का दूसरा नाम बताया गया है। अब इसका नाम कामनवेल्थ या राष्ट्रों का कामनवेल्थ कर दिया गया है। मिस्टर K. C. Whear के अनुसार कामनवेल्थ ब्रिटिश इम्पायर के नये नाम के रूप में स्वीकार किया गया है और 'दि इयरबुक आफ ब्रिटानिका १९६१' में कामनवेल्थ आफ नेशन स्वतन्त्र और परतन्त्र अथवा अर्ध-परतन्त्र देशों की सीमाओं से मुक्त देशों जो कि पुराने सम्पूर्ण ब्रिटिश प्रभुत्व के हैं को 'कामनवेल्थ आफ नेशन' कहा गया है।

२६ जनवरी १९५० को भारत ब्रितानी सरकार द्वारा, जैसा कि हाउस आफ कामन्स में २० अगस्त १९४७ की नीति थी, गणराज्य घोषित किया गया है— भारत गणतांत्रिक सरकार निम्नांकित शर्तों में बंधी रहेगी।

(१) यह सरकार भारत में सम्पूर्ण सदस्यता के साथ कामनवेल्थ के राष्ट्रों से सम्बद्ध रहेगी।

(२) अपनी स्वीकृति ब्रितानी साम्राज्य के प्रतीक के रूप में, स्वतन्त्र राष्ट्र सदस्य के रूप में, तथा कामनवेल्थ के प्रधान के रूप में देती रहेगी।

(३) मुक्त एवं दूसरे सदस्यों के समान कामनवेल्थ का सदस्य रहेगी तथा शान्ति के लिये उसे सहयोग देती रहेगी।

और पण्डित नेहरू ने संसद में यह कहकर इसकी पुष्टि की थी —'हमने कामनवेल्थ के साथ अपने को इसलिए जोड़ा है क्योंकि हम सोचते हैं कि यह हमें विशेष कारणों जैसे विश्व शान्ति को आगे तक बढ़ाना है।'

(नेताजी रहस्यों……पेज १०३)

क्या यही सब तो कारण नहीं हैं जिसके तहत नेताजी के प्रकट होने के बाद भी भारत सरकार उनके स्वागतार्थ कोई गजट नहीं करा सकती। और इसके लिए उसे 'हिज मैजेस्टी' को प्रार्थना-पत्र देने की आवश्यकता पड़ती और जिसे कामनवेल्थ ब्रितानी क्राउन कभी स्वीकार नहीं करता ?

एक बार श्री जी० के० रेड्डी ने पूछा कि—

"महोदय, मुझे जानना चाहिए कि हम लोग कैसे विदेशी साम्राज्य के प्रति अप्रत्यक्ष रूप निष्ठा व्यक्त करें जब कि हम अपने सविधान के प्रति सच्ची निष्ठा रखते हैं ? क्या यह सविधान का उलंघन नहीं है ? इसका उत्तर भूतपूर्व गृहमंत्री श्री कैलाश नाथ काटजू ने इस प्रकार दिया, "हममें से प्रत्येक भारतीय संविधान के प्रति निष्ठा के लिए ऋणी है लेकिन तब भी सविधान से अलग हम एक समझौते से सम्बद्ध हैं और उसका यह परिणाम है कि इंग्लैण्ड की महारानी कामनवेल्थ देशों की प्रतीकात्मक प्रधान हैं जिसका गणतांत्रिक भारत एक सदस्य है पवित्रता का प्रश्न नहीं उठता।' (नेताजी रहस्यों..........पेज १२२)

तो क्या यही कारण था कि पिछली बार भारत के प्रधानमन्त्री के रूप में श्री राजीव गांधी के इङ्गलैण्ड जाने पर इङ्गलैण्ड की प्रधानमन्त्री जब उनके स्वागतार्थ हवाई अड्डे पर अगवानी करने पहुंची तो देश के सभी समाचार पत्रों ने छापा था कि ब्रिटेन की प्रधानमन्त्री ने परम्पराओं को तोड़कर हवाई अड्डे पहुंचकर राजीव गांधी की अगवानी की ? ये कौन सी परम्परा थी ? जो तोड़ी गई ! जबकि दुनिया में ये सामान्य सा नियम ही बना हुआ है कि एक देश के प्रधानमन्त्री के आने पर उस देश का प्रधानमंत्री ही अगवानी करता है।

महात्मा गांधी को नेताजी की हवाई दुर्घटना वाली मृत्यु सम्बन्धी खबर पर कतई विश्वास नहीं था। वे कहा करते थे कि 'मुझे विश्वास है कि सुभाष जीवित हैं। समय आते ही वह आयेगा।' और तभी बापू ने नेताजी के घर वालों को सदेश भेजा था कि उनका श्राद्ध-कर्म आदि न किया जाये।

यहां तक कि बाद में कर्नल हबीबुर्रहमान से घटना का विवरण सुनकर भी गांधीजी अपने विश्वास पर अटल रहे। उस समय के विख्यात जननेता श्री शशांक शेखर सान्याल के शब्दों में—

'दिल्ली के क्वीन्स-वे में आजाद हिन्द सरकार के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की बैठक हुई। कर्नल हबीबुर्रहमान के साथ गांधी जी से मिलने की व्यवस्था की गयी है। कर्नल वक्ता, महात्मा जी प्रमुख श्रोता।

कर्नल ने बड़ी बारीकी से घटना का वर्णन किया। पूरी बात सुनकर गांधीजी ने कहा—'और क्या बात है, बताओ ?'

कर्नल चुप रहे। सिंह गरज उठा—"तुम्हारी एक भी बात पर विश्वास नहीं करता हूं—सुभाष नहीं मर सकता है।" (मैं सुभाष : पेज २३४)

'जरूर इसके पीछे और भी कुछ रहस्य था जिसे एक मात्र प्रत्यक्षदर्शी हबीबुर्रहमान ही बता सकते थे। परन्तु वे ठहरे आजाद हिन्द फौज के सिपाही। कर्तव्य-भ्रष्ट वे कभी नहीं हो सकते थे। क्योंकि गांधीजी के सामने भी उन्हें टस से मस नहीं किया जा सका था। भूलाभाई देसाई जब मृत्यु शैय्या पर थे तब कर्नल को देखकर कातर स्वरों में यही पूछते रहे थे—'बताओ कर्नल, क्या सुभाष जीवित हैं ?'

उस दिन मृत्युपथ यात्री से कर्नल ने कहा था........ 'मैं सैनिक हूं। हमें आदेश का पालन करना पड़ता है।'

उस दिन या बाद में भी कोई कर्नल को डिगा नहीं सका था। वे अपने सैनिक जीवन के आदर्शों से हटे नहीं। अटल रहे।

(मैं सुभाष : पेज २०७)

कहा जाता है कि १९४८ में जब भूतपूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली डा० राधा कृष्णन दार्शनिक प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में मास्को गये थे तो वहां उनकी नेताजी से मुलाकात हुई थी। उन्हें १५ फरवरी १९७१ को मद्रास में कमीशन के सामने गवाही देने के लिए सम्मन भी जारी हुआ था लेकिन उनका बयान लिये बगैर १९७१ की जनवरी के अन्तिम सप्ताह में ही खोसला आयोग ने जांच का परिणाम घोषित कर दिया ! आखिर क्यों ? इसी तरह रूस में भारत

की राजदूत श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित ने १९५९ में भारत लौटने पर बम्बई में कहा था—'मैं अपने साथ ऐसी सूचना लाई हूँ जो देश को आश्चर्यचकित कर देगी और उससे प्राप्त होने वाला आनन्द उस आनन्द से कई गुना अधिक होगा जो आजादी मिलने पर हुआ था।' वह उस सभा में इतना ही कह पाई थीं, फिर भी उन्हें आगे बोलने नही दिया गया था। श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित क्या सूचना लाई थीं ? आज तक कोई नहीं जान पाया !

बाद के दिनों में श्रीमती पण्डित का नेहरू परिवार की राजनीति से काट दिया जाना अब सारगर्भित लगता है।

कुछ खास वर्ग के लोग एक बहुत ही भोला सा प्रश्न और उछालते हैं कि दो-दो बार की जांच में यह स्वीकार कर लिया गया कि नेताजी मर गये हैं तो अब फिर से कोई जांच बैठाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

बड़ी मोटी सी बात मैं उनकी बुद्धि में बैठाना चाहूँगा। महोदय जब सरकार ने एक जांच (शाहनवाज कमीशन १९५६) बैठाकर रिपोर्ट प्रकाशित कर दी कि नेताजी मर गये हैं, तो फिर उसी पर सरकार अटल क्यों नहीं रह सकी ? अर्थात जब सरकार को विश्वास हो गया होगा कि शाहनवाज कमीशन झूठा है तभी तो उसने दूसरी जांच (खोसला कमीशन १९७१) बैठाई। अब अगर एक बार रिपोर्ट देने में गलती हो सकती है तो क्या दूसरी बार नहीं हो सकती है ?

वैसे ५५५० पृष्ठों की खोसला कमीशन की रिपोर्ट में जिन जी० डी० खोसला महोदय ने नेताजी को जापानियों की 'कठपुतली', 'शतरंज की मोहरें', 'शत्रुपोषी' आदि कहा है, वही खोसला महोदय नेताजी की जांच पर अपना फैसला देने के पूर्व ही श्रीमती इन्दिरागांधी की जीवनी लिखकर प्रकाशित करा चुके थे। वाह रे स्वामी (सरकार) भक्ति ?

वैसे खोसला आयोग के ही कुछ निष्कर्ष यह साबित करते हैं कि जरूर नेताजी व नेहरू जी के आपसी सम्बन्ध कटु रहे होंगे तथा सरकार ने जांच में कुछ कारीगरी दिखाई होगी वरना आयोग क्यों लिखता कि—"नेहरू और बोस के

के घनिष्ठ सम्बन्धों में संदेह करने की कोई गुंजाइश नही है........ ऐसे संकेत नहीं मिले जिससे वर्तमान सरकार द्वारा आयोग के काम में अड़चन डालने, किसी प्रमाण को दबाने या छिपाने की कोशिश करने का सन्देह हो।"

वैसे खोसला कमीशन का यह लिखना कि..........."१९४५ के बाद बोस से हुए मुकाबलों (साक्षात्कार) के किस्से बिल्कुल निराधार है। वे कोरी कल्पनायें हैं।" कहाँ तक सही माना जा सकता हो जब उसने डा० राधाकृष्णन व श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित जैसे लोगों की गवाही ली ही न हो।

श्री खोसला ने ताईहोकू हवाई अड्डे तथा दाहगृह का निरीक्षण किये बिना ही रिपोर्ट में लिखा है कि उन्होंने अड्डे तथा दाहगृह का निरीक्षण किया। और तो और श्री खोसला ने प्रिंस होटल में यह कहा कि वे उन्हीं लोगों से मिलना चाहते हैं जो नेताजी के मृत्यु के विषय में पुष्टि करें।

(नेताजी रहस्यों : ५१)

नेताजी की मृत्यु के सम्बन्ध में शाहनवाज कमेटी की रिपोर्ट रद्द होने का कारण शायद यह भी रहा हो कि उक्त कमेटी के समक्ष नेताजी के अन्तिम साथी कहलाये जाने वाले कर्नल हबीब-उर-रहमान के वक्तव्यों (६–४–५६) में भिन्नता थी ! मुलाहिजा फरमायें—

—'मैं उस कमरे में पूरी रात बैठा रहा क्योंकि गर्मी बहुत थी और मैं सो न सका। उनका शरीर वहाँ था और जापानी संतरी उसकी सुरक्षा कर रहे थे।' फिर वह आगे कहते हैं—'चिता का दरवाजा ताले से बन्द कर दिया गया और पूरी रात चाबी मैंने अपने पास रखी दोपहर ठीक ११ बजे से १२ बजे के बीच हुआ।"

(नेताजी रहस्यों.......से)

इसी तरह शैलेश डे ने 'मैं सुभाष बोल रहा हूँ' में कर्नल हबीब-उर-रहमान के बयान का जिक्र करते हुए लिखा है — (पेज ३०४)

—'नेताजी के सिर में चार इंच लम्बा एक घाव हो गया था। खून रोकने के लिए मैंने रुमाल से उनके घाव को दबा रखा था।

ठीक इसकी उल्टी बात अस्पताल के डाक्टर जोशिमी ने कही—'नहीं तो, उनके सिर पर कोई घाव नहीं था। रहता तो मैं अवश्य ही देखता। उस दिन मैंने ही उनका इलाज किया था। मैंने केवल कुछ इंजेक्शन लगाये थे।

'इंजेक्शन ?'

सारा खेल ही बिगड़ गया नर्स सिस्टर छानपीसा के बयान से—'बेकार की

बात है। उनका शरीर इतना जल गया था कि इंजेक्शन लगने भर की जगह ही नहीं थी।'

अब डा० जोशिमी के अपने बयानों में अन्तर देखिये (नेताजी....रहस्यों से)–

२२–५–५६ को शाहनवाज कमेटी के सामने डा० जोशिमी ने कहा कि वह बुरी तरह जल गये थे। उनका रंग राख की तरह थोड़ा भूरा रंग हो गया था यहां तक कि उनका हृदय भी जल गया था' लेकिन यही डाक्टर साहब सन् ७२ में खोसला आयोग के समक्ष बयान देते हैं कि—'चन्द्र बोस का पूरा शरीर जलने से पीड़ित था। उनका हृदय नही जला था।'

यही डाक्टर महोदय का यह भी बयान देखिए। इन्होंने सन् ४६ में एलाइड इन्टैलीजेन्स के समक्ष कहा कि—"१८ अगस्त, सायं ५ बजे ६ या ७ व्यक्तियों द्वारा बोस लाये गए।"

इन्हीं डाक्टर ने सन् ५६ में शाहनवाज कमेटी के समक्ष कहा–"१८ को सायं दो बजे हवाई अड्डे से विमान गिरने की टेलीफोन द्वारा सूचना मिली। २० मिनट बाद घायल २ व्यक्ति लाये गये। फिर यही डाक्टर जोशिमी महोदय सन् ७१ में खोसला आयोग के समक्ष बयान देते हैं :

—"दोपहर के कुछ पूर्व हवाई अड्डे से एक टेलीफोन आया। १२-३० बजे भारतीयों सहित ७ व्यक्ति अस्पताल पहुंचे।"

अब देखिये शैलेश डे डा० जोशिमी के बारे में क्या लिखते हैं– (पेज ३०२)

—"मारे गये आजाद हिन्द फौज के सुप्रीम कमाण्डर और राष्ट्र के प्रधान नेता सुभाषचन्द्र बोस थे। परन्तु डेथ सर्टीफिकेट में नाम लिखा गया—काटाकाना।

एक साल बाद संवाददाता हारिनशी घटनास्थल पर जाकर जो भी रेकार्ड तथा फोटो स्टेटकापी ले आये, उससे और भी सन्देह बढ़ गया।

देखने में आया कि अस्पताल के रिकार्ड में उस दिन कोई काटाकाना नाम का आदमी नहीं मरा था। इस नाम को काटकर लिखा गया था 'उकारा इचीरो' तारीख भी बदल गयी थी। १८ अगस्त की जगह १९ अगस्त कर दिया गया था।

और डाक्टर ? वहां भी कुछ गलती थी। पहली बार डेथ-सर्टीफिकेट लिखा था डाक्टर जोशिमी ने अब नाम लिखा था डाक्टर छुलका तोयेजी।

अजीब बात है जब मैंने गुमनामी बाबा के निकटतम डा० आर० पी० मिश्रा से पूछा था कि जब १६ को दिवंगत हुये तो तीसरे दिन क्यों जलाये गये। तो डा० मिश्रा ने कहा कि 'नहीं वह तो दूसरे दिन जला दिये गये।'

मैंने कहा—"नहीं ! तीसरे दिन जलाये गये।" इतने में उनकी एक लड़की ने कहा —" नहीं पापा ! आप को याद नहीं है वे तीसरे दिन ही जलाये गये।"

डा० मिश्रा बड़ी देर तक असमंजस में रहे कि वे दूसरे दिन जलाये गये थे कि तीसरे दिन।

●

एक बार हम रहस्यमय प्रकरण के सबसे महत्वपूर्ण सूत्र डा० पवित्र मोहन राय पर फिर आते हैं।

रामभवन स्थित गुमनामी बाबा के सामानों में जिस डा. पी.एम.राय के ढेरों पत्र, राखी, पार्सल तथा २३ जनवरी ७९ के 'जुगान्तर में छपी नेताजी की खबर भेजने के सबूत मौजूद हैं जिस पी० एम० राय का गुमनामी बाबा द्वारा भेजे गये टेलिग्रामों की 'काउण्टर फाइल' में जिक्र है। जिस पी० एम० राय का भगवनजी से अन्तिम क्षण तक सम्बन्ध रहा। उनके बारे में 'शैलेश डे' अपनी पुस्तक में लिखते हैं—

मास्टर चौपड़ा के नेतृत्व में जो दल दिसम्बर के महीने में सबमेरीन द्वारा भारत भेजा गया था, उनके समाचार मिल जाने से लोगों का मनोबल बढ़ गया। आंखों के सामने इतना जबरदस्त प्रमाण देखकर जापानियों की यह आपत्ति टिक न सकी। कि गुप्तचरों की शिक्षा और संगठन पर सुभाष की नियन्त्रण रहे।'

—'यद्यपि चोपड़ा पुलिस की पैनी नजरों से ज्यादा दिनों तक बच नहीं सके वे अपने पार्टी के साथ कुछ दिनों बाद ही पकड़ लिए गये।

बाद में डाक्टर पवित्र मोहन राय के नेतृत्व में अमरसिंह गिल, महिन्दर सिंह, तुहीन मुखर्जी आये थे। इन सबको पेनांग की सीक्रेट सर्विस में शिक्षा मिली थी। उसी तरह से सबमेरीन (पनडुब्बी) द्वारा पुरी के समुद्र के किनारे उतरे।

फिर एक-एक लोग एक-एक तरफ चले गये। महिन्दर सिंह पंजाब, तुहीन मुखर्जी बम्बई। पवित्र राय और अमर सिंह गिल गये कलकत्ता।

एक बार एल्गिन रोड नेताजी के घर जाना है। परन्तु पुलिस की नजर बचाकर जाया कैसे जाये? नेताजी के भाई सुनील बोस एक कुशल चिकित्सक हैं। अगर मरीज बनकर उन तक पहुंच जाये तो कैसा रहेगा?

पवित्र राय खिदिरपुर में मरीज बनकर पड़े रहे। और अमरसिंह गिल गये एल्गिन रोड वाले मकान में डाक्टर को बुलाने। लेकिन डाक्टर बोस थे कहां? बहुत जरूरी काम से तब हजारी बाग गये थे।

—लेकिन हर चाल व्यर्थ हो गयी। लाहौर में महिंदर सिंह गिरफ्तार कर लिए गये। पकड़े जाने पर पुलिस के सामने उन्होंने सब कबूल दिया। हाँ, मैं आजाद हिन्द फौज की सीक्रेट सर्विस का आदमी हूं। पेनांग से यहां नेताजी का दूत बन कर आया हूं।'

परन्तु वे बहुत पछताये कि उन्होंने नेताजी के साथ विश्वासघात किया है। उन्होंने इसी दुःख में आत्महत्या कर ली।

महिन्दर सिंह की स्वीकारोक्ति के कारण ही शायद ज्योतिष बसु पकड़े गये। और उसके बाद एक-एक करके सभी पवित्रराय पुरी के एक होटल में थे। हरिदास के पास से बहुत शक्तिशाली ट्रान्समीटर बरामद हुआ।

सबकी नजर बचाकर कमल स्ट्रीट के एक मकान में मुकदमा शुरू हुआ। तुहीन मुखर्जी सरकारी गवाह बन गये वे छोड़ दिये गये परन्तु पवित्र राय, ज्योतिष बोस, और हरिदास मित्र को प्राणदण्ड दिया गया।

'अन्त तक यद्यपि इनमें से किसी को भी फांसी नहीं हुई थी। श्रीमती बेला मित्र के प्रयास करने पर गांधी जी ने इस मामले में हस्तक्षेप किया और युद्ध समाप्त होने पर अन्य राजनैतिक कैदियों के साथ ये लोग भी छूट गये।

उपरोक्त तथ्यों से साफ झलकता है कि डा० पी० एम० राय नेता जी की सीक्रेट सर्विस के एक इतने आज्ञाकारी देशभक्त हैं कि जिन्हें प्राणदण्ड का फैसला भी न डिगा सका।

—०—

नेताजी चेन स्मोकर थे !

जब पुलिस गुमनामी बाबा के कमरे में सामानों की लिस्ट बना रही थी तो वहां पर हम लोगों को कई विदेशी सिगरेट की डिब्बियां व कुछ उच्च कोटि के सिगरेट, सिगरेट पेपर व तम्बाकू मिले। डंका नेता अरविन्द सिंह ने कहा लगता है बाबा चेन स्मोकर थे। लेकिन नेताजी तो सिगरेट नहीं पीते थे। हम सभी लोग खामोश रहे। क्योंकि कोई नहीं जानता था कि नेताजी सिगरेट पीते थे या नहीं।

लेकिन जब मैंने 'शैलेश डे' की किताब में पढ़ा कि.......'सुभाष के व्यस्तता पूर्ण जीवन की हर बारीकी का अध्ययन किया था उनके प्रचार सचिव अय्यर साहब ने। वे लिखते हैं—

"और सिगरेट, लगभग सारे दिन पिया करते थे। एक के बाद एक। चेन स्मोकर थे। सिगरेट का आखिरी टुकड़ा भी नहीं फेंकते थे। दिन-रात कुल मिलाकर तीस-चालीस सिगरेट पी जाते थे।'

गुमनामी बाबा के शिष्य बताते हैं कि भगवनजी के उपदेश सुनने या मिलने जाने पर चाय का दौर चलता रहता था। यहां तक कि वे अपने थर्मस में से निकालकर अक्सर दे दिया करते थे! और देर रात तक जगने के कारण सरस्वती माता का कहना है कि भगवनजी सुबह देर से स्नान ध्यान करते थे। उधर अय्यर साहब क्या लिखते हैं जरा देखिये—

'जरा देर से उठते थे नेताजी, यद्यपि बहुत पहले ही जाग जाते थे। लेटे लेटे कुछ देर तक गीता पढ़ते रहते थे। उसके बाद तुलसी की माला लेकर जाप करते थे। सुबह छह बजे से पहले कभी भी उठते नहीं थे। सात बजने से पहले लेकिन।

ठीक आठ बजे नहा-धोकर ब्रेक फास्ट करते। अलग कोई कमरा नहीं था। आफिस में ही सोते थे। दो-तीन आधे उबले अण्डे और कई प्याली चाय यह उनका सुबह का खाना था। चाय वे कई बार पीते थे। कहा जा सकता है—जब मौका मिलता तभी।'

'ब्रेकफास्ट करते ही लीग के मुख्यालय चले जाते । वहां ११ बजे तक रहते । वहाँ से मिलिट्री हेड आफिस । वहां भी कुछ देर तक रहते । इसी के साथ चाय चला करती ।

'लौटते-लौटते दो बज जाते । फिर खाना खाते । निजी सचिव, अतिथि या कोई भी जापानी कूटनीतिज्ञ होता, एक ही मेज पर, एक साथ खाना खाते । मामूली सा खाना—चावल, दाल, दही और एक केला । कभी-कभार मछली भी मिल जाती ।'

५ जनवरी १९८६ का नवभारत टाइम्स (लखनऊ) लिखता है कि·····'एक बुजुर्ग ज्योतिषी ने इस संवाददाता को बताया कि बाबा मांसाहारी थे ! ····इतने में सरस्वती देवी का पुत्र साइकिल में डलिया टांग आ पहुंचा। डलिये में ताजी सब्जी तथा कागज के कुछ भरे थैले थे । ज्योतिषी ने डलिया उतारने में मदद करनी चाही इतने में कागज का एक थैला लुढ़क पड़ा जिसमें से मुर्गी के अण्डे जमीन पर गिरकर फूट गये ।'

वैसे डा० बनर्जी के परिवार व अन्य बंगाली परिवारों ने बताया कि भगवान जी मछली व मीट खाते थे लेकिन शुद्धता से बना हुआ और खासकर बंगाली रीति से बना । पण्डा जी ने बताया कि वे पाक विद्या के माहिर थे किस प्रकार कौन सा भोजन कैसे व कितनी देर तक पकाया जाता है, को विधिवत समझाते थे । देखिए ऐसी नेता जी की आदत के बारे में अय्यर साहब क्या कहते हैं—

"बीच-बीच में विभिन्न प्रकार की भारतीय भोजन पद्धति और उनके गुणों पर बहस होने लगती । इस मामले में नेता जी बड़े समझदार माने जाते थे ।"

इत्तिफाकों का दौर जारी है—

रामभवन में मिले सामानों की पुलिस द्वारा तैयार सूची में—वहां प्राप्त सैकड़ों रेकार्डस व कई टेप रिकार्डर व ग्रामोफोन का जिक्र है । रवीन्द्रनाथ ठाकुर, के० एल० सहगल, काजी नजरूल इस्लाम, पं० रविशंकर के सितारवादन

आदि के एल० पी० रिकार्ड देखने पर लगा था कि इस व्यक्ति की गीत व संगीत में कितनी रुचि है ? समाचार पत्र आदि पर गानों की लाइनें "मैंने तो चांद और सितारों की तमन्ना की थी" भी लिखी मिली हैं।

दिल्ली से प्रकाशित हिन्दी मासिक 'जन-गर्जन' के अक्टूबर १९८५ में श्री राम कुमार शर्मा के लेख—"हर समस्या से जागरूक : नेताजी सुभाष" में नेताजी द्वारा अपने किसी मित्र को जेल से लिखे गये किसी पत्र का यूं जिक्र है—

"मित्र, देश के कोने-कोने को संगीत की स्वर-लहरी से आप्लावित कर दो और जिस सहज आनन्द को हम खो बैठे हैं उसे लौटा लाओ। जिसके हृदय में आनन्द नहीं है, संगीत से जिसका हृदय तरंगित नहीं होता, क्या वह व्यक्ति जगत में महान कार्य कर सकता है। मेरे विचार से जिस व्यक्ति के हृदय में संगीत का स्पन्दन नहीं है, वह चिन्तन और कर्म द्वारा कदापि महान नहीं बन सकता।"

लेख में आगे लिखा है—"सुभाषचन्द्र बोस शिक्षा को समाज का महत्वपूर्ण अंग मानते हैं।····उन्होंने लिखा है····प्राथमिक शिक्षा में इन्द्रिय शक्ति पर अधिक निर्भर रहना पड़ता है····अत: जिस विषय के सम्बन्ध में बताया जाये—जैसे गौ, घोड़ा, पुल तो इन पदार्थों को नेत्रों के सामने रखे बिना सिखाना कठिन होगा। ····गणित सीखते समय यदि हम केवल सिद्धान्त कंठस्थ न करा कर कौड़ी, संगमरमर या ईंट पत्थरों के टुकड़ों से जोड़ना, घटाना, गुणा करना, भाग देना आदि का उदाहरण दें तो बच्चे शीघ्रता से सीख सकते हैं।"

इस बात को पढ़ने से लगा कि कि नेताजी बच्चों को क्या और कैसे पढ़ाया जाना चाहिये, इस पर कितना सोचते थे। अजीब इत्तिफाक है कि राम भवन में रहने वाला 'गुमनामी बाबा' भी जहां दुनिया के उत्कृष्ट साहित्य पढ़ता था—वहीं पर उसके बिस्तर के सिरहाने प्राथमिक कक्षाओं में चलने वाली पाठ्य पुस्तकें भी मिलीं।

—०—

मैं, मैं हूँ!

'एक रात रायबहादुर जानकीनाथ ने एक विचित्र स्वप्न देखा : 'शिशु सुभाष पालने में निद्रामग्न हैं। सहसा पालने के समीप दिव्य प्रकाश फैल जाता है और माँ दुर्गा जैसी एक भव्य आकृति प्रगट होती है।

उस आकृति के हाथों में एक पुष्प मालिका है। वह तेजस्वी नेत्रों से अपलक शिशु सुभाष को निहारती रहती है। फिर वह भव्य आकृति आगे बढ़कर पुष्प मालिका शिशु के गले में डालती डालती कहती है, 'ओ देव पुत्र ! तू अवतारी है, तुझे जननी जन्म-भूमि को बन्धन मुक्त कराने के लिए जन्माया गया है।'

और वह पुष्प-माला शिशु के गले में जा पड़ी। 'माँ····साक्षात् माँ दुर्गा····।'····और स्वप्न भंग हो जाता है। झपटते हुए पत्नी के कक्ष में आये। देखा तो प्रभावती गहरी निद्रा में लीन थी और समीप ही पालने पर सुभाष सोया था।

वास्तव में उसके गले में एक ताजी पुष्पमाला पड़ी थी।

(क्रान्तिकारी सुभाषः शंकर सुल्तानपुरी, पेज १४)

फिर देखिये द्वितीय विश्वयुद्ध के दिनों में जब नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को पुलिस ने उनके एलगिन रोड वाले मकान में नजरबन्द कर दिया था।········ अपने कक्ष में सुभाष विचारमग्न थे। ·······माँ दुर्गा····।'' सुभाष बुदबुदाये।

उन्होंने देखा कि साक्षात् माँ दुर्गा उनके समक्ष खड़ी है। ····सुभाष ने देखा माँ दुर्गा ने अपना वरदहस्त उनके सिर पर रख दिया है। उन्हें लगा कि उनके शरीर में दिव्य तेज का संचार हो गया है।

सुभाष अद्वितीय आनंद से रोमांचित हो उठे और सहसा माँ दुर्गा अन्तर्ध्यान हो गई।

सुभाष की समाधि भंग हो गई।

(—वही पुस्तक : पेज १२२)

इन्हीं सुभाष पर भारत-भारती के राष्ट्रवादी परम्परा के युगपुरुषों स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द एवं महर्षि अरविन्द घोष जैसी विभूतियों की गहरी छाप पड़ी थी ।

"श्रद्धेय भूपेन्द्र किशोर रक्षित राय ने कहा है "सुभाष की सृष्टि अचानक नहीं हुई थी । ....सुभाषचन्द्र के प्राणों के गुरु थे विवेकानन्द । इनके कर्म गुरु थे देशबन्धु चित्तरंजन दास । उनके विप्लव गुरु थे श्री अरविन्द और उनके मित्र और साथी थे विप्लवी दल । उन्हें देश का नेता बनाया था दूरदर्शी ऋषि कवि रवीन्द्रनाथ ने ।'
(मैं सुभाष.... : पेज ५०)

१८५७ की क्रांति की पृष्ठभूमि के क्रांतिदर्शी ऋषि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने करीब अढ़ाई वर्ष का अज्ञातवास करके क्रांतिकारियों को प्रोत्साहित किया था—बाद में उन्हीं को १४ बार जहर देकर मारने की कोशिश की गयी और अन्ततः १४वीं बार में वे जहर बर्दास्त न कर सके और उन्होंने शरीर त्याग दिया ।

स्वामी रामतीर्थ तथा स्वामी विवेकानन्द ने भारत माँ के उत्थान हेतु राष्ट्रवादी परम्परा के तहत आध्यात्मिक दीप जलाकर देश के क्रांतिकारियों को राह दिखाई ।

ठीक इसी तरह क्रांतिकारी अरविन्द घोष ने भौतिक क्रांति मार्गों को त्यागकर पान्डेचेरी में ४० वर्षों तक आध्यात्मिक साधना करके 'महर्षि' पद को प्राप्त किया था । उनका कहना था कि—

"भारत माता पृथ्वी का एक टुकड़ा नहीं है, 'वह शक्ति है, देवी है ।"

"........पागलपन यह है कि अन्य लोग स्वदेश को एक जड़ पदार्थ, कुछ मैदान, खेत, वन, पर्वत नदी भर समझते हैं; मैं स्वदेश को माँ मानता हूं, उसकी भक्ति करता हूँ, पूजा करता हूँ ।

"भगवान ने इसी महाव्रत को पूरा करने के लिए मुझे पृथ्वी पर भेजा है ।"

नेताजी उसी भारत-भारती रूपी माँ के पुजारी थे । सुभाषचन्द्र बोस दुर्गा माँ व काली माँ के अनन्य साधक थे ।

'गुमनामी बाबा' के कमरे में प्राप्त स्वामी रामकृष्ण परमहंस एवं माँ शारदा के मध्य विराजमान काली माँ के चित्र तथा वहां उपरोक्त राष्ट्रवादी संत साहित्यों की प्राप्ति से अनुमान लगाया जा सकता है कि उनका भी रुझान वैसा ही था और शायद महर्षि अरविन्द घोष की इन पंक्तियों को चरितार्थ करने का बीड़ा उस गुमनामी संत ने उठाया हो—

"अनुभव के लम्बे काल में आत्मा कुछ समय के लिये ऐंद्रिय सुख की आज्ञा दे सकता है और बाद में इसे त्यागकर उच्चतर वस्तुओं की ओर मुड़ सकता है ।"

—महर्षि अरविन्द

कभी गुरुवर रवीन्द्र नाथ टैगोर ने लिखा था—

सुभाषचन्द्र,

तुम्हारी राष्ट्रीय साधना आरम्भ होने के क्षणों में तुम्हें दूर से देखा हूँ । ......इस शक्ति की कठिन परीक्षा हुई हैं जेल में, निर्वासन में, असाध्य रोग के आक्रमण द्वारा । कुछ भी तुम्हें अभिभूत न कर सका । ...दुःख को तुमने अवसर का रूप दिया । विघ्न को सीढ़ी बनायी । ऐसा सम्भव हो सका है क्योंकि किसी भी पराजय को तुमने सत्य मानकर स्वीकार नहीं किया ।

—रवीन्द्रनाथ

नेताजी के बारे में आजाद हिंद फौज के कर्नल अय्यर साहब लिखते हैं—

"किसी-किसी दिन रात को रामकृष्ण मिशन से कैलाश ब्रह्मचारी को लाने के लिये कार भेजते थे । स्वामी आते तो उनके साथ आध्यात्मिक विषय पर बातें करते । कभी कभी स्वयं मिशन चले जाते । सिल्क की धोती पहन कर घंटों वहां बैठे रहते थे । कोई देखता तो समझता कि वह व्यक्ति भगवान को सम्पूर्ण रूप से समर्पित है । उन्हें देखकर हमें महात्मा बुद्ध का ध्यान आता ।

'Those of us who came nearest to him, sometimes referred to him as 'The Buddha'—so serene and so silent was he, whenever he could snatch a moment of from active duties.'

[Unto him a witness : S. A. Ayer : P–269]

यही विचार प्रकट किये थे थाईलैण्ड के प्रधानमन्त्री पिबुल संग्राम ने— 'बुद्ध के बगल अगर कोई रखा जा सकता है तो वह नेताजी बोस।'

(ओकार रोक्स : ल्यूपोल्ड फिशर)

अजीब इत्तिफाक है कि भगवनजी के कमरे में भी दर्जनों सिल्क की धोतियां व चादरें मिली हैं।

उधर स्वामी भास्करानन्द के ही मुख से नेताजी जैसे आई० सी० एस० सेना के सर्वोच्च कमाण्डर की द्वि-सत्ता का वर्णन सुनिए—

"........सिंगापुर में जिन दिनों थे, उन दिनों नेताजी श्री श्रीमाताजी के जन्मोत्सव पर आमन्त्रित किये जाने पर श्रीराम कृष्ण मिशन में आये थे। उस दिन पूजागृह में लगभग आधे घण्टे तक वे ध्यान मग्न बैठे थे। बाद में पूजा करके प्रसाद प्राप्त कर कुछ देर तक बातचीत करते रहे। घण्टे भर तक बातचीत करने के बाद उन्होंने एक 'चण्डी' के लिए उत्सुकता प्रकट की तो मैंने उन्हें अपनी चण्डी उपहार स्वरूप दे दी। वे बड़े प्रसन्न हुए।"

ईसाई धर्म में विश्वास करने वाले अय्यर साहब लिखते हैं :

He felt that in every step forward that he took, God himself was leading him by both hands.........

..........This was itself typical of the strictest privacy in which Netaji lived with his God. His faith was not an article for parade......... He never even once spoke his God in public. He lived with him.

........I would content myself with quoting from the Bible the words of Nicodemus to Jesus : 'For no man can do these miracles that thou doest, except God be with him.

(S. A. Ayer, Page 268-269)

कहा जाता है कि महात्मा बुद्ध की हड्डियों व दांतों के अवशेषों को उन

बौद्ध मंदिरों में सुरक्षित रखा गया है। क्या कारण था कि गुमनामी बाबा ने अपने टूटे हुए दांतों को बड़ी हिफाजत से माचिस के डिवियों में रख छोड़ा था।

वाह रे समानता—

"१४ अगस्त ! (१९४५)"

"उस दिन उनका एक दांत निकाल देना पड़ा। बहुत दिनों से बहुत तकलीफ थी।"
(मैं सुभाष : प्रथम : २१८)

परमहंस स्वामी रामतीर्थ, महर्षि अरविन्द की ही तरह भारत के अमर सपूत सुभाष का कहना था—

"मैं किसी का प्रतिबिम्ब नहीं, किसी की आवाज नहीं— मैं, मैं हूं। I am myself."

और शायद तभी डा० आर० पी० मिश्रा ने मेरे द्वारा लिए गए साक्षात्कार (इसी पुस्तक में पेज १९ पर : अब तक……") को 'नये लोग' में छापने पर मुझे लिखकर प्रतिक्रिया व्यक्त की थी—"मेरा मूल आधार राष्ट्रीय संत परम्परानुसार—

'Every fragment of mine is explainable for a Seeker but to a critic, I am not supposed to answer."

सुभाष का राष्ट्रीय रूप सबने देखा था लेकिन संत रूप……?

—०—

दूसरे अखबारों ने क्या छापा..............

'नये लोग' ने २८ अक्तूबर ८५ को जब पहली बार जोरदार ढंग से रहस्योदघाटन करते हुए ये समाचार छापा तो मैंने आपको बताया न कि बात स्थानीय दैनिकों व सवाददाताओं को बेहद नागवार गुजरी कि यह समाचार 'नये लोग' ने पहले कैसे छाप दिया।

जबकि जिस दिन गुमनामी बाबा का दाह संस्कार गुप्तारघाट पर होना बताया जाता है उसके बाद से ही यह मरमरी उठने लगी थी कि वे नेताजी ही थे। तीन-चार दिन बाद पुलिस ने भी डा० मिश्रा को बुलाकर काफी पूछताछ की। यहाँ तक कि २७ अक्तूबर की रात को ही यही हरीशचन्द सिंह सब-इन्सपेक्टर श्रीमती सरस्वती देवी और उनके पुत्र राजकुमार को पकड़कर कोतवाली ले गये थे। तुरन्त रात में खबर मिलते ही डा० पी० बनर्जी ने डी० आई० जी० साहब से कहलवाकर श्रीमती सरस्वती शुक्ला को तो रात में ही छुड़वा दिया, लेकिन राजकुमार को सुबह डा० राय आदि ने कोतवाली जाकर छुड़वाया। पुलिस ने तब तक क्या छानबीन की थी ? यह वही जाने। लेकिन यह तय है कि 'नये लोग' में प्रकाशन से पूर्व ही सारे शहर में एक जोरदार अफवाह फैल रही थी। और अधिकारीगण उससे पूरी तरह वाकिफ थे, तभी तो तत्कालीन कमिश्नर श्री कमल टावरी ने रामभवन के मालिक तथा उनके पुत्र को बुलाकर भी पूछताछ की थी।

'पत्रिका' के अरोड़ा साहब के अलावा 'अमृत प्रभात' व 'नवभारत टाइम्स' आदि के स्थानीय संवाददाताओं को भी इस अफवाह की जानकारी थी, लेकिन उन लोगों ने इस घटना पर लगकर काम नहीं किया, जैसा कि नये लोग जुटा था। फिर भी कई संवाददाताओं ने 'राम भवन' गये बगैर गलत-सलत व मनमानी ढंग से घटना को तोड़-मरोड़ कर छापना शुरू कर दिया और यह कोशिश की कि यह घटना दब जाये या फिर लोग दिगभ्रमित हो जायें ! इस कार्य में स्थानीय दैनिक 'जनमोर्चा' के अलावा सबसे अहम भूमिका निभायी लखनऊ से प्रकाशित 'अमृत-प्रभात' ने। उसने तो बिना सोचे-समझे खिलाफत में सम्पादकीय तक लिख डाला। मुझे जिन्दगी में पहली बार एहसास हुआ कि राजनीति या समाज के

अन्य क्षेत्रों में जितनी गन्दगी व्याप्त है उससे कम घातक पत्रकारिता के क्षेत्र में नहीं हैं। क्योंकि 'गुमनामी बाबा' नेता जी थे या नहीं ? यह तो निष्कर्ष का विषय था लेकिन प्रथमदृष्ट्या साक्ष्य व घटना घटित हो रही थी मैं समझता हूं कि वह समाचार-पत्रों के लिये खुद में एक खबर थी। बहरहाल जब देर सबेर यह खबर आगे बढ़ी तो कई पत्रों ने अपने विशेष प्रतिनिधि भी भेजे !

अब जरा उनका भी जायजा लीजिये—

(१) 'Northern India Patrika' Daily (Lucknow) : 3 Nov. 85. Heading : 'Nameless saint was Netaji ?— 'The controversy over the real identity of 'Bhagwanji' alias 'Gumonamibaba' an anonymous saint............ is still raging. Though no one has any proof to hold out some people who were close to the late saint claim that he was none else but "Netaji Subhash Chandra Bose."

As the rumours began to float around the city, the distric magistrate passed orders for the opening of the apartment in the presence of the city magistrate on Monday last. However, no one was allowed to go inside except the editor of a Hindi daily and four of the seven associates of the saint.

बाहर के पत्रों में सबसे पहले यह खबर श्री वी० एन० अरोरा ने भेजी जो बाद में इसी रूप में कलकता के 'अमृत बाजार पत्रिका' अंग्रेजी दैनिक में भी छपी।

(२) 'हम आप' दैनिक (फैजाबाद) १४ नवम्बर १९८५। शीर्षक 'गुमनामी बाबा काण्ड'। आनन्द मार्ग के अवधूत और नेताओं के बीच विवाद' पत्र लिखता है कि—"आज देर रात गये जिलाधिकारी श्री इन्दु कुमार पाण्डेय ने बताया 'गुमनामी बाबा काण्ड' में वह सज्जन कौन थे इसकी जांच के लिए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में पुलिस दल जांच कर रहा है। बस्ती के लिए पुलिस भेजी गयी है। तथा उक्त सज्जन से सम्बन्धित नगर के लोगों से पूंछताछ की जा रही है।"

(३) 'स्वतन्त्र भारत' दैनिक (लखनऊ) ४ नवं० ८५। शीर्षक : 'गुमनाम साधू के सामान में 'नेताजी' के सबूत।' पत्र लिखता है—''स्थानीय लोगों में यह मांग अब और जोर पकड़ने लगी कि सम्पूर्ण प्रकरण की जांच किसी उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश द्वारा कराई जाय। पत्र में मिले पतों के आधार पर पुलिस दल जांच हेतु बांगला देश, कलकत्ता तथा बस्ती जिले के विभिन्न ठिकानों की ओर रवाना हो गया है।

(४) 'दैनिक जागरण' (लखनऊ) १७ नवं० ८५। शीर्षक : फैजाबाद का 'नेताजी' प्रकरण : 'कड़ी पूछताछ के बिना रहस्योद्‌घाटन सम्भव नहीं।' संवाददाता त्रियुगी नारायण लिखते हैं कि—'कहा जाता है कि दाह संस्कार में फैजाबाद के सहायक पुलिस अधीक्षक समेत २-३ अधिकारी भी थे। ....लगता है कि महत्वपूर्ण वस्तुयें निकाली जा चुकी है। ....पुलिस इनको बुला-बुलाकर पूछताछ कर रही है।'

(५) दैनिक जागरण (लखनऊ) ७ नवं० ८५। शीर्षक : कथित नेताजी प्रकरण में अभी तक उच्च स्तरीय जांच नहीं।' त्रियुगी नारायण तिवारी लिखते हैं कि........'जिलाधिकारी श्री इन्दुकुमार पाण्डेय ने बताया कि 'गुमनामी बाबा काण्ड' में वह सज्जन कौन थे। इसकी जांच का कार्य पुलिस दल कर रहा है जिसके सम्बन्ध में गुमनामी बाबा के यहां सम्बन्धित लोगों से पूछताछ की जा रही है तथा पुलिस दल बस्ती भेजा गया है। जिलाधिकारी ने बताया कि गुमनामी बाबा जब बस्ती में रह रहे थे तो उस समय बस्ती जिला प्रशासन ने जांच कराई थी उसके तथ्यों की जानकारी के प्रयास किये जा रहे हैं। पुलिस दल कलकत्ता, इटावा, बस्ती तथा हरियाणा गया हुआ है।

(६) अमृत प्रभात (लखनऊ) ८ नवं० ८५। शीर्षक : 'गुमनाम बाबा : रहस्य पर पर्तें।' पत्र लिखता है—'गुमनाम स्वामी भगवान के तीन दर्जन ट्रंक खोलकर पुलिस उनकी लिस्ट तैयार कर चुकी है। ....बाबा का जीवन बड़ा ही रहस्यमय रहा है। ....डा० मिश्र के अनुसार बाबा असात्विक भोजन भी करते थे। ....यहां एक सूत्र के अनुसार पुलिस एक अन्य पक्ष पर जांच कर रही है। ....के० डी० उपाध्याय........ ही तो छिपकर नहीं रह रहे थे। ....आम नागरिक के पास भी यह प्रश्न है कि रहस्यमय गुमनाम बाबा कौन थे। सरकार से जांच कराने की मांग चल रही है। परन्तु अभी तक सरकारी तौर पर घोषणा नही की गयी है।

(७) 'अमृत प्रभात' (लखनऊ) १० नवं० ८५। शीर्षक : 'गुमनामी बाबा काण्ड की सनसनी अब खत्म ।' पत्र खबर में लिखता है—'नेताजी बाबा निकटस्थ सहयोगी कलकत्ता के पवित्र मोहन राय ने गुमनामी बाबा के नेताजी होने से इनकार किया है। ……यहाँ कुछ स्थानीय नेता और तथाकथित सम्भ्रांत लोग अभी भी इस प्रचार में लगे हैं कि गुमनामी बाबा ही नेताजी थे। ……धरना देने के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं और मांग की जा रही है कि नेताजी का स्मारक बनाया जाय। ……कुछ नेताओं ने जिन्होंने बड़े जोर-शोर से बाबा को नेताजी कहा था। वे भी अब जनता के समक्ष उपहास के पात्र बन रहे हैं। ……एक समाचार पत्र…… बराबर अपने समाचार के पुष्टि में खबरें लिख रहा है—

देखा आपने अपने आप में विरोधात्मक खबर। तभी बगल के जिले गोण्डा के प्रसिद्ध पत्रकार श्री हनुमानसिंह 'सुधाकर' एडवोकेट ने फैजाबाद का जायजा लेना शुरू किया—

(८) 'आज' दैनिक (कानपुर) ९ नवं० ८५। शीर्षक : 'क्या राम भवन में रहने वाले गुमनामी बाबा सुभाषचन्द्र बोस थे ?' रामभवन में मिले विवरण के साथ यह खबर छपी।

(९) दैनिक 'छपते-छपते' (कलकत्ता) ७ नवं० ८५। शीर्षक : 'फैजाबाद के 'नेताजी' की जांच के लिए जांचदल कलकत्ता में।' पत्र लिखता है— 'उ० प्र० सरकार ने एक जांच दल कलकत्ता भेजा है।'

(१०) कलकत्ते के एक मात्र प्रमुख बंगला दैनिक 'जुगान्तर' व अंग्रेजी के 'अमृत बाजार पत्रिका' ने भी इन्हीं तारीखों के आस-पास इस सम्बन्ध में कई खबरें छापी।

(११) 'स्वतंत्र भारत' दैनिक (लखनऊ) ९ नवं० ८५। इस बार प्रदेश के इस दैनिक ने इस खबर को बड़ी प्रमुखता से पूरे एक पेज पर 'रहस्य' 'अयोध्या के गुमनामी बाबा नेताजी सुभाष चन्द्रबोस थे ?' शीर्षक से रामभवन में मिले साक्ष्यों सहित छापते हुए कई प्रश्न भी उठाये!

(संवाददाता : हनुमानसिंह 'सुधाकर')

(१२) 'आज' दैनिक (कानपुर)। १२ नवं० ८५। शीर्षक : 'गुमनामी

बाबा का परिचय देने में पुलिस प्रशासन मौन क्यों ?' पत्र लिखता है— 'ज्यों ज्यों समय बीतता जा रहा है। कथित नेताजी प्रकरण समाप्त प्रायः सा प्रतीत हो रहा है। लेकिन कुछ स्थानीय नेता वकील अपराधी तत्व और पत्रकारों का एक वर्ग मिलकर गत १६ सितम्बर को मरे एक आदमी को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस साबित करने पर उतावला और उतारू हो रहे हैं। इसके समर्थन में तरह तरह के प्रमाण जुटाये जा रहे हैं।' (देखिये ये अधकचरा संवाददाता आगे क्या लिखता है—लेखक) ……… 'दूसरी तरफ चुप्पी साधे जिला प्रशासनिक रवैया स्थानीय बुद्धिजीवियों को परेशान किये हुए है। ………यहाँ पत्रकारों में आपसी तनाव सा पैदा हो गया है। ………वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक……… से जब इस संवाददाता ने कहा कि उस कमरे के सामानों को दिखलाया जाय तो उन्होंने इनकार कर दिया। लगता है पुलिस भी यह चाहती है कि रहस्य बना रहे। ….कम से कम मान्यता प्राप्त पत्रकारों को उक्त प्रकरण के बारे बताना चाहिए, ताकि जनता के सामने स्पष्ट जानकारी रख सके और गुमनामी व्यक्ति के बारे में रहस्य समाप्त हो सके।'

अब इसी 'आज' अखबार का गोरखपुर संस्करण क्या कह रहा जरा देखिये—

(१३) 'आज' दैनिक (गोरखपुर) १२ नवं०। शीर्षक : '१६ सितम्बर को अयोध्या में मृत 'भगवन' क्या नेताजी सुभाषचन्द्र बोस थे ?' पत्र लिखता है— 'स्वामी 'भगवन' क्या नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ही थे, यह रहस्य अभी तक बना हुआ है, हालांकि कि उनके आवास से मिले सामानों, दुर्लभ पत्र तथा अन्य कागजातों से उनके नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ही होने का संकेत मिल रहा है। ………पुलिस सभी तथ्यों का पता लगाने के लिए कलकत्ता गयी है। ………इस मामले की जाँच के लिए मशाल जुलूस निकाला गया।'

(१४) 'स्वतन्त्र भारत' (लखनऊ) २३ नवं० ८५। इस दैनिक पत्र ने प्रकरण की महत्ता को समझते हुए 'रहस्य' कालम के अन्तर्गत अपने विशेष संवाददाता श्री हनुमान सिंह 'सुधाकर' की मिले साक्ष्यों सहित पुनः एक पूरे पेज पर विस्तृत रिपोर्ट छापी। शीर्षक : 'गुमनामी बाबा को जानने वालों का मुँह किस वजह से बन्द है ?' तथा 'रहस्य खुलवाने के लिए आन्दोलन जोर पकड़ रहा है।' पत्र लिखता है—'जिलाधिकारी ने वार्ता के दौरान इतना स्वीकार किया कि रामभवन में अन्तिम साँस छोड़ने वाला कोई असाधारण व्यक्ति

था जो विद्वान होने के साथ ही साथ उच्च राजनैतिक चिन्तक तथा सुभाषचन्द्र का निकट सहयोगी हो सकता है ।

(१५) 'विस्फोट' दैनिक (गोण्डा) १४ नवं० ८५ । शीर्षक : 'नेताजी नहीं थे, यह नही कहा जा सकता ।'

(१६) 'अमृत प्रभात' दैनिक (लखनऊ) ने १३ नवं० ८५ को निम्न शीर्षक से सम्पादकीय लिखा—

'नेताजी के नाम पर'

'भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के प्रति महान और चिर स्मरणीय सेनानी सुभाषचन्द्र बोस का नाम लेकर अफवाहें फैलाना, जनता में कौतुहल और उत्सुकता पैदा करना और उसकी आड़ में अपना उल्लू सीधा करने की कोशिश बड़े खेद का विषय है । नेताजी सन् १९४३ में विमान द्वारा सिंगापुर से टोकियो जा रहे थे । विमान ताइवान में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था।········

नेताजी की कथित मृत्यु के सम्बन्ध में भारत सरकार कई तरीकों से जाँच करा चुकी है और इस नतीजे पर पहुँची है कि जो विमान, दुर्घटना के समय नष्ट हो गया था, उसमें नेताजी भी सवार थे । ······· स्वाधीनता प्राप्त करने के वर्षों बाद भारत में उनके मौजूद होने की जब कभी चर्चा चली, तो ज्यादातर उन्हें सन्यासी या साधु के रूप में जीवन बिताते देखा बताया गया ।········

फैजाबाद में पिछले महीने १७ तारीख को करीब ९० वर्षीय एक ऐसे स्वामी का निधन हुआ, जिनका चेहरा नेताजी के चेहरे से कुछ मिलता जुलता था । और जो एकान्त में जीवन बिताते थे । ··· ···नेताजी के भतीजे श्री शिशिर बोस ने भी फैजाबाद की यात्रा कर दिवंगत के नेताजी होने का खण्डन किया है । (जबकि शिशिर बोस फैजाबाद आये ही नहीं—लेखक) । फैजाबाद के सम्बन्ध में एक बात यह भी देखने में आयी कि कुछ पत्र संवाद-दाताओं ने भी अफवाहों को आगे बढ़ाने में भूमिका निभायी । बिना पुष्ट प्रमाण के ऐसी बातों को तूल देना खेदजनक ही कहा जायगा । नेताजी के नामपर आत्म प्रचार या अन्य लाभ उठाने की प्रवृत्ति निन्दनीय है । जैसा कि उनके भतीजे ने कहा है, यह जनता के प्रिय महान सेनानी नेताजी के नाम का दुरुपयोग और उनका अपमान है ।'

(१७) 'आज' (कानपुर) १६ नवं ८५। शीर्षक : पुलिस प्रशासन की धीमी गति से जनाक्रोश में बढ़ोत्तरी।'

(१८) 'आम्रतास' साप्ताहिक [कलकत्ता] १३ नवं० ८५। शीर्षक : 'फैजाबाद के 'नेताजी' जांच के लिए जांच दल कलकत्ता में।'

(१९) 'स्वतंत्र भारत' (लखनऊ) १६ नव० ८५। शीर्षक : 'मैं कैसे और क्या कहूं।' पत्र लिखता है कि—"बस्ती के वकील दुर्गाप्रसाद पाण्डेय का कहना है कि .... मुंह खुल जायेगा तो पूरा मुल्क हिल उठेगा। ....मेरे पास फैजाबाद से पुलिस वाले आये थे। .... बाबा कहा करते थे—"कुत्ते पर विश्वास करो आदमी पर नहीं नहीं।"

(२०) 'शान-ए-सहारा' साप्ताहिक (लखनऊ) २४-३० नवं० ८५। अखबार के मुखपृष्ठ से शुरू करके पांच पृष्ठों में विस्तृत खबर छपी। शीर्षक 'सुभाषचन्द्र बोस का निधन ?' 'क्या फैजाबाद के गुमनामी बाबा नेताजी थे ?' इस पत्र के संवाददाता पुनीत टण्डन ने फैजाबाद आकर सारे प्रकरण की छानबीन करने के बाद अपनी विस्तृत रिपोर्ट में लिखा कि—

"........लेकिन अप्रत्याशित रूप से वहां मिलने वाले साक्ष्यों से अब जिला प्रशासन भी हतप्रभ है।

बताया जाता है कि इसके बाद से जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों की केन्द्रीय खुफिया अधिकारियों के साथ लगातार कई लम्बी व गुप्त मंत्रणायें हुई है। ....जिलाधिकारी........बताते हैं कि हम जाँच कर रहे हैं कि गुमनामी बाबा कौन थे।"

पुनीत टण्डन ने डा० आर० पी० मिश्रा से पूछा कि 'क्या वह सुभाष चन्द्र बोस थे ?'

'मैं नहीं जानता कि वह क्या थे। मै उन्हें एक महान आध्यात्मिक पुरुष के रूप में जानता हूं।'

पत्र अंत में लिखता है—"अब तक प्राप्त कुल साक्ष्यों के आधार पर जो तस्वीर उभर कर सामने आती है उससे इतना अवश्य स्पष्ट होता है कि यदि नेताजी का निधन ताईहोकू विमान दुर्घटना में नहीं हुआ और वह भारत में

अज्ञातवास कर रहे थे (जिसके समय-समय पर प्रमाण दिये जाते रहे हैं) तो बहुत सम्भव है कि गुमनामी बाबा ही सुभाषचन्द्र बोस थे ।'

(२१) 'माया' (इलाहाबाद) १६ नवं०-१५ दिस० ८५ । खोज-खबर कालम के अन्तर्गत निशीथ जोशी ने 'गुमनामी बाबा क्या नेताजी थे ?' शीर्षक के अन्तर्गत चार पृष्ठों की रिपोर्ट छापते हुए लिखा है कि—''.........जिलाधिकारी श्री इन्दु कुमार पाण्डेय ने 'माया' को बताया कि ....इस प्रकरण की प्राथमिक जांच स्थानीय पुलिस कर रही है, उसकी रिपोर्ट आने पर ही यह तय होगा कि जाँच कार्य सी० आई० डी० को दिया जाय या नहीं । तब तक कमरे में सील लगी रहेगी और पुलिस का पहरा लगा रहेगा ।

.........इस सम्बन्ध में प्रदेश के सचिव ने कहा कि फैजाबाद में मरने वाले गुमनामी संत सुभाषचन्द्र बोस नहीं थे, वह उनके कोई करीबी सहयोगी अवश्य हो सकते हैं, इसकी जांच करायी जायेगी ।'

(२२) 'दिनमान' साप्ताहिक ! ८-१४ दिस० ८५ ! ''शीर्षक : 'क्या गुमनामी बाबा नेताजी थे ।'

(२३) 'ब्लिटज' साप्ताहिक ! ७ दिसं० ८५ । कलकत्ते के प्रसिद्ध पत्रकार 'श्री सूरज कलाकार' की विस्तृत रिपोर्ट छपी । शीर्षक : 'फैजाबाद के गुमनाम बाबा कौन थे ?' सुभाषचन्द्र बोस के नाम से बार-बार उठने वाले आन्दोलनों की जांच जरूरी ....।' कलाकार सूरज लिखते हैं कि......... 'उनके स्वर्गवासी होने के बाद जो घटनायें घट रही हैं और जो तथ्य सामने आ रहे हैं, वे अपने आप में अत्यधिक महत्वपूर्ण और रहस्यमयी हैं, जिनकी उच्च न्यायिक जांच होनी चाहिए ।

इस लिए सरकार को जनता और देश के कल्याण के लिए इस मामले की उच्चस्तरीय न्यायिक जांच फौरन करवानी चाहिये, जिससे प्रमाणित हो सके कि गुमनाम बाबा राष्ट्रनेता सुभाषचन्द्र बोस थे या किसी विदेशी जासूसी एजेंसी के सक्रिय सदस्य ।'

(२४) 'धर्मयुग' ! १५ दिसं० ८५ । शीर्षक : 'सुभाषचन्द्र बोस की मृत्यु फिर विवाद के घेरे में ।' पत्रिका लिखती है कि—'बाबा के कमरे से प्राप्त उनकी हस्तलिपि ही एक ऐसा आधार है जिससे इस रहस्य का खुलासा हो सकता

है।' उनकी हस्तलिपि और सुभाषचन्द्र बोस की हस्तलिपि के मिलान से कुछ पता लगाया जा सकता है, क्योंकि सुभाष चन्द्र बोस की हस्तलिपि तो होगी ही।'

(२५) 'सच्ची कहानियां' पत्रिका (इलाहाबाद) १२ जन० ८६! 'वह भगवन स्वामी नहीं, नेताजी ही थे ?' शीर्षक से पहली विस्तृत रिपोर्ट छापने वाली पत्रिका ने अपने सम्पादकीय में लिखा कि—

"इस बारे में खबर मिलते ही हमने भी अपने विशेष प्रतिनिधि श्री के०के० श्रीवास्तव के नेतृत्व में एक टीम फैजाबाद भेजी, जिसने बड़ी सूक्ष्मता से जांच पड़ताल कर कहा है कि वह भगवन स्वामी नहीं, नेताजी ही थे, मगर यह बात मानने के लिए आवश्यक है कि सरकारी स्तर पर व्यापक जांच पड़ताल की जाय और सही तथ्यों को जनता के सामने रखा जाय, जिससे मन की जिज्ञासायें शान्त हो सकें।'

(२६) 'स्वतन्त्र भारत' दैनिक। १८ जन० ८६। शीर्षक 'गुमनामी बाबा' : 'इलाज करने वाले डाक्टरों ने भी उन्हें नहीं देख पाया।' हनुमानसिंह सुधाकर ने लिखा—'रहस्य के आवरण में डूबा यह कौन सा व्यक्तित्व था....'

(२७) 'स्वतंत्र भारत'। २० जन० ८६। शीर्षक 'बहुतों ने कोशिश की, पर रहस्य का पर्दा न उठा, तो न उठा।'

(२८) 'अवकाश' पत्रिका (वाराणसी) ३१ जनवरी १९८६। शीर्षक 'गुमनामी बाबा के बक्सों से 'नेताजी' होने का प्रमाण।' पत्रिका लिखती है— 'कि गुमनामी बाबा अगर नेताजी नहीं थे तो कोई ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्ति जरूर थे जिसकी जानकारी समाज और सरकार को होनी चाहिए।'

—०—

बाबा के पास 'वायरलेस' सेट भी था

अब जबकि देश की इतनी पत्र-पत्रिकाओं के साथ लखनऊ के 'स्वतंत्र भारत' तथा 'पत्रिका' व 'अमृत प्रभात दैनिकों द्वारा इस प्रकरण पर खोजपूर्ण रिपोर्टें छप रही थीं तो लखनऊ से प्रकाशित 'नवभारत टाइम्स' के अहम को भी चोट पहुंचनी ही थी। तभी उसके एक युवा नगर संवाददाता राकेश कुमार (अयोध्या निवासी) ने अपने गृह नगर में चल रहे इस प्रकरण को जड़ से उखाड़ फेंकने का जोरदार बीड़ा उठा लिया तथा २ से ७ जनवरी ८६ तक 'फैजाबाद काण्ड' शीर्षक से एक शृंखला मुख्य पृष्ठों पर छाप डाली। देखिये नभाटा के राकेश कुमार क्या कहते हैं—

'गुमनामी बाबा को सुभाष चन्द्र बोस बताने वाले कौन हैं' शीर्षक के अन्तर्गत नभाटा (२-१-८५) को लिखता है कि '....गहन खोजबीन के बाद तमाम चौंकाने वाले तथ्य इस संवाददाता के हाथ लगे हैं यह बात भी सामने आई है कि मृतक का शिष्य होने का ढिंढोरा पीटने वाले कुछ व्यक्तियों का इतिहास काफी गन्दा रहा है। शिष्यों में कम से कम दो तो ऐसे हैं जो तस्करी, अवैध कब्जा करना, अपराधियों को आश्रय देना आदि अपराधिक गतिविधियों में सक्रिय रहे हैं।'

इस पत्रकार को इन दोनों का नाम व अपराध जरूर जनता के सामने बताना चाहिए था, लेकिन वह इन पंक्तियों से पहले इसी खबर में लिखता है कि—'रहस्यमय व्यक्ति मर गया था परन्तु उसकी गाथा अयोध्या-फैजाबाद में और तेज हो गयी थी। कुछ विशिष्ट जनों से होती हुई कई प्रकार की बातें अयोध्या-फैजाबाद की आम जनता में तेजी से फैलने लगी।' फिर लिखा कि—'फैजाबाद से प्रकाशित दो हिन्दी दैनिकों ने भी विवाद को तूल देने तथा जनता को मृतक के सम्बन्ध में भ्रमित करने में जोरदार भूमिका निभाई है।''

वैसे यह बात स्वयं नभाटा पर अधिक लागू होती है। क्योंकि १६ सितं० ८५ को मरने वाले बाबा के बारे में तथा २८ अक्टूबर ८५ को सर्वप्रथम 'नये लोग' द्वारा खोज करने के दो माह बाद 'नवभारत टाइम्स' को शृंखला

छापने की क्या जरूरत आन पड़ी, जबकि वह स्वयं लिखता है कि—'सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के उद्देश्य से कई अन्य पत्र-पत्रिकाओं ने फैजाबाद के रहस्यमय बाबा के प्रकरण को इस तरह उछाला है मानों वह व्यक्ति और कोई नहीं बल्कि सुभाषचन्द्र बोस ही थे।'

३ जनवरी ८५ को 'गुमनामी बाबा की हत्या तो नहीं की गयी ?' शीर्षक : के अन्तर्गत नभाटा लिखता है—'बाबा की मौत जिन परिस्थियों में हुई, जिस गोपनीय ढंग से उनकी लाश उनके तथाकथित शिष्यों द्वारा छिपाई गयी तथा जिस रहस्यमय परिस्थितियों में उनका दाह संस्कार किया गया, यह सब कई सवाल पैदा करते हैं।'

'.........गुमनामी बाबा ने मरने से कुछ दिन पूर्व अपने आस-पास मंडराने वाले कुछ प्रमुख लोगों से कहा था कि मुझे अपने एक शिष्य से घुटन तथा असुरक्षा महसूस हो रही है। इस बयान के दो तीन दिन बाद ही अचानक बाबा का चल बसना उनकी मौत पर प्रश्नचिन्ह लगाता है।'

'यहाँ वह तथ्य विचारणीय है कि.......मरने के तुरन्त बाद शरीर नीला पड़ गया था।' ....कुछ का कहना है कि बाबा का चेहरा कोई तेज रसायन डालकर चेहरा विकृत कर दिया गया था।' अन्त में नभाटा स्वयं पूछता है कि—'इतनी बड़ी क्या मजबूरी थी कि बाबा को मरने के बाद भी आम जनता से छिपाये रखा गया ?'

और इसी दिन इस काण्ड पर मुख्यमंत्री से प्रतिक्रिया जानकर नभाटा 'बाक्स' में छापता है—'लखनऊ में आज मुख्यमंत्री वीरबहादुर सिंह ने सुभाष चन्द्र बोस के भेष में किसी बाबा की उपस्थिति सम्बन्धी समाचारों पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की और इस मामले की किसी तरह की जाँच कराने की मांग को एकदम अस्वीकार कर दिया।'

फिर ४ फरवरी ८५ को 'सम्पत्ति की बन्दर-बांट से मामला उछला' शीर्षक के अन्तर्गत नभाटा ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा कोतवाल को इस मामले की जांच पर लिखे गये गोपनीय पत्र को छापते हुए स्वयं प्रश्न उठाया कि—

—'वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा बाबा के सम्बन्ध में करवायी गयी जांच का क्या हुआ ? कोई नहीं जानता। इस जांच परिणाम को आम जनता के समक्ष क्यों किसके निर्देश पर नहीं रखा गया यह सवाल भी लोगों को उलझन में डाले हुए है।'

५ जनवरी ८५ : शीर्षक 'गुमनामी बाबा गुप-चुप क्या करते रहते थे।' के अन्तर्गत लिखा है—

........'ब्रह्मकुण्ड प्रवास के दौरान बाबा के पास अपना वायरलेस सेट भी था।........ एक रात करीब एक बजे ज्योतिषी ने देखा बाबा के कमरे की बत्ती जल रही है। उत्सुकतावश वह खिड़की के पास कान लगाकर खड़े हो गये। ज्योतिषी ने सुना बाबा अंग्रेजी में रुक-रुककर किसी से बात कर रहे थे। अन्दर किसी मशीन जैसी चीज की जोरदार आवाज आ रही थी। इन्हीं ज्योतिषी महोदय ने एक बार बाबा का चेहरा भी देख लिया था। घटना इस प्रकार है—'

'........परदा उड़ते ही बाबा की कर्कश आवाज गूंजी।

........पंडितजी आपने मुझको देख लिया।

ज्योतिषी—हाँ भगवन्।

बाबा—क्या देखा, आपने ?

ज्योतिषी—आपका चेहरा थोड़ा नीचे था। आप चश्मा पहने थे।

बाबा—और क्या देखा ?

ज्योतिषी—सिर आपका बीच में गंजा है। चारों ओर पके छोटे बाल हैं।

बाबा मुस्कराये और बोले—चेहरा कैसा है ?

ज्योतिषी—गोरा, गोल। मुंह सामान्य से ज्यादा चौड़ा है।

बाबा—और शरीर !

ज्योतिषी—सामान्य कद काठी का परन्तु लम्बा।

बाबा—ठीक है। यह बात आप तक ही रहे। और समझिये आपने मुझे कभी नहीं देखा।'

पत्र आगे एक दूसरी घटना यूँ लिखता है —

'बाबा के स्वभाव के बारे में अयोध्या के एक पोस्टमैन ने एक घटना सुनायी—बाबा की कोई रजिस्ट्री कलकत्ता से आयी थी। यह पोस्ट मैन ब्रह्म-कुण्ड बाबा को रजिस्ट्री देने गया। बाबा ने कहा कि अन्दर डाल दो मैं दस्तखत किये देता हूँ। इस पर पोस्टमैन ने कहा कि दस्तखत मेरे सामने करने होंगे। बाबा चिंघाड़े और बोले दुष्ट, नौकरी करनी है या नहीं। तू नहीं जानता मुझे? पोस्टमैन ने क्षमा माँगी। बाबा खुश हुए बाद में बाबा ने दस्तखत करने वाले फार्म पर ही पोस्टमैन की खूब प्रशंसा लिखी। यह कागज भी अयोध्या डाकघर के रिकार्ड में सुरक्षित है।'

'बाबा के बारे में कुछ पत्र-पत्रिकाओं द्वारा यह जोरदार ढंग से प्रचारित किया जा रहा है कि वह परामानव थे। ....यहाँ यह विचारणीय है कि जो व्यक्ति स्वयं अपने छोटे-मोटे रोग नहीं दूर कर सकता था वह लोगों का कष्ट हरण चुटकी बजाकर कैसे करता था।'

'अयोध्या निवासी भारतीय युवा जनता मोर्चा के नेता हरिशंकर सिंह ने इस संवाददाता को बताया कि बाबा से मिलने लखनऊ से एक गुप्तचर अधिकारी कार में बराबर आता था।'

'खोजबीन के दौरान एक खास बात यह देखने को मिली कि अयोध्या फैजाबाद के छोटे पुलिस अधिकारी भी बाबा को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस मान बैठे हैं।'

७ जनवरी ८५ को सरकारी वायरलेस 'हाट लाइन' बन गया था' शीर्षक के अन्तर्गत छपी खबर में नभाटा ने मेरा इन्टरव्यू छापते हुए लिखा कि—

'सर्वेक्षण के दौरान यह संवाददाता बाबा प्रकरण को विस्तार से छापने वाले हिन्दी दैनिक 'नये लोग' के सम्पादक अशोक टण्डन से मिला। बाबा के बारे में अन्य अखबारों में छप रही खबरों को लेकर श्री टण्डन बड़े गुस्से में थे। काफी बातचीत के बाद वे साक्षात्कार देने को राजी हुए।'

........'वह इस बात का भी दावा करते हैं कि प्रशासन चोरी छिपे इस का पता लगा रहा है कि बाबा के बारे में छपी खबरों का जन-मानस पर क्या

प्रभाव पड़ा है ? वह इस बात पर खीझते हैं कि प्रशासन बाबा की वास्तविकता मालूम करने की जगह पर लोगों की प्रतिक्रिया का सर्वेक्षण करा रहा है।'

पत्र आगे लिखता है। कि—'बाबा की परिचारिका सरस्वती देवी राम भवन में रह रही थी। इस संवाददाता ने जब सरस्वती देवी से भेंट करनी चाही तो वहां मौजूद पुलिस दल ने उसे अन्दर भगा दिया। उसकी थोड़ी देर की मौजूदगी में यह लगा कि वह बोलना चाहती है परन्तु पुलिस वाले उसे बोलने नहीं दे रहे हैं।'

'बाबा की आवाज के बारे में सब एक मत हैं कि उनकी आवाज काफी तेज और कर्कश और गुस्से में भयानक लगती थी। बाबा गुस्सैल स्वभाव के थे।'

नभाटा के इस संवाददाता की निम्न टिप्पणी का क्या अर्थ लगायेंगे पाठकगण !

'अयोध्या-फैजाबाद में ज्यादा संख्या उन लोगों की है जो अभी भी उन्हें सुभाष चन्द्र बोस मानने से इन्कार करते हैं।'

अर्थात कुछ संख्या (न सही ज्यादा) ऐसे लोगों की भी है जो उन्हें सुभाष चन्द्र बोस मान रहे हैं !

७ जनवरी ८५ को 'अपनी अंतिम छठी किस्त में नभाटा ने घोषणा की 'सुभाष नहीं, जासूस या आनन्दमार्गी थे बाबा।'

नभाटा ने लिखा—'गुमनामी बाबा के बारे में छानबीन करने के बाद इस बात की सम्भावना बलवती हुई है कि भगवन के नाम से विख्यात वह व्यक्ति कोई महत्वपूर्ण जासूस या फिर नेता सुभाष चन्द्र बोस का अन्ध समर्थक कोई आनंदमार्गी था।'

देखा पाठकों ने इतने बड़े अखबार के नगर संवाददाता ने किस दोराहे पर लाकर पटका है जनता को। अब बेचारी जनता पता लगाये कि वह बाबा जासूस था या नेताजी का अंधभक्त आनंदमार्गी।

वैसे यही संवाददाता अपनी तीसरी किस्त के पहले पैराग्राफ में लिख चुका था—'तथा कुछ स्थानीय पत्रकारों ने गुमनामी बाबा के बारे में आम जनता को और उलझाया है।'

और खुद इस संवाददाता ने ? खैर उस दिन की खबर आगे भी पढ़िये—

"बाबा स्वयं को सुभाष चन्द्र बोस साबित करना चाहते थे। इस बात की पुष्टि इससे होती है कि वह बराबर दूर दराज के अपने शिष्यों को पत्र लिख कर इस बात का पता लगाते थे कि यदि सुभाषचन्द्र बोस जनता के सामने चमत्कारिक रूप से पैदा हो जायें तो उनके साथ कैसा सलूक करेंगे। इसका भारतीय राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ेगा।......."

'अयोध्या-फैजाबाद के कई बुद्धिजीवियों का विचार है कि यदि बाबा वास्तव में सुभाष चन्द्र बोस थे तो इस प्रकार मुँह छिपाकर वे क्यों रहे थे ? इस संवाददाता से कई बुद्धिजीवियों ने रोषपूर्ण शब्दों में कहा कि लोग बाबा को सुभाषचन्द्र बोस बताकर सुभाष जैसे महान नाम को कलंकित कर रहे हैं।'

पाठकगण जरा यहाँ देखेंगे कि ये इतने गम्भीर रूप से प्रश्न पूछने वाले तथा रोष प्रकट करने वाले इन्हीं (इस संवाददाता के जेबी) बुद्धिजीवियों के बारे में संवाददाता क्या लिखता है—

'इस विषय पर बुद्धिजीवियों की बड़ी संख्या बाबा के सुभाष चन्द्र बोस होने की बात की खिल्ली उड़ाती है। लोग गोल चश्मा पहनने वाले अपने साथी का मजाक यह कहकर उड़ाते हैं कि मित्र कहीं तुम सुभाष चन्द्र बोस तो नहीं हो।' (६-१-८६)

बाबा के जासूस होने के बारे में नभाटा का जरा तर्क देखिये—

'गुमनामी बाबा के नाम से विख्यात व्यक्ति कोई महत्वपूर्ण जासूस था इस बात के पक्ष में यह बात कही जा सकती है कि प्रशासन इस मामले में जिस तरह मौन है उससे यह शंका पैदा होती है कि बाबा के बारे में उसे असली जानकारी थी।'

'बाबा के रूप में वह व्यक्ति एक दशक से ज्यादा समय तक अयोध्या-फैजाबाद में रहा, उसके बारे में तमाम चर्चायें होती रहीं। स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं ने भी मामले को कई बार लिखा। फिर भी प्रशासन ने यह जोखिम उठाने की कोशिश क्यों नहीं की। बाबा की असलियत क्या थी।'

'बाबा की मौत के बाद स्थानीय प्रशासन अंदर-अंदर बौखलाया। रातों

रात बाहर से सम्पर्क किया गया। यह भी इस बात को दर्शाता है कि वह व्यक्ति अवश्य ही प्रशासन की दृष्टि में महत्वपूर्ण था।'

'बाबा के बारे में जांच कराने के आदेश के बाद जांच रपट का क्या हुआ? वह अब तक आम जनता के सामने क्यों नहीं लाई गयी।'

'इस बीच अयोध्या फैजाबाद में आम चर्चा यह भी है कि असली बाबा कहीं फरार हो गये तथा उनकी जगह पर किसी दूसरे की हत्या कर दी गयी या दूसरी लाश लाकर उसको बाबा बताकर हड़बड़ी में फूंक दिया।'

खैर, अब उनके आनंदमार्गी होने का सारगर्भित तर्क पढ़िये—

'बाबा के आनन्दमार्गी होने के प्रयास में यहाँ एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है। फैजाबाद में आनंदमार्ग की एक शाखा १३ वर्ष से कार्यरत है। इन १३ वर्ष में इस शाखा पर कोई विशेष उत्सव नहीं मनाया गया। परन्तु गुमनामी बाबा की मृत्यु के बाद ११ से १३ अक्टूबर तक बड़े ही गुप-चुप ढंग से इस शाखा में बैठक की गयी। इसमें कलकत्ता से भी कई लोग आकर सम्मिलित हुए थे। अपुष्ट सूत्रों से (जरा ध्यान दीजिएगा 'अपुष्ट सूत्रों पर'—लेखक) खबर मिली है कि इस बैठक में मृतक बाबा के बारे में ही विचार विमर्श हुआ।'

और इसी आधार पर भारतवर्ष के सबसे बड़े समाचार पत्र उद्योग समूह के उ० प्र० की राजधानी लखनऊ से निकलने वाले प्रमुखतम हिन्दी दैनिक 'नवभारत टाइम्स' के नगर संवाददाता ने घोषणा कर दी कि वह आनंदमार्गी थे। धन्य है इस देश की ऐसी पत्रकारिता और धन्य हैं ऐसे पत्रकार बन्धु ??

—०—

MAN OF MYSTERY

लखनऊ से प्रकाशित 'नार्दन इण्डिया पत्रिका' के मुख्य समाचार सम्पादक श्री कौसर हुसेन ने मामले की गम्भीरता को समझते हुए अपने फैजाबाद के संवाददाता विश्वम्भर नाथ अरोड़ा को बुलाकर सारे तथ्यों को फिर सुना और मामले की गम्भीरता को समझते हुए पत्रिका के सम्पादक श्री एस० के० बोस तथा इलाहाबाद पत्रिका कम्पनी के सामान्य प्रबन्धक श्री तमाल घोष व पत्रिका ग्रुप के प्रधान सम्पादक श्रीयुत् तुषार कांति घोष से विचार-विमर्श किया। चूंकि उसी ग्रुप का हिन्दी अखबार 'अमृत प्रभात' इस मुद्दे पर नकारात्मक खबरें व सम्पादकीय छाप चुका था अतः इस खबर की वास्तविकता जानने के लिए पत्रिका ग्रुप के दिल्ली कार्यालय से अंतर्राष्ट्रीय स्तर का निर्मल निवेदन नामक एक युवा पत्रकार बुलाया गया।

श्री निर्मल निवेदन इसाई हैं तथा नागालैंड के रहने वाले हैं। लालडेंगा जैसे विवादास्पद लोगों व नागालैंड समस्या पर खोजपूर्ण पत्रकारिता करने वाले श्री निवेदन ने कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं। निर्मल निवेदन ने फैजाबाद, सीतापुर, बस्ती आदि स्थानों पर दसियों दिन रहकर एक विस्तृत रिपोर्ट दी, जिसे श्री कौसर हुसेन ने फैजाबाद स्वयं आकर पुष्टि करने के साथ-साथ 'मैन आफ मिस्ट्री' नामक कालम के अन्तर्गत १७ किस्तों में विस्तृत खबर छापते हुए अंत में २३ जनवरी (नेताजी का जन्म दिन) ८६ को 'The man was Netaji' (वह नेताजी ही थे) शीर्षक से घोषणा कर दी।

यह शृंखला लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर से प्रकाशित 'नार्दन इण्डिया पत्रिका' व 'अमृत प्रभात' दैनिकों के सभी संस्करणों में क्रमशः २० दिसम्बर ८५ से २३ जनवरी ८६ तक प्रथम पेज पर छपी।

'पत्रिका' अखबार २० दिसम्बर ८५ के अंक में सम्पादक ने 'The Intellectual Revel' शीर्षक से छपी खबर के साथ निम्न टिप्पणी भी लिखी—

This is in the series of our investigative reports about the nameless saint, Taklng into a account the

gravity of the subject and the political sensitivity involved, we have taken every care to record the results of our inquiries dispassionately and objectively, and will stand by our report before any forum or authority. We want our readers to judge it on merit and with an open mind.

—Editor

निर्मल निवेदन व विश्वम्भर नाथ अरोड़ा ने खबर इस तरह शुरू की—
The trail is cold. The leads are hots, hottest even in the history of post-independent India..............

इस खबर का हिन्दी संस्करण उसी 'अमृत प्रभात' में देखें—'वह कोई मामूली इन्सान नहीं, देश की एक महान हस्ती थी।.........दरअसल इस व्यक्ति में गहरी सूझबूझ और अद्‌भुत शक्ति थी और अदृश्य शक्तियों पर इसका अधिकार था।..........(२१ दिसम्बर ८५)।............ठीक ३५ साल पहले यह व्यक्ति नेपाल से भारत आया और रात में लखनऊ पहुँचा। इस समय बाबू सम्पूर्णानन्द उ० प्र० के मुख्यमन्त्री थे। कुछ साल आलमबाग क्षेत्र में शृंगारनगर में बिताये। छह महीने शहर के निकट खड़िया गाँव में गुजारे। ....और १९५६ की एक रात वह नीमसार (सीतापुर) चला गया और वहाँ छह वर्ष तक निवास किया। ....१९६२ में यह व्यक्ति अयोध्या गया, जहाँ शुरू के कुछ महीने दर्शन नगर गाँव की सुनसान इमारत 'शंकर निवास' में बिताये। ....फिर अयोध्या की लाल कोठी। फिर बस्ती के राजा की 'शरिस्ता कोठी' को चुना। बस्ती वह नौ साल रहे। (२१-१२-८५)

........बाबा के साथ जो महिला सहयोगी आयी थी, और फिर एकाएक लुप्त हो गई, वह और कोई नहीं लीलाराय थीं। लीलाराय जो नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिंद फौज के महिला दस्ते की संचालिका थीं। (२२-१२-८६)

२८ दिसम्बर ८५ को 'सरकार खुद राज छिपा रही थी' शीर्षक से अखबार लिखता—'वह था एक स्थानीय हिंदी साप्ताहिक स्वप्न रेखा का सम्पादक करन सिंह। उसने अपने अखबार के ३ जुलाई १९७७ के अन्त में पहले पन्ने पर बाबा के बारे में एक रिपोर्ट छापी जिसकी हेडिंग थी-'वह संत के रूप में

'कौन'। उस रिपोर्ट में बताया गया था कि सरदार गुरुबख्श सिंह के मकान में एक संत दो सालों से रह रहा है। बताया जाता है कि जिला प्रशासन और राज्य सरकार संत की सरपरस्ती कर रही है। वह संत किसी से मिलता नहीं।····
······कुछ लोग कहते है कि संत कोई इतना महान व्यक्ति है कि अगर वह सार्वजनिक तौर पर प्रकट हो गया तो राजनीति में भूचाल हो जायेगा।''

'सरदार ने बाबा के खिलाफ मकान से बेदखली का मुकदमा (नं० २/१९७७) दायर कर दिया। लेकिन मामला अदालत के बाहर ही आपसी बातचीत के जरिये निपटा लिया गया।·······सरदार ने कलेक्टर को एक दरख्वास्त दी जिसमें सरदार ने खुद ही लिखा था कि कुछ लोग कहते हैं कि बाबा कोई और नहीं सुभाषचन्द्र बोस हैं।··········'

'नीमसार के जिस शिवमन्दिर में बाबा रहते थे उसके एक महंत शिव नारायण शर्मा की पत्नी ने यह बताया कि एक बार माँ आनन्दमयी यहां आयी थीं' (१०-१-८६)

अब तक छपी किस्तों का विश्लेषण और समीक्षा करते हुए श्री एस० कौसर हुसेन साहब लिखते हैं········'गुमनामी बाबा के संत होने की बात किसी भी दृष्टिकोण से खरी नही उतरती। लेकिन अगर यह मान लिया जाय कि वह संत नहीं थे तो भी उनकी वास्तविकता से सम्बन्धित कई सवाल खड़े होते हैं।'

'अंत में हमें बाबा के व्यक्तित्व की छानबीन के लिये उन मूक प्रमाणों की पड़ताल करनी होगी जो वह अपने पीछे छोड़ गये हैं। ये प्रमाण है बाबा के कमरे से मिले सामान। ···················· इनके आधार पर बाबा के बारे में कोई नतीजा निकाला जा सकता है बशर्ते कि यह निष्कर्ष निकालने वाला व्यक्ति राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम तथा राजनीतिक और ऐतिहासिक संदर्भों की जानकारी रखता हो। खासतौर पर उस आदमी को द्वितीय विश्वयुद्ध के पहले तथा बाद के अन्तंसम्बन्धित घटनाक्रम की जानकारी होनी चाहिए। (१३-१-८६)।

'तथ्य कहते हैं जरूरी है जाँच' शीर्षक से कौसर साहब दूसरे दिन लिखते हैं कि–'केवल एक तथ्य लेकिन ऐसा तथ्य जो अपने आप में पूरे मामले को निर्णायक मोड़ देता है।'

'आजाद हिंद फौज की एक महत्वपूर्ण हस्ती डा० पवित्र मोहनराय का गुमनामी बाबा से घनिष्ठ सम्बन्ध था। ········बाबा जहाँ कहीं रहते थे, वहाँ २३ जनवरी को कुछ विशेष आयोजन किये जाते थे। यह एक अन्य तथ्य था जिसने इस मामले में दिशा संकेतक का काम किया।' (१७-१-८६)

'डा० पवित्र मोहन राय से जानकारी हासिल करने के लिये एक जांच अधिकारी को कलकत्ता भेजा गया।·······उस पूरी बातचीत के दौरान हमारे प्रतिष्ठान के एक अखबार 'जुगांतर' के एक सदस्य मिहिर गांगुली वहाँ मौजूद थे। ········इस बातचीत का टेप इस समय सरकार के कब्जे में है।' (१८-१-८६)

२० जनवरी ८६ को निर्मल निवेदन व विश्वम्भर अरोड़ा डा० आर० पी० मिश्रा से टेपबन्द इन्टरव्यू छापते हैं—'ज्योति चली गई, लेकिन याद बाकी है।············

सवाल—मेहरबानी करके मुझे कलकत्ता में उनके शिष्यों के नाम बतायें, हम उनसे मिलना चाहते हैं।

जवाब—डाक्टर पवित्र मोहनराय, दमदम पार्क कलकत्ता।

स०— क्या वह इस श्रृंखला की महत्वपूर्ण कड़ी थे ?

ज०— (शायद) जितना मैं जानता हूं वह भी जानते हैं और भी ज्यादा भी हो सकता है (मैं कह नहीं सकता)।

स०— क्या आप कभी डाक्टर पवित्र मोहन राय से मिले हैं ?

ज०—हाँ, बखूबी।

स०— कहाँ अयोध्या या फैजाबाद ?

ज०— (कुछ रुककर) फैजाबाद में।

स०— क्या यह सही है कि कुछ पुलिस अधिकारी और खुफिया विभाग के लोग उस व्यक्ति से संबंधित तथ्यों के बारे में जानकारी के लिए आप के पास आये थे ?

ज०—सिविल और पुलिस क्षेत्र के बहुत से लोग आये।

स०—उस व्यक्ति का नाम क्या था ? वह कहां पैदा हुआ ? और उसकी राष्ट्रीयता क्या थी ?

ज०—वह भारतीय थे और भगवान शिव के रूप थे ।

स०— ऐसा भी कहा जाता है कि आपने (बाबा की मृत्यु पर) एक वायरलेस संदेश भी भेजा था ।

ज०— हाँ, मैंने किसी से कहा था। ....किसी ने मुझसे कहा था कि वह वायरलेस से खबर करने की कोशिश करेंगे ।

स०— यह कौन व्यक्ति था ?

ज०— मुझे याद नहीं ।'

२१ जनवरी ८६ को श्रीमती सरस्वती शुक्ला का साक्षात्कार छापते हुए निर्मल निवेदन ने लिखा था कि—'दूसरी मुलाकात में अगली सुबह जगदम्बे माँ ने मुझसे यह रहस्योद्घाटन किया—'बाबा के निकटतम सहयोगियों का कहना था कि वे और कोई नहीं बल्कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस हैं ।'

एक बार फिर अयोध्या के पंडा श्री राम किशोर मिश्र का इण्टरव्यू छापते हुए अखबार लिखता है कि खुद के लिए बाबा 'यह शरीर' सम्बोधन का इस्तेमाल करते थे । 'क्या किसी विमान दुर्घटना का जिक्र भी उन्होंने किया था' का जवाब दिया पंडाजी ने—'उनका कहना कुछ इस तरह था कि दुर्घटनाग्रस्त विमान ने उड़ान भरी ही नहीं थी । इस सन्दर्भ में उन्होंने यह भी जोड़ा कि यदि लागबुक जाँची जाय तो तथ्य को प्रमाण सामने आ सकते हैं । जिस व्यक्ति के बारे में विवाद है, दरअसल वह दुर्घटना से पहले ही अपनी मंजिल तक पहुंच गया था ।' (२२-१-८६)

'हाँ, वह नेताजी थे'

और २३ जनवरी १९८६ के दिन 'The Man was Netaji' शीर्षक से पहली मुख्य खबर छापते हुए श्री कौसर हुसैन, निर्मल निवेदन व वी० एन० अरोरा 'नार्दन इण्डिया पत्रिका' में जो लिखते हैं 'अमृत प्रभात' में उसका अनुवाद यूं छपता है—

"फैजाबाद २२ जनवरी। आखिरकार सच पर छाया रहस्य का कुंहासा छटा। ....बाबा के बारे में बोलती हुई श्रीमती पुष्पा बनर्जी की आँखें उनके लिए श्रद्धा और सम्मान से छलछला आयीं ।

फैजाबाद के प्रतिष्ठित बनर्जी परिवार में लोग उन गिने-चुने लोगों में थे जिन्हें बाबा से मिलने की इजाजत थी ।

यह सही है कि डाक्टर बनर्जी की मृत्यु ६७ साल की आयु में १९८३ में ही हो गयी लेकिन उन्होंने इस दुनिया को छोड़ने से पहले बाबा की असलियत के बारे में अपनी पत्नी पुष्पा बनर्जी और पुत्र डा० पी० बनर्जी को बता दिया था ।

…………श्रीमती बनर्जी ने बेहिचक कहा कि 'बाबा ही सुभाषचन्द्र बोस थे और मेरे इस विश्वास के ठोस आधार है। ऐसे कारण हैं जो तर्क संगत हैं और एक दूसरे को पुष्ट करते हैं ।

श्रीमती पुष्पा बनर्जी ने बताया कि १९७५ की बात है । एक दिन दोपहर में सरस्वती देवी शुक्ल हमारे यहां आयीं। उसने हमारे पति से आग्रह किया कि वह एक बीमार सन्यासी को देखने के लिये चलें । उन्होंने इन्कार कर दिया। ………लेकिन जब सरस्वती ने काफी जोर दिया तो डाक्टर सन्यासी को देखने गये ।

डाक्टर ने जैसे ही सन्यासी को देखा वह हक्के-बक्के रह गये । ………वह बाबा को निहारते हुए अचम्भित से खड़े रहे। आँखो पर चश्मा चढ़ाये उस सन्यासी के शरीर पर हालांकि वक्त ने अपने निशान छोड़ दिये थे लेकिन फिर भी उनके व्यक्तित्व की विशेषतायें बरकरार थीं। उनकी आंखों की चमक, दमकता चेहरा और गूंजती हुई आवाज ज्यों की त्यों थी।………जब डा० बनर्जी लौट रहे थे तो बाबा ने उन्हें एक सलाह दी थी कि जो कुछ यहाँ देखा है उसे अपने तक ही रखो। अगर कहीं इसका इजहार किया तो हम दोनों को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है ।

………बाबा बवासीर से भी परेशान थे जो उन्हें घुड़सवारी के कारण हुई थी ।

एक दिन श्रीमती बनर्जी ने साहस करके बाबा से कहा कि उनके साथ यह भेदभाव क्यों बरता जाता है । कमरे में घुसने की इजाजत नहीं दी और बाबा ने उन्हें भी कमरे में आने की इजाजत दे दी ।

'देखा ! क्या देखा ?' बाबा ने श्रीमती बनर्जी से फौरन यह सवाल किया। श्रीमती बनर्जी अपने शुरूआती दिनों में जब लखनऊ के चारबाग इलाके में रहती थी तो उन्होंने कई बड़े नेताओं को देखा था। उन्होंने सीमांत गांधी, नेहरू, अब्दुल कलाम आजाद और खुद सुभाषचन्द्र बोस को अतुल्य प्रसाद सेन के घर देखा था।

बाबा के उस सवाल का जवाब देने के बजाय श्रीमती बनर्जी ने कहा—'हम देखा, जाँचेगे तो बतायेंगे।' वैसे श्रीमती बनर्जी बाबा की वास्तविकता के बारे में पूरी तरह आश्वस्त हो चुकी थीं।

श्रीमती बनर्जी ने इस बात की भी पुष्टि की कि बाबा से मिलने के लिये जो लोग कलकत्ता से २३ जनवरी या दुर्गापूजा के अवसर पर आया करते थे, वे उनके निकट सहयोगी और रिश्तेदार थे। वे लोग बाबा के लिये खजूर से बनी खीर लाया करते थे। श्रीमती बनर्जी को अच्छी तरह याद है कि बाबा ने उन्हें एक बार बताया था कि यह खीर कलकत्ता स्थित उनके परिवार की एक महिला तैयार किया करती है। अपने पति की मौत के बारे में श्रीमती बनर्जी ने बताया कि बाबा ने इस बारे में उन्हें डेढ़ साल पहले ही बता दिया था और डा० बनर्जी की मौत लगभग उसी ढंग से हुई थी।

ऐसा लगता है कि श्रीमती बनर्जी के पास इस तरह की यादों का खजाना है। ये सभी उन घटनाओं से सम्बन्धित हैं जो बाबा की पर मानवी शक्ति की ओर संकेत करती है।

श्रीमती बनर्जी ने एक और बात बतायी 'वह आ रहा है महाजीवन' नामक एक किताब है। प्रत्यक्षतः तो इस किताब के लेखक का नाम 'कालभैरव' है। लेकिन दरअसल यह किताब बाबा ने लिखी है। बाद में इस किताब की एक प्रति समरगुहा ने बाबा को भेजी थी। श्रीमती बनर्जी ने यह भी बताया कि सनातन धर्म अस्पताल के संस्थापक स्वामी संतानन्द गिरी लालकोठी में बाबा के निवास दौरान अक्सर उनसे मिलने के लिये आया करते थे। दरअसल श्री गिरी अपने छात्र जीवन में बाबा के साथ साल भर लंदन में रहे थे।

इस सवाल के जवाब में कि उन्हे १९७५ में यह विश्वास कैसे हो गया कि बाबा सुभाष चन्द्र बोस थे, श्रीमती बनर्जी ने जवाब दिया कि उन्होंने सबसे पहले नेताजी को १६३३ में लखनऊ में ए० पी० सेन के घर पर देखा था। उस

समय मेरी उम्र ११ साल की थी। वह अपने पिताजी के साथ श्री सेन के मकान से सटे हुये एक घर में फूल चुनने जाया करती थी। उनके पिताजी मेसोपोतामिआ से लौटे थे दरअसल उन्होंने फौज में फील्ड जाब के बदले एकाउंट सर्विस में तबादला करा लिया था। फिर १९३९ में मेरी नेताजी से मुलाकात हुई। उन दिनों मेरा पहला बच्चा होने वाला था। नेताजी रेलवे कर्मचारी संघ की एक सभा को सम्बोधित करने के लिये लखनऊ आये हुये थे। चारबाग इलाके में बंगाली होटल से सटे हुए एक मैदान में सभा हुई। अपनी यादों के खजाने में जमा एक-एक घटना का हवाला देते हुये श्रीमती बनर्जी ने बताया कि एक बार उन्होंने बातचीत के दौरान बाबा से कहा कि मैं नेताजी से अन्तिम बार १९३८ में मिली थी। उन्होंने जान—बूझकर गलत वर्ष का उल्लेख किया था। बाबा ने फौरन उनकी गल्ती दुरुस्त की और कहा कि यह घटना १९३८ की नहीं १९३९ की है।

श्रीमती बनर्जी ने बताया कि वह ठीक वैसे ही लगते थे जैसी फोटो २३ जनवरी १९७९ को 'जुगांतर' कलकत्ता.... .... में छपी थी। उन दिनों वह जुगांतर अखबार खरीदा करती थीं।.... .... यह सोचकर कि बाबा को अखबार सबसे पहले मैं ही दिखाऊंगी वह फौरन उस प्रति को लेकर उनके पास पहुची, उनके अचरज की उस समय सीमा न रही जब उन्होंने देखा कि वहां अखबार का वह अंक पहले से ही मौजूद है।

इस फोटोग्राफ को तत्कालीन संसद सदस्य समरगुहा ने २२ जनवरी १९७९ को प्रेस क्लब में आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन में जारी किया था। उन्होंने यह दावा किया था कि नेताजी सुभाष चन्द्रबोस जीवित हैं और वह फोटोग्राफ इसका प्रमाण है समरगुहा ने कहा था कि वह फोटो लगभग साल भर पहले भारत के एक प्राचीन मन्दिर में खींची गयी थी और वह उनकी फोटो है। उन्होंने कहा था कि नेताजी आज भी जिंदा हैं और योगाभ्यास और समाधि साधना कर रहे हैं। 'हो सकता है दूसरों के मन में कोई शंका हो, लेकिन मेरे मस्तिष्क में तो इस बात को लेकर संदेह की छाया भी नहीं है कि वह नेताजी नहीं थे। यह कहते हुये श्रीमती बनर्जी की आवाज भरभरा गयी और उनकी आंखों से आंसू छलक आये। उन्होंने वेदना मिश्रित आवाज में बताया कि बाबा ने एक बार उनसे कहा था कि मेरा नाम दुनिया के रजिस्टर से हटा दिया गया है।'

२२ जनवरी ८६ की पुलिस द्वारा तैयार सूची के सामानों को 'The Soundless Evidence घोषित करते हुए श्री कौसर हुसेन ने Northern India Patrika में लिखा था—

'The foot-steps have been traced, the landmarks loom large, the ring of mist has turned mellow and as if dicates of destiny are taking us to the destination where a hazy shadow between truth and suspicion will will be mingled with exact.'

अर्थात 'सत्य के पदचिन्ह ढूंढ़ निकाले गये हैं। रहस्य का कुहांसा छंट रहा है।' (अमृत प्रभात: २३ जनवरी ८६)

—o—

बौद्ध भिक्षु की तरह
नेताजी १९३५ में

सिनोर आरलैंडों मैजिट्टो के रूप में
नेताजी १९४३ में

कलकत्ते से काबुल तक 'मौलवी जियाउद्दीन' और काबुल से बर्लिन तक 'सिनोर आरलैंडो मैजिट्टो' तथा जापान तक की यात्रा में 'कमाण्डर मात्सूदा' आदि नाम व रूपों में रहने वाले इस महान विप्लवी ने बाद में भी न जाने कितनी जिन्दगी नामी व गुमनामी बिताई ?

शॉलिमारी आश्रम

स्वामी निर्वाणानन्द द्वारा लिखित पुस्तक Netaji At Nehru's Funeral में उपरोक्त फोटो के लिये लिखा है कि यह चित्र नेहरू जी की शव यात्रा के समय बनी न्यूजरील (Decumentary filmNo. 816 'B') से लिया गया है।

पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले के फलकता कस्बे के समीप एक ग्राम का नाम शॉलमारी है। नेपाल, सिक्किम, भूटान, बर्मा, चीन व पाकिस्तान की सीमाओं से लगा यह ग्राम भारत की एक सीमा पर स्थित है।

शॉलमारी आश्रम से जुड़ी अनेकों घटनाओं में सांसदों, पश्चिम बंगाल सरकार से लेकर भारत सरकार तक का जिक्र आता है। सारा घटनाक्रम एक सन्देह के घेरे में आज भी घिरा है।

कहा तो जाता है कि शॉलमारी में एक समय में तीन व्यक्ति 'स्वामी शारदानन्द' के नाम से रहा करते थे। जब नेता उर्फ शारदानन्द कहीं चले जाते थे तो दूसरा 'स्वामी शारदानन्द' बनकर पूरे आश्रम का संचालन किया करता था। इस आश्रम में फौज की तरह केवल स्वामी जी का ही शासन चलता था। स्वामी निर्वाणानन्द ने लिखा है कि १७ वर्ष की उम्र में सुभाष चन्द्र बोस जब हिमालय में साधना करने गये थे तो उस समय भी उन्होंने अपना नाम 'शारदानन्द' ही रखा था।

कहा जाता है कि 'संसार को अपनी दुर्घटना वाली मौत के रहस्य से उलझाकर नेताजी मन्चूरिया से रूस रवाना हो गये। उन्होंने एशिया के तमाम राष्ट्रों को मिलाकर एशिया लिबरेशन आर्मी बनाई। उसमें ५० लाख से भी अधिक सैनिक थे। जिसमें रूसी, चीनी, जापानी, बर्मी इण्डोचीनी, कोरियाई, फिलीपाइन्स, इण्डोनेशियन, श्यामीज, मलायन्स तथा हिन्दुस्तान के सैनिक थे। इस सेना के चीफ कमाण्डर थे मिस्टर ल्यू पो चिंग। कहा जाता है कि ये एक आंख पर पट्टी लगाये रहने वाला कमाण्डर और कोई नहीं बल्कि नेता जी ही थे। जिन्होंने चीन के फारमोसा में अमरीकन परस्त चांगकाई शेक की सेना को हराया था। एक आंख के काने ये उसी तरह बने जिस तरह काबुल में

कहा जाता है कि नेहरू जी के शव पर नेताजी ने माल्यार्पण किया था : डाकूमेन्ट्री फिल्म 816-B का वह दृश्य जिसे जिसे न्यूज रील में बहुतों ने देखा।

गूंगे और बहरे जियाउद्दीन नाम के पठान बने थे ।

और फिर १९४९ में कालीपोंग रास्ते के जरिये वे तिब्बत आये, जहाँ पर तिब्बत के लिये उन्होंने एकनाथ लामा, बन कर मोर्चा सम्भाला । वे १९५० से ५१ तक वहीं रहे । इसी बीच सन् १९४८ की ३१ जनवरी को राजघाट पर दो साधुओं के साथ साधू वेश में उन्होंने महात्मा गांधी के शव पर पुष्पांजलि अर्पित की ।

१९५२ में वे मक्का मदीना गये तथा सितम्बर १९५२ में मंगोलियन डेलीगेट बनकर पेंकिंग में आयोजित ट्रेड यूनियनों की एक कान्फ्रेंस में उन्होंने भाग भी लिया । इस विषय पर दिल्ली में १९५६ में मद्रास के एक विधायक श्री U. N. Thevar ने एक प्रेस व्यक्तव्य भी दिया था । तथा १९५५ में सांसद श्री एच.वी. कामथ तथा डा. गिरवानी हैदर ने पीकिंग कान्फ्रेंस की एक फोटो भी प्रस्तुत किया था ।

१९५३ में ही होली के आसपास नेताजी पैदल भारत भ्रमण करते हुये इटावा पहुंचे और वहां पर सती के मन्दिर में कुछ दिन रहे । वहां उन्होंने श्री बाँके बिहारी चतुर्वेदी से कहा कि मैं आगरे के एक ठाकुर परिवार का कर्नल जोगिन्दर सिंह हूँ । लेकिन मैंने अब अपना नाम शारदानन्द रख लिया है ।

श्री चतुर्वेदी के अनुसार वह चेन स्मोकर थे । दिन भर में दो तीन कार्टन कैप्सटन सिगरेट पी जाते थे । हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला व अन्य भारतीय भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषायें भी वे जानते थे ।

किसी जमाने में पं० मोतीलाल नेहरु के पी०ए० रह चुके श्री ज्योति शंकर दीक्षित ने बाबा से मिलने पर चतुर्वेदी जी से कहा था कि अब मुझे विश्वास हो गया है कि नेता जी की तथाकथित विमान दुर्घटना में मृत्यु नहीं हुई थी । उन्होंने कहा कि आप धन्य है जो बाबा के करीब आये हैं लेकिन उनसे कुछ पूछताछ मत करिएगा ।

कहा जाता है कि इटावा से चलकर वह व्यक्ति अल्मोड़ा के करीब हिमालय की पिन्डारी ग्लैशियर के समीप झुण्डी नामक गुफा में साधना करने के लिए स्वामी शारदानन्द के नाम से रहने लगा । ये समय था १९५३ से ५५ तक का । इसी बीच अल्मोड़ा के डिवीजन कमीशनर श्री रामरूप सिंह को विश्वास हो चला कि ये स्वामी शारदानन्द वास्तव में नेताजी हैं । उन्होंने तत्काल इसकी सूचना तत्कालीन राज्यपाल श्री के०एम० मुंशी जी को दी । राज्यपाल ने स्वामी से मिलना चाहा लेकिन मना करने पर जब राज्यपाल ने

जिद्द की तो वे ट्रक द्वारा रातोंरात बरेली के बिरया नामक स्थान पर चले गये।

वहाँ से वह दक्षिण भारत के अमरावती नगर पहुंचे और वहां श्री अनन्तलाल दमानी बैंकर के यहाँ रुके ' जहाँ उन्होने बताया कि वह M. Sc. है तथा उन्होने I.C.S. की परीक्षा उत्तीर्ण की हुई है।

१९५७ में फिर कहा जाता है कि मथुरा, आगरा होते हुए वे पुनः इटावा आये। वहाँ के एक एडवोकेट माधुरी मोहन मेहरोत्रा तथा उनके भाई डा० के० एम० मेहरोत्रा के पास उस साधू द्वारा लिखा हुआ जो पता है उसकी लिखावट बिल्कुल वैसी ही है जैसी २९ नवं० १९४४ को 'अर्जी हुकूमत आजाद हिंद' पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की है।

इससे पहले की 'स्वामी शारदानन्द' नाम से उन्होंने शॉलमारी में एक आश्रम की स्थापना की, पूरे देश का एक बार भ्रमण कर डाला तथा १९५९ के मध्य में कहा जाता है कि बरेली में हनुमान गिरी के नाम से भी रहे। अपने इस देशाटन में उन्होंने जिन व्यक्तियों से प्रताड़नायें सहीं उसमें फैजाबाद के तत्कालीन पुलिस कप्तान प्रमुख हैं। इस बीच रामलाल व सालिगराम प्रजापति नामक व्यक्ति भी उनके सम्पर्क में आये।

कहा जाता है कि शॉलमारी से असली शारदानंद उर्फ नेताजी १९६२-६३ तक ही रहे उसके बाद 'अन्य व्यक्ति' (Dammy) शारदानन्द बनकर रहता था।

१९६० के पहले उनके कानपुर व लखनऊ रहने के भी किस्से प्रचलित हैं।

अब इधर हम गुमनामी बाबा का अयोध्या से पहले बस्ती, और बस्ती से पहले नीमसार व लखनऊ व इटावा (श्री सुरेन्द्र सिंह चौधरी से सम्बन्ध) रहना पाते हैं! इस 'गुमनामी बाबा' की भी आदत में शुमार था कि वह गुस्सैल थे, चेन स्मोकर थे, हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी व विदेशी भाषाओं के ज्ञाता थे। इनकी भी लिखावट नेताजी की लिखावट से मेल खाती है और इनके भी इर्द-गिर्द 'नेताजी' होने का एक रहस्य लिपटा हुआ था और इनके बारे में भी कहा जाता है कि ये बरेली में हनुमानगिरी और शॉलमारी में स्वामी शारदानन्द के रूप में रहे हैं। तो क्या यह नहीं हो सकता कि ऊपर वर्णित व्यक्ति ही यहाँ आकर गुमनामी बाबा उर्फ भगवन जी के रूप रहा हो।

—०—

गुमनामी बाबा नेताजी ही थे

—ललिता बोस

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की भतीजी सुश्री ललिता बोस ने फैजाबाद आकर गुमनामी बाबा के सम्पर्क में रहे शिष्यों से मुलाकात करने, उनकी आदतों के बारे में जानने, उनकी लिखावट का मिलान करने के बाद मुझसे कहा कि उन्हें पूर्ण विश्वास हो चला है कि वे नेताजी ही थे ।

सुश्री ललिता बोस नेताजी के बड़े भाई (स्व०) सुरेश चंद्र बोस की पुत्री हैं तथा दिल्ली स्थित नेता जी रिसर्च सेंटर की सचिव हैं। सुश्री ललिता बोस ने कहा कि काफी साल पहले उनके पिता जी के पास बस्ती से एक दो लोग आते थे, जिससे हमारे पिता जी अकेले कमरे में बातचीत करते थे, और उनके जाने के बाद हमारे पिता जी हम लोगों से कहते थे कि देखा सुभाष ने राखी भेजी है। हम लोग उनकी उस बात का विश्वास नहीं करते थे। इससे ज्यादा उन्होने कहा कि गुमनामी बाबा के बारे में हम नहीं जानते थे।

वे डा० आर० पी मिश्रा से मिलने के बाद काफी उत्तेजित व उनपर नाराज लग रही थीं।

इससे एक दिन पूर्व लखनऊ में मुख्यमंत्री श्री वीरबहादुर से मिल कर आई थीं। मुख्यमंत्री से भेंट करके उनसे आग्रह किया कि गुमनामी बाबा का कमरा अब उनकी मौजूदगी में ही खोला जाय ताकि वे सत्यता परख सकें। साथ ही सभी सामान सुरक्षित रखकर किसी सक्षम एजेंसी से जांच कराई जाय। सुश्री ललिता बोस इस बात से आश्चर्य चकित थीं कि खोसला आयोग द्वारा उनके पिताजी को भेजे गये सम्मन की मूलप्रति तथा दुर्लभ पारिवारिक चित्र 'रामभवन' में कैसे मौजूद है। उनके अनुसार मुख्यमंत्री ने इस रहस्य की गुत्थी सुलझाने में सहयोग का आश्वासन दिया। (अमृत प्रभात: ५ फर० ८६)

ऐसा ही एक पत्र सुश्री ललिता बोस ने ५ फरवरी को जिलाधिकारी फैजाबाद को भी दिया। उन्होंने अमृत प्रभात (६ फर० ८६) को बताया कि श्रीमती पुष्पा बनर्जी ने गुमनामी बाबा का जो डील-डौल, स्वभाव और लिखने पढ़ने की आदतें बताई है वह उनके चाचा से मिलती है।

नेताजी ही के एक भतीजे श्री शिशिर बोस द्वारा इन्कार किये जाने की बात पर सुश्री ललिता बोस ने कहा कि वह सरकार का गुलाम है और सरकार से पैसा पाता है ।

तभी ललिता बोस जी द्वारा लखनऊ उच्च न्यायालय में दायर एक रिट में न्यायमूर्ति सं० सगीर अहमद एवं न्यायमूर्ति गंगा बक्श सिंह ने जिलाधिकारी फैजाबाद को निर्देश दिया कि 'रामभवन' में रखी गुमनामी बाबा की समस्त सम्पत्ति की सूची कमीशन द्वारा तैयार करायें । सूची बनाने के बाद राम-भवन से सामान को हटाकर कोषागार फैजाबाद में रखवाने की व्यवस्था करें।

सुश्री बोस सहित डा० एम०ए० हलीम व श्री विश्व बान्धव तिवारी आवेदकों का कथन था कि समस्त सम्पत्ति राष्ट्रीय महत्व की है, यदि उनकी सूची न बनाये जाने पर नेताजी की गुत्थी सुलझाने में अवरोध उत्पन्न होगा तथा राष्ट्रीय सम्पत्ति नष्ट हो जाएगी । (नभाटा: ११-२-८६)

●

इस सबके बावजूद सरकार ने इस मामले पर इतनी चुप्पी साध रखी है जैसे मानों किसी ने उससे कुछ कहा ही नहीं जबकि फैजाबाद मण्डल के पुलिस उप महानिरीक्षक श्री अजयराज शर्मा ने 'नये लोग' द्वारा पूछने पर कहा था कि गुमनामी बाबा के कमरे के सामनों को सूचीबद्ध करने से मिलने वाले सामानों सहित अन्य सूचनायें निश्चित ही शक पैदा करती हैं, इसलिए मामला काफी गम्भीर है और इसकी गहराईयों में जाना बहुत ही जरूरी है।

श्री शर्मा ने यह स्वीकार किया कि बरामद होने वाले अभिलेखों से स्पष्ट होता है कि 'राम भवन' में रहने वाला व्यक्ति राष्ट्र के प्रति काफी सम्मान रखता था और राजनीतिक दृष्टि से काफी जागरूक भी था ! उन्होंने बताया कि सामानों में मिले नेताजी से सम्बन्धित फोटो एलबम एवं नेताजी से सम्बन्धित साहित्य एवं अन्य सामग्रियां काफी हद तक शंका में डालने वाली है कि 'राम भवन' के भगवन जी कौन थे।

पुलिस उप महानिरीक्षक ने इस बात को जरूरी बताया कि गुमनामी

बाबा की शिनाख्त होनी चाहिये। इसके लिये मिली उनकी हस्तलिपि का नेताजी की हस्तलिपि से मिलान किये जाने के साथ ही नजदीक एवं दूरदराज स्थित हर उस सूत्र से सम्पर्क किया जाना भीजरूरी है जिसका जरा-सा भी सम्बन्ध गुमनामी बाबा से होने का संकेत मिला है।

उन्होंने आश्वस्त किया कि समूचे मामले की व्यापक जाँच होगी। वैसे भी अब तक की जाँच रिपोर्ट कुछ एजेंसी वाले ले चुके हैं फिर भी मामला गंभीर एवं रहस्यपूर्ण होने के नाते जाँच कार्य लम्बा खिंच सकता है किंतु ऐसा प्रयास किया जा रहा है कि ज्यादा से ज्यादा डेढ़ माह के भीतर ही जांचकर्ता किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँच सकें। अंत में उन्होंने कहा कि मामले के जांचोपरांत ही किसी प्रकार का निश्चय किया जा सकता है कि गुमनामी बाबा नेताजी थे अथवा नहीं। (२५ नवम्बर ८५)

ठीक इसी तरह का बयान उप महानिरीक्षक महोदय ने दो चार दिन पूर्व अपनी सुल्तानपुर की प्रेस कांफ्रेंस में भी दिया था तथा एस० एस० पी० श्री कर्मवीर सिंह भी स्थानीय नेताओं व पत्रकारों से कह रहे थे कि मामला सी० आई० डी० को भेजा जा रहा है।

लेकिन—न तो आज तक मामला सी० आई० डी० को भेजा गया और न ही पुलिस ने हस्तलिपि का मिलान कराया। प्रश्न उठता है आखिर क्यों?

●

वैसे जहाँ 'राम भवन' पर एक सब इंस्पेक्टर के नेतृत्व में पुलिस दल दिन रात चौकीदारी कर रहा है, वहीं पर 'राम भवन' के बाहर एक पण्डाल में ३० अक्तूबर से चल रहे धरने पर एक १८ वर्षीय साहसी युवक उदयभान सिंह आज तक लगातार बैठा हुआ है कि न्यायिक जांच हो। कि तभी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री नंदलाल शर्मा की रिट पिटीशन को स्वीकार करते हुए राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश माननीय एस० एन० भार्गव ने केंद्र सरकार को निर्देशित किया है कि 'To examine a fress with open mind' 'the disappereance of Netaji Subhash Chandra Bose.'

(24 जन० 86 N. I. P. Alla.)

●

और उस दिन नेता राजनारायण जी लगातार दो घण्टे तक मुझसे सारी बातें सुनते रहे फिर बोले-एक बार, काशी में गोमती (जहाँ गोमती जाकर गंगा में मिलती है) के किनारे एक बहुत बड़ा गाँव है, वहाँ पर एक साधू आकर एक पुराने शिव मंदिर में रहने लगा था और उससे प्रभावित होकर उस गाँव के दो नवयुवक उसकी सेवा करने लगे फिर बाद में उसी के साथ चले गये।

बाद में काफी दिनों बाद वही दोनों युवक मेरे पास आये और बोले कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आपसे मिलना चाहते हैं आपको बुलाया है। राजनारायण जी ने कहा कि मुझे उन लोगों की बात पर विश्वास ही नहीं हो रहा था—मैंने कहा कि उनसे लिखाकर लाओ। युवकों ने कहा कि वे लिखकर नहीं देते हैं। इस पर मैंने कहा कि मैं उन्हें टेलीग्राम करे देता हूँ अगर उत्तर आया तो चलूंगा। लेकिन उसका कोई जवाब नहीं आया।

राजनारायण जी ने मुझसे कहा कि मैं दिल्ली से केवल यही जानकारी लेने सीधे आ रहा हूं। जिलाधिकारी से मिलने के बाद वे अचानक रात में कार द्वारा मेरे यहाँ पहुंचे थे। वैसे वह इस बात को ज्यादा जानने के उत्सुक थे कि वहाँ पर मिले पत्रों आदि में उनके तथा बी० आर० मोहन के बारे में क्या लिखा है। मेरी छप रही किताब के बिना बाइण्ड पन्नों को ले जाने के लिये उन्होंने तुरंत अपनी कार प्रेस तक भेजा। राजनारायण जी दो घण्टे तक पूरी गम्भीरता से इसे सुनते रहे और जाते हुए उन्होंने कहा कि मैं इस मामले को देश भर में उठाऊंगा क्योंकि उनका कहना था कि जब तक सरकार यह नहीं सिद्ध करती कि वह 'अन्य' कोई था तब तक सारी सम्भावनायें 'नेताजी' की ओर ही जाती हैं।

●

कहीं 'गुमनामी बाबा ही नेताजी तो नहीं थे ?' इस प्रश्न ने जहाँ हमारे आपके मन को उद्वेलित कर रखा है — वहीं पर भारत की एक बड़ी राजनैतिक 'जनता पार्टी' के अध्यक्ष चंद्रशेखर ने फैजाबाद तक की पदयात्रा की समाप्ति पर एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि 'गुमनामी बाबा के सम्बंध में अभी उन्हें कोई जानकारी नहीं है।' (नये लोग: १२-२-८६) जबकि

११ फरवरी की उन्हीं की एक जनसभा में स्थानीय युवा नेता रामप्रकाश सिंह ने अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष से मांग की थी कि वे यहाँ के गुमनामी बाबा उर्फ नेताजी की प्रकरण की न्यायिक जांच करवायें। और तो और उन्हीं की पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अनंतराम जायसवाल ने पिछले दो माह से इस मामले को प्रत्येक जिलों व प्रेस कांफ्रेंसों में उठाते हुये कहा था कि अगर सरकार जल्दी ही इस विषय पर जांच नहीं बैठाती है तो जनता पार्टी इस मामले को न केवल विधान सभा व लोकसभा में उठवायेगी बल्कि 'जनता की अदालत' में भी ले जायेगी।

आश्चर्य है कि देश के विभिन्न समाचारपत्रों- पत्रिकाओं में इतने प्रकाशन, उच्च न्यायालयों में दायर मुकदमों, तथा स्वय पार्टी द्वारा प्रदेश स्तर पर उठाए गए मामले को एक राजनैतिक पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष कह रहा है कि मुझे कोई जानकारी नहीं है। जबकि उसी दिन पदयात्रा के अंतिम पड़ाव मया बाजार में श्री विश्वनाथ सिंह ने अपनी पत्रिका 'हम किधर' का नेताजी विशेषांक देते हुए इस प्रकरण पर जाँच करवाने के लिये कहा था।

और तो और चन्द्रशेखर जी की पद यात्राओं में साथ रहने वाले (भाँट) कवि अवध बिहारी ने उन्हें 'राम, कृष्ण, ईसा, लेनिन ·········· आदि कहते हुए 'लौटा हुआ सुभाष' भी कहा था ।

काश ! चन्द्रशेखर जी यही बताते कि यह 'लौटा हुआ सुभाष' का क्या अर्थ होता है ?

●

रहस्य की पर्तें और अधिक गहराती चली न जाँय कि कुछ लोगों की इस अवधारणा के साथ पुलिस भी यह जानना चाह रही है कि इस बार भी नेताजी उर्फ गुमनामी बाबा कहीं चकमा देकर गायब तो नहीं हो गये और उनके स्थान पर किसी अन्य लाश को फूंका गया या फिर उनकी मौत अचानक (?) कैसे हो गई ? लाश का रंग नीला क्यों पड़ गया था ? इसलिए हम इस पुस्तक के 'प्रथम खण्ड' को यहीं समाप्त करते हैं। और अब आगे 'राम भवन' से या गुमनामी बाबा द्वारा पीछे छोड़े स्थानों से जो इतिहास से मेल खाते सबूत हमारे हाथ लगेंगे—उसे आप 'गुमनामी सुभाष' के द्वितीय खण्ड में अवश्य पढ़ सकें। इसी कामना के साथ—

इंतजार कीजिए ! रहस्य का द्वार खोलेंगे स्वयं महाकाल !

●

अशोक टण्डन

'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' कहने वाले के लिए आज जब इतिहास ने स्याही की चन्द बूँदे ही माँगी हों तो कतराना कैसा........

और जोखिमों का अन्देशा किये बगैर इतनी बड़ी घटना को दुनिया के सामने लाने की पहल कर डाली इस युवा पत्रकार ने.

१९५१ में उ० प्र० फैजाबाद जिले की अकबरपुर तहसील के एक जमींदार परिवार में जन्मे— अशोक टण्डन ने पैतृक विरासत में मुकदमों के साथ-साथ कलम की सिपाहियत भी पाई है.

मुकद्दर ने तो वकील बनाया था. पर आठ वर्ष की उम्र में छपी एक कविता ने कवि लेखक से पत्रकार बना डाला. कैनवास पर उभरते रंगों के बीच गुजरती रचनाधर्मिता ने फिल्मों के सह-निर्देशन तक घसीटा है.

'गुमनामी सुभाष' महज एक किताब ही नहीं—
इतिहास पर दस्तक देने की कोशिश है उनकी.